

सत्याचार्य के लिए कुछ सूचनाएँ

1. वी. के. पी.. सेशन के लिए सूचनाएँ -

1. पहले ही हॉल के हिसाब से सेवाएँ प्लन कर लें। जैसे झाड़ू लगना - पैसेज में और बाहर के एरीया में, किचन सेवा (सब्जी काटना, बर्तन साफ करना, ग्रीसरी साफ करना)

2. आते साथ खोजियों को चाय ना दें।

3. वी. के. पी. देते वक्त यह खयाल रखें कि ज्यादा स्ट्राँग वी. के. पी. भी नहीं देना है।

4. अटेंडन्स काउंटर पर से ही कुछ खोजियों को सेवा के लिए भेजे और कुछ खोजियों को हॉल में भेजे।

2. हर प्रवचन में खोजियों को शुरू में खड़े होने के लिए न कहते हुए दिन के शुरुआत में एक ही बार खड़े होकर अभिवादन करने के लिए कहें।

3. संपर्क स्थान और डॉक्टर के काउंटर की व्यवस्था करें।

4. प्रिंटींग मटेरियल चेक करके लें - धनसेवा फॉर्म, सेवा फॉर्म, बी. एफ. टी. बुकलेट, व्यसन समर्पण फॉर्म।

(बी. एफ. टी. बुकलेट जिन खोजियों को बताया जाएगा उन्हें ही देना है। तेजस्थान पर सँभलकर रखने हैं।)

5. धन्यवाद के सेशन में डायजेशन सेशन के खोजी को स्वयं का सामना यही बुक गिफ्ट देना है।

6. समय संपन्न के लिए बेल रखें और हर घंटे बेल बजाएँ।

7. फनी ड्रेस के एक्सरसाइज के लिए आइना रखें।

महाआसमानी शिविर पहला दिन

व्ही.के.पी. सेशन

व्ही.के.पी.सेशन के पहले-

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स । यहाँ पर सभी जो खोजी है, उन्हें एक खास, स्पेशल प्रवचन सुनने का मौका है । उसके उपरांत हम शेअरिंग करेंगे । (सत्याचार्य हॉल में बैठे खोजियों को तारीफ का वी.के.पी.दे ।) (पहले चलाया हुआ कोई भी 40 मि. का प्रवचन अंदर हॉल में चलाए ।)

अंदाजन 15 मिनट के बाद चाय की झुठी अनाउंसमेंट (फॉल्स अनाउंसमेंट) करें । जिसमें बताए कि बाहर जो खोजी सेवा दे रहे हैं, सिर्फ उनके लिए यह चाय है । (ताकि सेवा देनेवाले खोजी और हॉल में बैठे हुए खोजी, दोनों को वी.के.पी. आए ।)

फिर अंदाजन 10 मिनट के बाद बाहर के सभी सेवा देनेवाले खोजियों को अंदर बुलाए ।

व्ही.के.पी.सेशन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स । अभी हम यहाँपर एक प्रवचन सुनेंगे । आयिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रवचन हम सुनते हैं, तब तक के लिए धन्यवाद, हॅपी थॉट्स ।

प्रवचन (सरश्री की लीला और व्ही. के. पी)

प्रवचन का समय- 30 मि. 57 से.

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

1. कॉन्ट्रास्ट माईंड का विस्तारित रूप याने व्यक्ती का पागलपन, व्ही.के.पी. ।
2. यहा आनेसे लेकर अब तक कई सारे व्ही. के. पीज आए रहेंगे । कुछ सूक्ष्म आए रहेंगे, कुछ बड़े आए रहेंगे, कुछ ज्यादा ही बड़े आए रहेंगे जो अभी तक चलते रहेंगे । तो अभी जब ब्रेक होगा तो हमें मनन करना है की कौनसे कौनसे व्ही. के. पीज आए थे ।
3. कुछ कॉमन व्ही. के. पीज सरश्री के प्रवचन में आए थे उसे हम एक प्रेझेंटेशन व्दारा समझने जा रहें है ।
4. लेटेस्ट याने अभी अभी के पांच मेजर व्ही. के. पीज पकडने है ।

आप सभीको शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । अभी जो प्रवचन हमने सुना उस पर तेजमनन करेंगे । तेजमनन । सभी धीरे धीरे अपनी आखें खोलेंगे । पहले प्रवचन में हमने जो मुख्य बात समझी व्यक्ती का पागलपन याने क्या, व्ही. के. पी याने क्या । यहा स्क्रीन पर हम देखेंगे सरश्री ने व्ही.के.पी याने क्या बताया है ? व्यक्ती का पागलपन याने क्या है ? व्यक्ती का पागलपन याने जो मन की टांगे जो हमने अब तक समझी है जिसमें मन उलझता है । कॉन्ट्रास्ट माईंड का विस्तारित रूप याने व्यक्ती का पागलपन,

वही.के.पी. । जहा बहुत सारी कलाबाजीयां चलती है जहा हम क्रेडिट लेते है, लेबल्स लगाते है । ऐसा जब भी हो रहा है उसका अर्थ, ये वही. के. पी है । आज हमें एक अलग वे से सरश्री ने वही. के. पी का दर्शन करवाया है । यहा आनेसे लेकर अब तक कई सारे वही. के. पीज आए रहेंगे । कुछ सूक्ष्म आए रहेंगे, कुछ बड़े आए रहेंगे, कुछ ज्यादा ही बड़े आए रहेंगे जो अभी तक चलते रहेंगे । तो अभी जब ब्रेक होगा तो हमें मनन करना है की कौनसे कौनसे वही. के. पीज आए थे । जैसे कुछ कॉमन वही. के. पीज सरश्री के प्रवचन में आए थे उसे हम एक प्रेझेंटेशन व्दारा समझने जा रहें है । जैसे के प्रवचन में आया व्यक्ती का पागलपन याने कोई मुझसे प्रेम नहीं करता । वैसे कितने खोजियोंके साथ ऐसा होता है वो हाथ उपर करें । धन्यवाद । आगे लोग बुरे है, मुझसे जलते है, मुझपर विश्वास नहीं करते ऐसा कितने खोजियोंको लगता है वो हाथ उपर करें । धन्यवाद । ये सब व्यक्ती का पागलपन है । इसके आगे जैसे हम देखेंगे पूरी दुनिया मेरे विरुद्ध है । जभी कोई दो लोग आपके सामने धीरे बात कर रहें है तो ये मेरे बारे में ही बात कर रहें है । और पक्का हो जाता है ये मेरे ही बारे में है ये व्यक्ती का पागलपन है । जैसे के क्रेडिट लेता है ये उसने किया जानबूझकर किया लेबल लगाना वो बुरा है वो अच्छा है । मेरे लिए सारा षडयंत्र रचा गया है । याने खुदको डुअर मानना सामने वाले को डुअर मानना । कलाबाजी चलते रहना । मैं खून के घुँट पीता हूँ खून के आँसू रोता हूँ । गुस्सा आता है बच्चोंको क्यों पाला इससे अच्छा तो कुत्ते को पाला होता । इस तरहके वही. के. पी जो बहुत बड़े वही. के. पी है । आगे जिनसे हमने प्यार किया उन्होने धोका दिया । आगे अहंकार के वही. के. पीज अपून तो ऐसाइच । नफरत, घृणा, डर । आगे बड़े वही. के. पीज के साथ साथ जो वही. के. पीज आते है । घंटी बज रही है और कोई दरवाजा नहीं खोल रहा क्या क्या विचार आ रहें है, क्या कर रहें है सोए है क्या ये सब वही. के. पी है । तारीफ का वही. के. पी सब आपके वजहसे हुआ वरना तो पॉसिबल ही नहीं था, या आप तो बहुत सेवा करते हो तो आप अंदर बैठ सकते है । आज भी कई सारे तारीफ के वही. के. पी खोजियोंको आए रहेंगे । बोर हो रहा है । इसने ऐसा किया हमने नहीं किया । मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है । बाकी लोगोंको देखो कैसे अंदर बिठाया । आगे सूक्ष्म वही. के. पी टिफीन खोला तो कुछ और ही दिखाई देता है । मनमुताबिक बात नहीं हुई यही चेअर चाहिए थी । ऐसे कई सारे वही. के. पीज जिसे व्यक्ती का पागलपन कहा गया है । याने जो भी मन की टांगे हमने सरश्री से समझी है, क्रेडिट लेना, कलाबाजीयां चलना, कपट करना, लेबल लगाना इन सभी टांगोमें जब भी हम जाते है वो सब व्यक्ती का पागलपन हुआ । फिर वो सूक्ष्म वही. के. पीज है जहा तारीफ हुई थी या बड़े वही. के. पीज याने घृणा है, नफरत है, गुस्सा है ऐसे सभी वही. के. पीज । तो अभी एक्सअरसाइज के लिए हमें बाहर जाना है बाहर जाके घूमना है और लेटेस्ट याने अभी अभी के पांच मेजर वही. के. पीज पकडने है । सूक्ष्म भी हो या बड़े भी हो ऐसे सभी वही. के. पीज जहा व्यक्ती का पागलपन हो रहा था । और फिर जैसे ही यहा भजन शुरू होगा हम सभी को यहा आना है । ऐसा होगा की बहुत सारे खोजी हॉल में है तो आपको जल्दी जाने को मौका ही नहीं मिलेगा । तो जो भी होगा तो उसमें वही. के. पी क्या है वो पकडना ।(सत्याचार्य बाहरकी सभी व्यवस्था बताएं) । संपूर्ण मौन का पालन करें । तो लेटेस्ट पांच मेजर वही. के. पीज पकडने है और जैसेही भजन लगता है अंदर हॉल में आएँगे । जब भी हम अंदर आएँगे तब उसी जगह बैठेंगे जहा अभी हम बैठे है । धन्यवाद हॅपी थॉटस् । बैठे है । धन्यवाद हॅपी थॉटस् ।

(सत्याचार्य अर्जेन्डा के अनुसार चाय की अनाउन्समेंट करे ।)

व्ही. के. पी. मनन ब्रेक के बाद-

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

1. अभी जो मनन करके हम यहा पर आये उसपर कुछ खोजी विचारसेवा करें की क्या मेजर पाचं व्ही.के.पीज पकड में आये ।
2. ये तेजसेवक ऐसा क्यों कर रहे हैं है, तो मैं आपको बताऊं तेजसेवकोने आपके साथ जो कुछ भी किया वो इसलिये क्यों के सरश्री चाहते थे की आपको व्ही. के. पी का दर्शन हो ।
3. ये समझना भी बहुत महत्वपूर्ण है की इस मनन आश्रम में हम इतनी भक्तीसे आए है, भाव से आए है । यहा अगर छोटी छोटी घटनाएं इतना व्ही. के. पी दे सकती है, हमें इतना व्ही. के. पी आ सकता है । व्यक्ती का इतना पागलपन हो सकता है तो जब हम बाहर जाते रहेंगे तो क्या होता रहेगा ।
4. प्रवेश संबंधित जानकारी तेज विदया मंडमसे बात करकर बताए ।

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । अभी जो मनन करके हम यहा पर आये उसपर कुछ खोजी विचारसेवा करें की क्या मेजर पाचं व्ही.के.पीज पकड में आये । कई खोजियोंको अंदर ये भी व्ही. के. पी आता है की मैं कैसे विचारसेवा दूँ । कैसे हाथ उपर करूँ । जहा भी माईक है विचारसेवा देंगे । शुरूआत जरूर हॅपी थॉटस् से करें और खर्डें होकर विचारसेवा दें । विचारसेवा । तो ये व्ही. के. पी था । धन्यवाद । कितने खोजियोंको लगा की बाहर श्रमसेवा के लिए भेजा तो बहुत बडा व्ही. के. पी था हाथ उपर करें धन्यवाद । कोई सूक्ष्म व्ही. के. पी बताएं, बडे व्ही. के. पी बताएं । विचारसेवा । धन्यवाद जरूर पूर्ण करें । विचारसेवा । कितने खोजियोंको सरश्री को स्क्रीन पर देखके सरश्री स्वयं क्यों नहीं ये व्ही. के. पी आया धन्यवाद । विचारसेवा । आगे जो शेअर करेंगे वो सबसे बडा एक ही व्ही. के. पी शेअर करेंगे । अपना एक ही व्ही. के. पी शेअर करेंगे । विचारसेवा । कितने खोजियोंको शुरूआत की सिस्टिम देखकर व्ही. के. पी आया । ये ऐसा कैसे ये तेजसेवक ऐसा क्यों कर रहे हैं है, तो मैं आपको बताऊं तेजसेवकोने आपके साथ जो कुछ भी किया वो इसलिये क्यों के सरश्री चाहते थे की आपको व्ही. के. पी का दर्शन हो । व्यक्ती का पागलपन क्या है वह समझ में आ जाए इसलिये हमारे साथ ऐसा हुआ । और कुछ खोजी ऐसे भी रहेंगे जिनकी बहुत ज्यादा तारीफ भी हुई रहेगी । वो भी कोई विचारसेवा दें । विचारसेवा । सूक्ष्म व्ही. के. पीज भी जरूर शेअर करें । विचारसेवा । धन्यवाद । यही पर हम विचारसेवा रोकते है । ऐसे कई खोजी रहेंगे जिनको विचारसेवा देने को मौका नहीं मिला रहेगा तो व्ही. के. पी देखनेका और एक मौका है । और ये समझना भी बहुत महत्वपूर्ण है की इस मनन आश्रम में हम इतनी भक्तीसे आए है, भाव से आए है । यहा अगर छोटी छोटी घटनाएं इतना व्ही. के. पी दे सकती है, हमें इतना व्ही. के. पी आ सकता है । व्यक्ती का इतना पागलपन हो सकता है तो जब हम बाहर जाते रहेंगे तो क्या होता रहेगा । यहा मनन आश्रम है, उस तरह का वातावरण है, आज महाआसमानी शिविर के लिए हमें यहा बुलाया है फिर भी अगर व्ही. के. पी आ रहा है तो बाहर कैसे होगा । तो अपने आपको जरूर रिमांडर देना अगर यहा ऐसा होगा तो बाहर कैसे

आएगा। तो पहले पार्ट में हमने सरश्री से क्या समझा की समस्या है व्यक्ती का पागलपन, व्ही. के. पी ये समस्या है। शिविर की आगे जब शुरूआत होगी तो इस समस्या के साथ क्या हो उसका इलाज क्या ये भी हमें सरश्री बताएंगे। उसके पहले समझे कि समस्या है व्यक्ती का पागलपन, व्ही. के. पी जहां अपने आपको उच्च, श्रेष्ठ, वरिष्ठ मानना या न्युन, नीचा, कनिष्ठ मानना, क्रेडिट लेना, कलाबाजीयां चलाना, कपट करना, लेबल लगाना, या अनुमान लगाना या ये ऐसा ही रहेगा जो भी हमारे अंदर विचार चलते हैं जिससे कलाबाजी होती है, वो सब व्यक्ती का पागलपन है, वी. के. पी. है कुछ महत्वकांक्षाएं हमारे अंदर हैं, डर है ये सब व्यक्ती का पागलपन है, व्ही. के. पी है। तो व्ही. के. पी क्या है हर एक ने यहाँ पर समझा है।

(यहाँ पर हाथ ऊपर करवाके पूछ सकते हैं कि 'सबको वी. के. पी. क्या है, किसे कहाँ है? यहाँ समझा है।')

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंटस-

१. महाआसमानी शिविर में आपको प्रवेश मिलेगा पर उसके पहले आपको छः साल सेवा देनी पड़ेगी। कितने खोजीयोंको लगता है छः साल सेवा दें कर वो यहाँ पहुँचते थे वह हाथ उपर करें।
२. सरश्री हमें इतने संभालते संभालते यहाँ लेकर आए शाप तो बहुत दूर की बात।
३. साधरण कोई संगीत सीखने के लिए उनके जो संगीत टीचर हैं उनके घर पर जाकर रहेते हैं उन्हें वहाँ रहना पड़ता है, उनके काम करने पड़ते हैं।
४. तो कितना समर्पण होगा, कितनी भक्ति जगेगी, कितनी प्यास बढ़ेगी और प्यास भी सरश्री ने कितने सुंदरतासे गाईड करते करते बढ़ाई है।
५. एक सवाल अगर हमें पूछा जाए की जो सत्य जो तेजज्ञान हम लेने जा रहे हैं वो लेने के लिए हमारे अंदर प्यास है की प्रेम है। एक कहानी - एक छोटी लड़की की कहानी।
६. महाआसमानी ज्ञान के प्रति अगर प्यास के साथ साथ प्रेम है तेजप्रेम है तो यहाँ जिस भी तरहसे हमें महाआसमानी ज्ञान दिया जाएगा तो उसमें आनंद आएगा।
७. सरश्री अलग अलग रूपसे शिविर लेने जा रहे हैं कभी एल् सी. डी. द्वारा, कभी तेजसेवकोंके द्वारा, कभी सत्यआचार्य या कभी स्वयं आकर।
८. नियम है और जो वचन, प्रवचन के कुछ नियम, प्रार्थना।

आगे महाआसमानी शिविर की तरफ हम जाँ उसको पहले कुछ क्षण यह भी सोचें कि पहले दिन आप यहाँ पर आए थे, जब भी आपने तेजज्ञान फाउण्डेशन का बोर्ड देखा या आप किसी सेशन में आए तो उस दिन अगर हम सबको यह बताया जाता कि आपको शिविर में प्रवेश तो मिलेगा मगर कब? आपको उसके लिए क्या करना पड़ेगा तो आपको 6 साल सेवा करनी पड़ेगी। 6 साल सेवा करनी है, जैसे बताया जायेगा वह सब कार्य करना है, फिर तय होगा कि आपको शिविर में प्रवेश मिलेगा या नहीं मिलेगा। तो अगर ऐसा कहा होता तो आप में से कितने खोजी आते थे? 6 साल सेवा करनी है यह कहने के साथ कितने लोग आते थे? कपटमुक्त मनन करके बताएँ। हाँ हाँ.... ये तो अभी हम इस पड़ाव में कहते हैं कि हाँ हम 6 साल समय देकर आते थे। मगर अपने आपको यह भी सवाल पूछें कि 2 दिन निकालने के लिए हमने कितने दिन दिए हैं। 2 दिन हम यहाँ आए हैं तो कितने लोगों को,

कितने दिन से तैयारी चल रही है। तो सीधा आने के लिए भी इतने दिन तैयारी लगती है तो 6 साल सेवाएँ हम कब करते थे और फिर कब आते थे? (विचारसेवा) हाँ हमारी अच्छी तैयारी है मगर वाकई में मानकर देखो कि अगर ऐसा किया गया होता तो वाकई में कितने बचते थे। आज तो हम कहेंगे क्योंकि इतना सुनने के बाद दिखता है की इस चीज की जरूरत कितनी है। कोई चप्पा डाले और वो साफ ही नहीं करें और हर दिन डाले। और किसीने उसे साफ कर दिया तो फिर लगेगा कि अरे ऐसा ही देखना चाहिए था। मैं क्यों ऐसा देख नहीं रहा था? तो जरूरत महसूस होगी। मगर यही सवाल पहले आया होता तो बहुत कम आए होते, बहुत कम खोजी जिनका जीने मरने का सवाल ही है वही खोजी आए होते। सभी नहीं आए होते, मगर यह कितनी अच्छी बात है, कितनी कृपा है हमारे लिए कि चलो हमारे लिए ऐसा कुछ नहीं बताया गया है। पात्रता, कुछ फॉर्म भरने का पार्ट, कुछ यहाँ पर बैठने का यानी बताया भी गया तो क्या - बैठकर श्रवण करना है यानी इतना आसान करके हमें दिया जा रहा है। कई सारे लोग जो अलग-अलग जगह पर जाकर ज्ञान के लिए भटककर आते हैं, वे बता पाएँगे कि कितना आसान है, बस यहाँ पर बिठाया गया, श्रवण करवाया गया। और सुनते-सुनते समझ रहे हैं क्योंकि हमें कोई नयी चीज नहीं करना है। हमें अपने अंदर से कुछ नहीं लाना है। अगर कोई नयी चीज करके हमारे सामने कोई चीज रखनी होती तो कितना कठीन था। हमारे लिए ऐसा कुछ नहीं बताया गया, यहाँ पर अब जो भी खोजी आए हुए है उन्हें सीधा ज्ञान दिया जा रहा है। तो यह वाकई कृपा है सरश्री की हम पर, उस असीम प्रेम की, उस तेजप्रेम की कृपा हो रही है हम पर। और जब पूरा ज्ञान मिल जाएगा, तब क्या पता चलता है कि अरे मैं नहीं था पात्र। सरश्री ने मौका दिया, कृपा हुई है मुझ पर। मिलने के पहले लगता है कि हाँ मैं पात्र हूँ, मैं तो करना चाहता हूँ। मगर जब ज्ञान उतरने लगता है अपने अंदर, जब जीवन में उतरता है तब लगता है कि कहाँ हम पात्र थे। जितना ज्ञान अंदर उतरता है तो पता चलता है कि हम पात्र नहीं थे मगर पात्रता बढ़ाई गई। तो यह अच्छा है एक कदम कि हम ज्ञान सुन सकते हैं वह ज्ञान जिसके लिए अंतिम सत्संग कहा गया है। हम जाकर पियानो योगा सिखकर आते हैं तो वहाँ पर टिचर्स के कुछ नियम होते हैं। फिर भी जिन्हें कठिनाई रहती है फिर भी वह कहते हैं कि ऐसा ही करना है आपको। हम देखते हैं कि एक सामान्य कोई शिक्षा लेनी है तो भी हमें एक प्रयास करना पड़ता है, मगर यहाँ हमें क्या प्रयास है, यहाँ हमें कुछ नहीं करना है, यहाँ सिर्फ मात्र उपस्थिति है। सिर्फ उपस्थित रहना है और जो भी आ रहा है खुले दिल से, उस प्रेम से, उस विश्वास के साथ, उस श्रद्धा के साथ सुनना है। जितना विश्वास रहेगा, जितनी श्रद्धा रहेगी उनता ज्ञान उतरेगा। वरना ध्यान कहीं और रहेगा तो ज्ञान उतरने भी समय लगेगा। इसलिए पहले दिन से बताया क्या जा रहा है कि मौन का पालन करें। जो खोजी संपूर्ण मौन का पालन करते हैं उन्हें जो रिजल्ट मिलता है वह आश्चर्यजनक, जबरदस्त रिजल्ट रहता है क्योंकि हम कभी अपने आपको बंद करके बैठते नहीं है। यह प्रयोग हम बाहर नहीं कर पाते हैं। यहाँ मौका है तो हम देख पाएँ कि अपने अंदर क्या-क्या चल रहा है। वी. के. पी.. का दर्शन कर पाएँ, हमें पता चले कि ये वी. के. पी. आए। शांत बैठकर अपने अंदर देखेंगे तो पता चलेगा कि इतने सारे वी. के. पी.. है, इन सबसे मुक्ति पानी है।

तो आसान तरीका है मात्र उपस्थित रहे उस विश्वास के साथ, उस तेजप्रेम के साथ। एक कहानी बताई जाती है, कहानी क्या कहती है कि एक बड़ा पहाड़ है वहाँ पर कुछ लोग चढ़ रहे हैं, उस पहाड़ पर कोई मंदिर है तो वहाँ पहुँचना सभी का लक्ष्य था। तो सभी उसके ऊपर चढ़ रहे हैं। उसमें काफी समय जाएगा तो जो जरूरत का सामान है वह उनके पास था। और सामान का एक-एक हिस्सा उन्होंने अपने कंधे पर लिया था, जिसकी वजह से चलना इतना आसान नहीं था। वजन है, बोझ है तो चलते समय बहुत तकलीफ हो रही थी। और उनके साथ एक छोटी लड़की भी चल रही थी, जिसने कंधे पर अपने छोटे भाई को लिया था और वो चढ़ रही थी बहुत खुश भी थी, आनंद में थी और ऊपर चढ़ते जा रही है। तो सभी को आश्चर्य हो रहा था कि अरे! हमारे पास इतना सा सामान है तो हमें इतनी तकलीफ हो रही है और यह कैसे इतनी आसानी से अपने भाई को कंधे पर लेकर चल रही है तो किसी ने उसे पूछा, हमें तो इतना सा

बोझा लेकर चलने में तकलीफ हो रही है और तुम इसे भी कैसे अपने कंधे पर लेकर चल रही हो, तुम्हें इसका बोझ नहीं लगता ? तो उस लडकी ने तुरंत कहा, 'यह बोझ नहीं है, यह तो मेरा भाई है । हालाँकि वजन ज्यादा था फिर भी वजन नहीं लग रहा था क्योंकि अपने भाई के प्रति प्यार है । प्रेम के कारण तकलीफ भी तकलीफ नहीं लग रही थी, बोझा भी बोझा नहीं लग रहा था । वो आनंद था क्योंकि वो अपने भाई को लेकर जा रही थी ।

तो महाआसमानी ज्ञान हमारे लिए कैसा ज्ञान है । उस तेजप्रेम के साथ, उस ज्ञान के साथ जब हम बैठेंगे । चलो यहाँ आने से पहले मैं कौन हूँ यह जानने कि प्यास या इसी जनम में मुझे आत्मसाक्षात्कार मिले इतनी बड़ी प्यास नहीं थी, नहीं मालूम था स्वीकार हैं । मगर अब मालूम पड़ा है कि जीवन में ही यह संभव हो सकता है । इसी शरीर के साथ यह हो लगता है तो क्यों नहीं मिलना चाहिए ? तो फिर वह अगर प्यास है, हाँ मुझे जानना है, संत ज्ञानेश्वर को क्या बोध हुआ, उन्होंने अपना जीवन कैसे जाना । भगवान बुद्ध को क्या बोध हुआ, उन्होंने अपना जीवन कैसे जिया । भगवान महावीर ने क्या प्राप्त किया रहेगा, ऐसी कौन सी बात उन्होंने प्राप्त की रहेगी वह मुझे मिल सकती है क्या ? हाँ मिल सकती है, ज्ञान देनेवाले भी उपस्थित है, बस चाहिए अब हमारी उपस्थिति । उस उपस्थिति के साथ, उस प्रेम के साथ, विश्वास के साथ, उस श्रद्धा के साथ यह चीज संभव है । तो क्यों नहीं चाहिए, क्यों नहीं मैं छोटा सा प्रयास करूँ और क्यों नहीं मैं पाऊँ ? अगर यह विश्वास, श्रद्धा है तो खुले मन से, खुले दिल से हम बैठेंगे, सुनेंगे । जो भी आ रहा है, हर शब्द को आकहाशवाणी की तरह सुनेंगे और वह सीधा अपने अंदर उतरेगा । पर यह कब होगा ? वाकई हमने गंभीरता से लिया है तो । यह कब होगा, इसलिए श्रद्धा चाहिए । क्यों पूछा जाता है गुरु पर श्रद्धा जागी है क्या ? हमने देखा है कि कितनी सारी कहानियाँ हैं, टी.वी सिरीयल्स में आज भी दिखाया जाता है कि माँ-बाप को जब लगता है कि छोटे बच्चों को ज्ञान मिलना चाहिए तब वे अपने बच्चे को गुरु के आश्रम में छोड़कर आते हैं । छोड़ने के बाद माता-पिता कभी देखते नहीं है कि चलो 5 साल गुरु के आश्रम में छोड़ा है । निश्चित होकर माता-पिता रहते हैं क्योंकि उसे शिक्षा मिल रही है उधर, उसकी ट्रेनिंग हो रही है उधर । फिर ट्रेनिंग के दौरान उस लड़के को भी कोई शिकायत नहीं रहती है कि उसके गुरु ने कितना तपाया, बार-बार एक ही चीज को करने के लिए क्यों बोला । तो कितना कष्ट करके पुराने जमाने में लोगों ने ज्ञान प्राप्त किया और फिर भी अंतिम चोटी पर पहुँचे कि नहीं पहुँचे ? ऐसे अनगिनत लोग प्रयास करके थक गए, हुआ नहीं । आज हमारे पास मौका है कि हमारे पास जिंदा गुरु है और हम उस ज्ञान को लेकर वह नैया आसानी से पार कर सकते हैं । तो उसे मौके का पूरा-पूरा लाभ लेते हुए उसी श्रद्धा, उसी प्रेम के साथ हम आज के इस शिविर की शुरुआत करेंगे । सरश्री अलग-अलग रूप से शिविर लेने जा रहे हैं । कभी एल् सी. डी.व्दारा, कभी तेजसेवकों के व्दारा, कभी सत्यआचार्य या कभी स्वयं आकर । तो जिस भी तरीके से मार्गदर्शन मिले हम लेने को तैयार रहे क्योंकि यह सरश्री की मेथड है । अगर हमें तेजप्रेम है तो जिस तरह से सरश्री हमें लेकर जाएँगे उस तरह से हम जाएँगे । फिर जो नियम है और जो वचन है उसका भी हम पालन करेंगे ।

नियम-

हम सभी जानते हैं कि यहाँ हमें संपूर्ण शिविर मौन का पालन करना है । और मौन केवल शब्दों से नहीं बल्कि शरीर के व्दारा भी हम किसी से बात नहीं करेंगे । और अगर किसी को दिक्कत है तो यहाँ जो तेजसेवक हैं उनसे हम बात कर सकते हैं । **दूसरा नियम** हमें कोई अनुमान नहीं लगाना है । और **तीसरा नियम** हम जानते हैं कि यहाँ जब भी विचारसेवा करने को कहा जाता है तो हमें कपटमुक्त होकर विचारसेवा करनी है । उसमें ना ही कोई बात बढ़ाकर ना घटाकर बतानी है । **चौथा नियम** उच्च ज्ञान का उपयोग निम्न बातों के लिए नहीं करेंगे । और **पाचवाँ नियम** है कि हमें किसी और की गीता नहीं पढ़नी है । गीता नहीं पढ़नी इसका अर्थ, यहाँ ऐसा हुआ होगा कि आपके साथ कई पहचान के खोजी घरवाले आए रहेगे तो प्रवचन में कोई सरश्री से बातें आएँगी तो लगेगा

अरे! मुझे समझा इसे समझा क्या? शायद उसे समझा नहीं रहेगा इसका अर्थ हम दूसरों की गीता पढ़ रहे हैं। तो ऐसा नहीं करना है कई बार लगेगा अरे! इसने तो कुछ अलग अर्थ लिया मैंने तो कुछ और ही समझा है या यह ऐसा क्यों कर रहे हैं, ये तेजसेवक ऐसा क्यों कर रहे हैं तो ऐसी किसी भी तरह दूसरों की गीता नहीं पढ़नी है। तेजसेवकों को उनके रोल दिए गए हैं तो वे अपना काम कर रहे हैं। तेजसेवक यहाँ हमें शिविर में संपूर्ण लाभ हो इसलिए वे कुछ कार्य में हैं। जिसके लिए हो सकता है कि वे आपस में बात भी करें या उनकी क्रियाएँ कुछ अलग होंगी। तो हमें वहाँ उनकी गीता नहीं पढ़नी है।

वचन-

- 1) यहाँ जो भी तेजज्ञान हमें मिलेगा उसका उपयोग हम अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए करेंगे।
- 2) जो हमें तेजज्ञान मिलेगा उसका उपयोग हम दूसरों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए करेंगे।
- 3) जो भी बातें होंगी प्रवचन के स्वरूप में या एक्सरसाइज में या किसी भी रूप में उसका जिक्र हम बाहर नहीं करेंगे।

इन सभी का पालन करते समय कोई दिक्कत है, कोई समस्या है तो बाहर तेजसेवक हैं उनसे आप संपर्क कर सकते हैं। किसी को अगर कोई मेडिकल प्रॉब्लेम है तो बाहर डॉक्टरों की व्यवस्था है।

प्रवचन के कुछ नियम-

- 1) दिन के शुरुआत में जैसे ही सरश्री स्क्रीन पर दिखाई दे हमें खड़े होकर अभिवादन करना है और फिर हम अपनी जगह पर बैठेंगे। फिर उसके बाद हम मन ही मन अभिवादन करेंगे।
- 2) प्रवचन के दौरान किसी भी कारणवश ना ही बीच में उठे, ना ही बात करें।
- 3) प्रवचन की बातें न लिखें। क्योंकि सुनने और लिखने की क्रिया में मन एक ही समय दो में विभाजीत हो जाता है। जिस वजह से हमसे कुछ महत्वपूर्ण बातें सुनना छूट जाती है। ऐसा ना हो इसलिए हमारी ही सुविधा के लिए यह नियम है।
- 4) प्रवचन में अगर कोई सवाल पूछा जाय तो ऐसे प्रतिसाद दें जैसे सरश्री स्वयं यहाँ पर हैं।

तो पहले प्रवचन की शुरुआत हम एक प्रार्थना से करने जा रहे हैं, जिसके लिए सभी अपने जगह पर खड़े हो जाएँगे। सभी की आँखें बंद हैं। हमारे सामने हमारे सरश्री हैं, उन्हें सामने रखते हुए, उनके सामने संपूर्ण नमन करते हुए, समर्पण के साथ हम यह प्रार्थना करने जा रहे हैं। सभी मेरे साथ मेरे पीछे-पीछे प्रार्थना करने जा रहे हैं।

प्रार्थना

हे सरश्री हम वचन देते हैं कि शिविर में हुई बातों का जिक्र, हम बाहर नहीं करेंगे,
हे सरश्री हम वादा करते हैं, अंतिम सत्य मिलने तक, आप की बताई हुई राह पर चलेंगे,
हे सरश्री हम पक्का इरादा करते हैं कि हम सत्य सोचेंगे, सत्य कहेंगे और सत्य ही फैलाएँगे
धन्यवाद। धीरे-धीरे सभी अपनी आँखें खोलेंगे।

प्रवचन (एकस्. वाय्. झेड. दिवस)

प्रवचन का समय- ३६ मि. ४० से.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । भवती के भाव के साथ हम आज एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रवचन सुनने जा रहे हैं ।
धन्यवाद, हॅपी थॉट्स ।

प्रवचन के बाद-

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. मनन करेंगे की सरश्री हमारे कौन है ? जिस में हमें मनन करना है की वी. के. पी. क्या है ?
२. विचार किस बात की खबर दे रहे है ।
३. फूलों का समर्पण हमें यहाँ करना है ।
४. कोई विचारसेवा दे की क्या लगा महाआसमानी शिविर में क्या मिलेगा ।
५. सरश्री के तरफ से आया है की, महाआसमानी शिविर में हमें **कुछ नहीं** मिलने जा रहा है ।
६. वाकई कुछ भी नहीं मिलेगा तो चलेगा ऐसी तैयारी है तो आ जाए । इस के ऊपरान्त भी अंदर आने की तैयारी है तो एक साईड होकर आना है । वरना बाहर सत्यआचार्य को मिलना है वह आपको आगे का मार्गदर्शन देंगे ।

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । पहला प्रवचन जो हमने सुना जिसमें कई सारी महत्वपूर्ण बातें हमने समझी । तो अभी एक मनन ब्रेक होने जा रहा है जिसमें हम बाहर जाएंगे और मनन करेंगे की सरश्री हमारे कौन है ? व्ही. के. पी. क्या है?, और आवाज अगर कान के बारे में न्यूज देती है, कोई दृश्य अगर आँख के बारे में खबर देते है, कोई सुगंध है तो नाक के बारे में खबर देती है, तो हमारे विचार किस बात की खबर दे रहे हैं । असली अध्यात्म को सेकंड न्यूज सरश्री ने क्यों कहा है । मनन करें और मनन करके जब वापस अंदर आएंगे तो संपूर्ण समर्पण के साथ अंदर आना है, एक साईड होकर अंदर आना है । और फिर जब हम यहाँ अंदर आएंगे तो यहाँ प्रार्थना के रूप में एक भजन चलाया जाएगा, जिसके शब्द है कृपा करो माया से हमें मुक्त करो, जिसके साथ फूलों का समर्पण हमें यहाँ करना है । अभी इस बात पर भी मनन हो की जब हम घरसे निकले थे तब क्या विचार चल रहे थे, की महाआसमानी शिविर में क्या होगा, जब रिस्पॉन्सिबिलीटी शिविर हुआ तब क्या विचार चल रहे थे, क्या होने जा रहा है ऐसे कई तरह के विचार आए रहेंगे की महाआसमानी शिविर में क्या मिलेगा । कितने खोजियों के मन में ये विचार आया या ऐसा लगा कि महाआसमानी शिविर में क्या मिल सकता है, बुनियादी सत्य के बाद महाआसमानी शिविर में क्या मिलेगा इस पर विचार उठें वे खोजी हाथ उपर करें । इनमें से कोई विचारसेवा दे की क्या लगा महाआसमानी शिविर में क्या मिलेगा । विचारसेवा । धन्यवाद । हर एक के अंदर कुछ ना कुछ विचार जरूर उठें रहेंगे, की महाआसमानी शिविर में हमें कुछ ना कुछ मिलेगा । कितने खोजियोंको लगा

की महाआसमानी शिविर में कुछ मिलनेवाला है वे हाथ उपर करें। सरश्री के तरफ से आया है, आप सभी जानते हो यहा पर जो भी बताया जाता है तेजसारणीसे सत्यआचार्य बताते है जो सरश्री से आता है, तो हर एक को लगा की कुछ ना कुछ मिलेगा लेकिन महाआसमानी शिविर में यहा किसीको भी **कुछ नहीं मिलनेवाला है**। अगर किसीको लगा होगा की मुझे यहां कुछ मिलनेवाला है, तो ये भ्रम निकालकर आ जाए। महाआसमानी शिविर में हमें कुछ नहीं मिलने जा रहा है। और वाकई ऐसी तैयारी है तो आ जाए। वरना कल ऐसा होगा की शिविर किया, दो दिन किया, क्या हुआ, कुछ भी नहीं मिला, फिर जब वापस जाएंगे, अरे क्या हुआ कुछ भी नहीं हुआ, फिर क्यों तैयारी की इतनी। ऐसा लगा था की ऐसा कुछ मिलेगा, वैसा कुछ मिलेगा तो ऐसा कुछ नहीं मिलनेवाला है। तो यह बात समझकर अंदर आ जाए। बहुत कुछ होगा, पहले गुरुमंत्र से इतने बोझ हट गए, तो अभी तो क्या होगा, तो यहा ऐसा कुछ भी नहीं होने जो रहा है। बहुत सोचकर हम आए है की ऐसा कुछ मिलेगा वैसा कुछ मिलेगा तो ऐसा कुछ भी नहीं होने जा रहा है। इस के उपरांत भी अंदर आने की तैयारी है तो एक साईड होकर आना है। वरना बाहर सत्यआचार्य को मिलना है वह आपको आगे का मार्गदर्शन देंगे और जब अंदर आएंगे तो पूर्ण श्रद्धा हो, पूर्ण भक्ति हो, जिनके अंदर ऐसे लगता है की कुछ नहीं मिलेगा चलेगा, फिर भी हम सुनने को तैयार है और वाकई ऐसा लगता है तो पूर्ण रूपसे समर्पित होकर इस तेजस्थान पर आना है। जैसे यहा प्रार्थना रूपी भजन लगेगा तो हमें अंदर आना है और तेजसेवक जैसे हमें गाईड करेंगे फूल समर्पण के लिए वैसे हमें फूल समर्पित करने है और फिर उसी जगह बैठना है जहा अभी हम बैठे है और एक बार समर्पण होगा तब सभी एक्सपेक्टेडेशन खुद ब खुद चले जाएंगे की हमें कुछ मिलने वाला है। तो सरश्री का हमारे लिए ये सीधा साधा मेसेज है की हमें कुछ नहीं मिलने जा रहा है। ऐसी तैयारी है तो आए क्योंकि कुछ खोजियोंको लगता है की अरे दो दिन दिए ये सोचके की हमें कुछ मिलेगा ऐसा कुछ नहीं हाने जा रहा है। तो समर्पण के भाव के साथ अंदर आएंगे। किसीको कुछ दिक्कत है तो सत्यआचार्य से बात करे। तो मनन करेंगे। ब्रेक में संपूर्ण मौन का पालन करेंगे।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएंगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

प्रवचन (इललॉजिकल दिवस+ मुझे तेजसत्य चाहिए)

प्रवचन का समय- १ घंटा ०९ मि.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । तेजमनन हुआ है, समर्पण हुआ है । तो उसी श्रद्धा से, उसी भक्ति से आगे हमें सरश्री को सुनना है । सुनते समय सभी नियमोंका पालन करेंगे ही उसके साथ साथ यहा जिस भी तरहकी सूचनाएँ सरश्री के व्दारा दी जाएगी उसका पालन हमें करना है । उस तेजप्रेम में रहते हुए प्रवचन सुनेंगे और उसमें रहते हुए हमें इस शिविर में संपूर्ण रूपसे भाग लेना है । और संपूर्ण रूपसे भाग लेना याने अपने तन मन धन के समर्पण के साथ ये शिविर करना है । तन का समर्पण याने मैं शरीर हूँ इस अज्ञान का समर्पण । मन का समर्पण याने अहंकार का समर्पण । धन का समर्पण याने मेरा है मेरा का भाव मालिकियत का समर्पण । इस समर्पण के साथ आगे का शिविर हमें सुनना है । तो इस शिविर का महत्त्वपूर्ण पडाव है उसमें एक एक्झरसाइज सरश्री हमें बताते है । हम जानते हैं कि एक्झरसाइज सरश्री कोई आंतरीक ध्यान के साथ, आंतरीक क्रिया मौन के साथ बताते है । तो ये शारिरीक एक्झरसाइज नहीं है । एक महत्त्वपूर्ण एक्झरसाइज सरश्री करवायेंगे । यह एक्झरसाइज हमारे जीवन का अंग बनेगा । हम इस एक्झरसाइज को कभी भी नहीं भूलेंगे, वह सदा हमारे साथ चलनेवाली है । क्योंकि आज हमें कुछ बात का पता चलेगा जिस बात कि तैयारी के लिए हम यहाँ आये है । इतने दिनों से, कुछ लोग ४ साल से, कुछ लोग ६ साल से प्रतिक्षा कर रहे है कि हम महाआसमानी शिविर करेंगे । महाआसमानी शिविर का जो मुख्य पडाव है, तो बडे ध्यान से हम सुनेंगे । अगर नींद आती है तो अपनी जगह पर खडे होकर सुन सकते है । पूरे ध्यान से हम सुननेवाले है । खास करके एक्झरसाइज हम पूरे ध्यान से सुनेंगे । जब सरश्री हमें एक्झरसाइज बताते है तो बहुत सजग होकर सुनना है, हर शब्द सुनें, सुनेंगे तो हमे सही समझ में आयेगा कि क्या करना है । उस वक्त हमारा ध्यान नहीं रहता तो कभी कभी समझता नहीं है । तो पूर्ण होश के साथ तैयार होकर हमें सुनना है, तबतक के लिए शुभेच्छा, हॅपी थॉटस् ।

प्रवचन के बाद-

आप सबको शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । इस शिविर की सबसे मुख्य एक्सअरसाइज अभी हम करने जा रहे हैं । कोई भी अनुमान न लगाते हुए, कल्पना न करते हुए हमें यह एक्सरसाइज करनी है । मुझे तेजसत्य चाहिए यह एक्सरसाइज हमने समझी है, उसे बाहर जाकर टहलते हुए करके आएँगे । इस एक्सरसाइज के लिए हम बैठेंगे नहीं, ना ही फ्रेश होने के लिए जाएँगे । तो बहुत महत्त्वपूर्ण एक्सरसाइज हम करेंगे, यह करके आएँगे तो विचारसेवा करेंगे । मगर ध्यान में क्या रखें कि हम टहल रहे हैं, घूम रहे हैं इस परिसर में तो ध्यान तेजस्थान पर है । भूल गए तो अपने आपसे क्या कहेंगे 'मुझे तेजसत्य चाहिए' । बस हृदयस्थान पर ध्यान रखते हुए टहल कर आएँगे । फिर बात होगी, तब तक के लिए धन्यवाद, हॅपी थॉट्स ।

एक्सरसाइज के बाद-

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

1. कितने खोजियों को लगता है कि वे अभी भी तेजस्थान पर हैं, वे हाथ ऊपर करें धन्यवाद ।
2. हम में से कितने खोजियों को लगा कि जिनके विचार नहीं थे या बहुत कम हुए या विचार नहीं थे, वे हाथ ऊपर करें धन्यवाद ।
3. कितने खोजियों को लगा कि शरीर का एहसास गायब हुआ ऐसा लगा, वे हाथ ऊपर करें धन्यवाद ।
4. कई सालों से मेडिटेशन कर रहे हैं कि वह अवस्था हमें प्राप्त ही नहीं होती वह तो सिर्फ घंटो बैठते हैं, किसी बिंदू ध्यान करते हैं, साँस पर ध्यान लगाते हैं पर वह करके कहाँ ध्यान लगाना है, एक्जाटली करना क्या है, उन्हें पता ही नहीं ।
5. तो मूल स्रोत जहाँ पर हमें जाना है वह स्वध्यान है असली ध्यान है, अगर वह नहीं हो रहा या हमारा ध्यान बाहर ही है तो वह व्यवधान है ।
6. इस ध्यान की विशेषता है यह खुली आँखों का ध्यान है ।
7. यहाँ पर अंतिम सत्संग की बात हो रही है, अंतिम चरण की बात हो रही है । तो अब तेजस्थान पर रहकर हर कार्य हो, हर विचार हो यह कला हमने सीखी ।
8. जो अनुभव इतने सालों में नहीं मिला वह कुछ ही क्षणों में यहाँ पर मिला ।
9. कई सारे खोजियों ने अध्यात्म में कई साल कार्य किया है, तो ऐसे कुछ खोजी अभी विचारसेवा करें कि उन्हें मुझे तेजसत्य चाहिए के साथ क्या अनुभव आया ।

आप सबको शुभेच्छा हँपी थॉट्स । अभी जो एक्सरसाइज हुई जिसमें हेड से हार्ट तक की यात्रा जो हुई उसके बारे में कुछ खोजी विचारसेवा दें । कितने खोजियों को लगता है कि वे अभी भी तेजस्थान पर हैं, वे हाथ ऊपर करें धन्यवाद । अभी भी ऐसा होगा कि कई लोग उसी अवस्था में होंगे तो विचारसेवा दें, जहाँ भी कोई विचारसेवा देना चाहेंगे वे हाथ ऊपर करें और आप किस तेजस्थान से हो यह जरूर बताएँ । विचारसेवा । धन्यवाद । हम में से कितने खोजियों को लगा कि जिनके विचार नहीं थे या बहुत कम हुए या विचार नहीं थे वे हाथ ऊपर करें धन्यवाद । विचारसेवा । धन्यवाद । हम में से कितने खोजियों को लगा कि शरीर का एहसास गायब हुआ ऐसा लगा, वे हाथ ऊपर करें धन्यवाद । विचारसेवा । धन्यवाद । हम में से कितने खोजियों को लगा कि आनंद महसूस हुआ, वे हाथ ऊपर करें धन्यवाद । विचारसेवा । धन्यवाद । ऐसे कितने खोजियों को लगा कि विचार हृदय से उठ रहे हैं या ध्यान वहीं पर है, वे हाथ ऊपर करें धन्यवाद । इसलिए बताया गया कि अभी हम बहुत ही मुख्य ध्यान करने जा रहे हैं । मुझे तेजसत्य चाहिए यह जो ध्यान है, यह इस शिविर का सबसे मुख्य ध्यान है । तो यह ध्यान के साथ क्या अनुभव रहा, कुछ खोजी विचारसेवा करें । विचारसेवा । धन्यवाद । तो विचारसेवा से हमने समझा कि कैसे खोजियों को इस ध्यान से विचारशून्य की अवस्था प्राप्त हुई, शांति महसूस हुई, वह ध्यान कर पाए तो इसके लिए ही इतने दिनों से आपसे तैयारी करवाई गई । तैयारी ऐसी जिसमें हमें ग्रहणशील किया गया, मन की छह टाँगों के बारे में समझ दी गई ताकि हम तेजस्थान पर आसानी से जा पाएँ, एक ऐसा इलाका जिसे महसूस कर पाएँ, जिसे वाकई ध्यान कहा गया है । वरना तो कुछ खोजियों से विचारसेवा आती है, जो कई सालों से ध्यान कर रहे हैं कि वह अवस्था हमें प्राप्त ही नहीं होती वे तो सिर्फ घंटो बैठते हैं, किसी बिंदू ध्यान करते हैं, साँस पर ध्यान लगाते हैं पर वह करके कहाँ ध्यान लगाना है, एक्जाटली करना क्या है उन्हें पता ही

नहीं। जब हम बिंदू पर ध्यान लगाते हैं उसमें होता क्या है समझते हैं किसी बिंदू पर लाइट, साँस पर ध्यान लगाकर हमारा ध्यान बाहर ही होता है, यह सब करके एकाग्रता तो आती है इसके भी लाभ हैं पर यह असली ध्यान नहीं है क्योंकि ध्यान तो बाहर ही है। तो मूल स्रोत जहाँ पर हमें जाना है वह स्वध्यान है, असली ध्यान है। अगर वह नहीं हो रहा या हमारा ध्यान बाहर ही है तो वह व्यवधान है और जब तक बाहरी मन उस स्रोत पर जाता नहीं तब तक वह स्वध्यान नहीं। और बहुत बार होता क्या है कि बाहर किसी को देखकर तो बिल्कुल ध्यान नहीं कर पाते हैं पर आज जो हमने ध्यान सीखा, जिसमें मुझे तेजसत्य चाहिए के साथ क्या हुआ कितने खोजी बाहर की चीजें देख रहे थे उसके बावजूद भी ध्यान तेजस्थान पर ही रख पाए, वे खोजी हाथ ऊपर करें। देखो ज्यादा से ज्यादा खोजी यह आसानी से कर पाएँ और इतने आसानी से कि हम सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं और फिर भी ध्यान तेजस्थान पर है, स्रोत पर है। मुझे तेजसत्य चाहिए यह पंक्ति तेजस्थान को कनेक्ट करती है, इस पंक्ति के साथ हम आसानी से ध्यान पर रह सकते हैं और आसानी से निर्विचार अवस्था में पहुँच सकते हैं, यही इस ध्यान की विशेषता है। यह खुली आँखों का ध्यान है, जो समझ से हम कर पा रहे हैं तो अब समझा होगा कि समझ ही एकमात्र रास्ता है ऐसा क्यों कहा गया है। तो यहाँ पर अंतिम सत्संग की बात हो रही है अंतिम चरण की बात हो रही है। तो अब तेजस्थान पर रहकर हर कार्य हो, हर विचार हो यह कला हमने सीखी। इसी कला की खोज में पहले भी हम में से कई सारे खोजियों ने अध्यात्म में कई साल कार्य किया है, कई साल इसके लिए कई सारी आध्यात्मिक संस्थाओं में भटककर आए हैं। जो अनुभव इतने सालों में नहीं मिला वह कुछ ही क्षणों में यहाँ पर मिला। इतने आसानी से तेजस्थान पर ध्यान रख पाए है। तो ऐसे कुछ खोजी अभी विचारसेवा करें कि उन्हें मुझे तेजसत्य चाहिए के साथ क्या अनुभव आया। विचारसेवा। धन्यवाद। यहाँ पर विचारसेवा हम रोकते हैं।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

प्रवचन (हेड में है कलयुग)

प्रवचन का समय- ४६ मि. ३४ से.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। तो अभी हम महाआसमानी शिविर और एक महत्वपूर्ण पड़ाव की तरफ जा रहे हैं। अगर ऐसा हो रहा है प्रवचन सुनते समय कुछ अनुमान लग रहे हैं तो जब भी अनुमान लगते हैं तो समझ जाना ये वी. के. पी. हैं, इसे बाजू रखें कोई सवाल उठें तो भी उसे बाजू रखें। जैसे सरश्री हमें मार्गदर्शन दे रहे हैं उस तरह हमें जाना है। यह प्रवचन अत्यंत महत्वपूर्ण प्रवचन है। तो उसी श्रद्धा के साथ, उसी भक्ति के साथ हम सरश्री को सुनने जा रहे हैं, धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. आपको एक सहयोगी दिया जाएगा, जिसमें से एक पर्सन तेजसेवक का रोल करेगा यानी वह सवाल पूछेगा 'हू आर यू' और दूसरा पर्सन खोजी का रोल करेगा जो जवाब देगा। पहले पाँच मिनट में खोजी को सुने सुनाए जवाब देने हैं, दूसरे पाँच मिनट में आपको बुद्धि और अनुभव के जवाब देने हैं, तीसरे पाँच मिनट आपको अनुभव से जवाब देने हैं।

२. ३० मिनट की यह एक्सरसाइज है।

३. पहले तेजसेवक से क्या-क्या गलतियाँ होती हैं, यह हम समझेंगे। (४ गलतियाँ)

४. खोजियों से क्या-क्या गलतियाँ होती हैं। यह हम समझेंगे। (४ गलतियाँ)

५. सत्याचार्य डेमो देनेवाले तेजसेवक का नाम बताए और उन्हें स्टेज पर बुलाएँ।

६. एक्सरसाइज के नियम बताए जा सकते हैं

१) बैठते वक्त यह ध्यान रखें कि आपकी वजह से कोई और ग्रुप डिस्टर्ब न हो। आपकी आवाज सिर्फ आपके पार्टनर तक पहुँचे।

२) पार्टनर्स एक बार चेक करें कि दोस्त या कोई रिश्तेदार सामने बैठा है क्या? अगर ऐसे खोजी है तो अपनी जगह पर खड़े होते हैं। तेजसेवक उन्हें पार्टनर्स चेंज करके देते हैं।

३) पूरी एक्सरसाइज में पास्ट या फ्यूचर की बातें नहीं करनी हैं। आप कौन हो यही सवाल पूछना है व जवाब देने हैं।

४) सत्यआचार्य के कहने पर ही स्टार्ट करना या चेंज कहने पर जवाब बदलने हैं।

५) एक्सरसाइज शुरू करने से पहले अपना नाम और अपना रोल पार्टनर को बताएँ और कौन सी भाषा का इस्तेमाल करेंगे यह बताएँ। जैसे डेमो में हमने देखा।

६) 15 मिनट के बाद रोल के साथ पार्टनर्स भी चेंज करें।

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स। यह एक्सरसाइज इस शिविर की सबसे महत्वपूर्ण एक्सरसाइज है। यह एक्सरसाइज हमें संघ में सहयोगी के साथ करनी है। आप ग्रुप में जाएँगे तो वहाँ पर आपको एक सहयोगी दिया जाएगा, जिसमें से एक पर्सन तेजसेवक का रोल करेगा यानी वह सवाल पूछेगा 'हू आर यू' और दूसरा पर्सन खोजी का रोल करेगा जो जवाब देगा। यह जवाब तीन भाग में देने हैं जैसे पहले पाँच मिनट में खोजी को सुने सुनाए जवाब देने हैं, जैसे कि मेरा नाम यह है... मैं बिजनस मॅन हूँ... आपने जो भी अपने बारे में सुनकर रखा है वह बताना है। दूसरे पाँच मिनट में आपको बुद्धि और अनुभव के जवाब देने हैं जैसे कि मेरा नाम .-.-..... है क्योंकि घरवालों ने मुझे यह नाम दिया पर अनुभव से क्या है दिखाई नहीं देता। तो यह जवाब बुद्धि क्या कहती है और अनुभव क्या कर रहे हैं इस तरह से दिया गया। और तीसरे पाँच मिनट आपको अनुभव से जवाब देने हैं यानी आप कौन हो? **उस पाँच मिनट में क्या अनुभव हो रहा है वह बताना है।**

तो यह एक्सरसाइज में हर पर्सन को दोनों रोल करने हैं। करीबन ३० मिनट की यह एक्सरसाइज है। यहाँ पर हम यह समझें कि इस एक्सरसाइज में कुछ साधारण, सामान्य गलतियाँ खोजियों से होती हैं, जो हमें नहीं करनी हैं। पहले तेजसेवक से क्या-क्या गलतियाँ होती हैं यह हम समझेंगे जिसमें।

पहली गलती - कि हम ठीक से नहीं बैठते हैं। तो इस एक्सरसाइज में दोनों को आमने-सामने बैठना है और दोनों की आँखें ३० मिनट तक बंद ही रहेंगी।

दूसरी गलती - कि वह कुछ अलग सवाल पूछने लग जाता है, जैसे आप कहाँ रहते हो?... क्या करते हो?... तेजसेवक को यह नहीं करना है। तेजसेवक को सिर्फ एक ही सवाल पूछना है - हू आर यू? तेजसेवक यही सवाल हिंदी या मराठी में भी पूछ सकता है जैसे कृपया मुझे बताएँ आप कौन हो? या मराठी में तुम्ही कोण आहात? इसके अलावा और कोई सवाल नहीं पूछना है।

तीसरी गलती - कि वह बार-बार इरीटेशन में पूछने लगता है हू आर यू? तो हमें इतने जल्दी-जल्दी में नहीं पूछना है कि सामने वाला जवाब ही न दे पाए।

चौथी गलती - कि काफी देर तक वह सवाल ही नहीं पूछता। तो हमें इतनी जल्दी भी नहीं पूछना है कि खोजी को सोचने का मौका ही न मिले और इतने धीरे भी नहीं पूछना है कि उसे नींद आ जाए। खोजी के जवाब देने के बाद ५ से १० सेकण्ड में सवाल पूछते रहना है।

तो ये चार गलतियाँ जो तेजसेवक के बारे में बताई जो हमें नहीं करनी है। अब हम यह जानें कि खोजियों से क्या-क्या गलतियाँ होती हैं।

पहली गलती- कि वह ठीक तरह से नहीं बैठता, आँखें खुली रखता है। तो यह पहली कॉमन गलती है जो खोजी को भी नहीं करनी है।

दूसरी गलती - कि वह अपनी कहानी बताने लग जाता है। भूतकाल में उसके साथ क्या-क्या हुआ वह दोहराने लग जाता है। तो यह गलती खोजी को नहीं करनी है। उसे जो जवाब देना है, तो सिर्फ वह कौन है इस सवाल को ध्यान में रखते हुए।

तीसरी गलती - कि वह गुस्सा हो सकता है कि कितनी बार एक ही जवाब दें। तो यहाँ खोजी गुस्से में न आते हुए जवाब दें। और अनुभव के जवाब में क्या गलती होती है, यह समझें।

चौथी गलती - कि खोजी अपने अलग-अलग अनुभव बताने शुरू करता है। खासकर इस तीसरे राउंड में यह गलती होती है कि खोजी अपने अलग-अलग पास्ट, भूतकाल में लिए गए अनुभव बताने लगते हैं। जैसे- मुझे पिकनिक में आनंद का बहुत अनुभव हुआ था...वगैरह वगैरह। तो यह गलती हमें नहीं करनी है। **उन ५ मिनट में हम अपने होने का क्या अनुभव कर रहे हैं वह बताना है** ना कि भूत, पास्ट में क्या अनुभव थे वह बताना है। उस वक्त वर्तमान में जो भी अनुभव हो रहे हैं वह बताना है। तो ये चार गलतियाँ जो खोजी से होती हैं वे आपको बताई गईं। यहाँ पर हमने जाना कि तेजसेवक से क्या गलती होती है और खोजी से क्या गलती होती है ताकि हम यह ना करें।

अब हम आपको यह बताने जा रहे हैं कि एग्जाक्टली यह एक्सरसाइज हमें कैसे करनी है? तो इसमें यह..... तेजसेवक मुझे सहयोग देंगे। (सत्याचार्य डेमो देनेवाले तेजसेवक का नाम बताए और उन्हें स्टेज पर बुलाएँ।)

(नाम जो तेजसेवक का डेमो देने जा रहे हैं) और (नाम जो खोजी का डेमो देने जा रहे हैं) दोनों आमने-सामने बैठते हैं, अपना नाम बताते हैं, रोल बताते हैं, भाषा पूछते हैं फिर आँखें बंद करते हैं।

सत्यआचार्य :- जब सत्याचार्य स्टार्ट करेंगे तो हमें स्टार्ट करना है। स्टार्ट ! सुने सुनाए जवाब देने हैं।

तेजसेवक :- कृपया मुझे बताएँ कि आप कौन हैं?

खोजी :- मैं लड़का हूँ।

तेजसेवक :- कृपया मुझे बताएँ कि आप कौन हैं?

खोजी :- मैं हिंदू हूँ।

तेजसेवक :- कृपया मुझे बताएँ कि आप कौन हैं?

खोजी :- मैं इंजिनियर हूँ।

सत्यआचार्य :- चेंज, अब बुद्धि और अनुभव से जवाब दें।

तेजसेवक :- कृपया मुझे बताएँ आप कौन हैं?

खोजी :- मैं लड़का हूँ क्योंकि मुझे लड़के का एम. एस. वाय. मिला है। लेकिन अनुभव से देखता हूँ तो लड़का होने का कोई अनुभव नहीं मिल रहा।

तेजसेवक :- कृपया मुझे बताएँ आप कौन हैं ?

खोजी :- मैं हिंदू हूँ क्योंकि मैं हिंदू घर में पैदा हुआ पर हिंदू होने का कोई अनुभव नहीं मिल रहा ।

तेजसेवक :- कृपया मुझे बताएँ आप कौन हैं ?

खोजी :- मैं इंजिनियर हूँ । क्योंकि मैंने इंजिनियर की पढ़ाई की है लेकिन अंदर देखता हूँ तो इंजिनियर होने का कोई अनुभव नहीं मिल रहा ।

सत्य आचार्य :- चैंज, अब अनुभव से जवाब दें ।

तेजसेवक :- कृपया मुझे बताएँ आप कौन हैं ?

खोजी :- ----

सत्यआचार्य :- (सत्याचार्य यहाँ पर कुछ समय के बाद अपना टॉक स्टार्ट करें) अब यहाँ पर अनुभव के जवाब आपको नहीं बताए गए क्योंकि यह आपको अनुभव करके ही बताना है । अंदर से अपने तेजस्थान से जो भी जवाब आ रहे हैं उन्हें देखें, अनुभव करें । सिर्फ अनुभव क्या कहता है वह देखें । हर एक के जवाब अलग-अलग हो सकते हैं या किसी का कोई जवाब न हो... । उस वक्त जो भी हो वही आपको शेअर करना है । अब हम सभी जैसे बताया जाएगा वैसे एक्सरसाइज करने के लिए जाएँगे और एक्सरसाइज करके वापस आएँगे । धन्यवाद, हँपी थॉट्स । (सत्यआचार्य व्यवस्था अनुसार गार्ड करें ।) एक्सरसाइज पूर्ण होने के बाद सत्यआचार्य खोजियों को तुरंत अगला प्रवचन सुनने के लिए हॉल में आने की सूचना दें ।

प्रवचन (वही कुछ नहीं मैं)

प्रवचन का समय- १ मि. ४९ से.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। इस एक्सरसाइज में जो भी अनुभव आते हैं, उस पर खोजी जो विचारसेवा देते हैं, उस पर सरश्री क्या कहते हैं, वह हम पहले समझेंगे। फिर हम विचारसेवा देंगे कि जब हम एक्सरसाइज कर रहे थे तब क्या हुआ। कई सारे खोजियों को कई सारे जवाब निकले रहेंगे जब सामनेवाले ने पूछा रहेगा हू आर यू? तो शुरूआत में सुने सुनाए जवाब दिए जो किसी ने कहा और हमने मान लिया। फिर हमने जवाब दिए जो बुद्धि ने कहा और बुद्धि ने कहने के बाद अनुभव ने जाकर चेक किया कि वैसा है क्या और तीसरी बार सिर्फ अनुभव के जवाब दिए। इस पूरे प्रोसेस में सरश्री हमें कुछ देने जा रहे हैं उसे समझेंगे और इस एक्सरसाइज में जो भी अनुभव आए है उस पर जो खोजी विचारसेवा देना चाहते हैं, उन्हें मौका दिया जाएगा पर उसके पहले सरश्री ने उस पर क्या कहा है वह सुनेंगे। धन्यवाद। तो उसी श्रद्धा के साथ, उसी भक्ति के साथ हम सरश्री को सुनने जा रहे हैं। धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। किसी ने पहले खोजी का रोल किया रहेगा या किसी ने बाद में खोजी का रोल किया रहेगा। तो जब सामनेवाले ने पूछा रहेगा हू आर यू? तो शुरूआत में सुने सुनाए जवाब आपने दिए, जो किसी ने कहा और हमने मान लिया तो वो जवाब देते वक्त क्या हो रहा था उसकी विचारसेवा पहले देंगे। विचारसेवा। धन्यवाद। सुने सुनाए जवाब में क्या हुआ वह बताएँ। विचारसेवा। धन्यवाद। अब बुद्धि ने कहा और बुद्धि ने कहने के बाद अनुभव क्या कर रहे हैं उस पर जो जवाब आए या उस वक्त क्या हुआ उस पर विचारसेवा दें। विचारसेवा। धन्यवाद। कितने खोजियों को ऐसा लगा कि शरीर तो है पर शरीर कहीं मिला नहीं। शरीर का एहसास नहीं था वे हाथ ऊपर करें, धन्यवाद। कितने खोजियों को ऐसा हुआ भाई, पिताजी ऐसे जवाब निकले पर अनुभव से अंदर कोई मिल नहीं रहा था वे हाथ ऊपर करें, धन्यवाद। आगे अनुभव से क्या जवाब आए, उसमें क्या अनुभव हुआ वे बताएँ। विचारसेवा। कितने खोजियोंको निर्विचार, खालीपन, विचारशून्य अवस्था महसूस हुई ऐसा लगा धन्यवाद। विचारसेवा। कितने खोजियोंको ऐसा लगा की तिसरे राउंड में जवाब ही नहीं आ रहे थे वे हाथ उपर करें धन्यवाद। कितने खोजियोंको खालीपन, विचारशून्य अवस्था का अनुभव आया ऐसा लगा वे हाथ उपर करें धन्यवाद। कितने खोजियोंको ऐसा लगा की तिसरे राउंड में जो भी हम अनुभवसे जवाब दे रहे थे तो जो पहले जवाब आए थे वो सब झूठ लगे ऐसा लगा वे हाथ उपर करें धन्यवाद। कितने खोजियोंको समय का पता ही नहीं चला ऐसा लगा धन्यवाद। विचारसेवा। धन्यवाद। वैसे आते ही सरश्री का संदेश था की आपको कुछ नहीं मिलनेवाला है। धन्यवाद। कितने खोजियोंको ऐसा हुआ की जब वो सवाल पूछ रहे थे तो सामनेवाले का जवाब आने के पहले ही अंदर जवाब उठ रहे थे वे हाथ उपर करें धन्यवाद। कितने खोजियोंके साथ ऐसा हुआ जब वो जवाब दे रहे थे तो उनको सब कुछ का अनुभव हुआ वे हाथ उपर करें धन्यवाद।

(सत्याचार्य अर्जेडा के अनुसार लंच ब्रेक / ग्रुप शेअरींग की अनाउन्समेंट करे ।) तो अब हम जब ग्रुप में जाएंगे इस पर विचारसेवा देने के लिए तब भी हमें हृदय पर रहना है । ये नहीं सोचना है की इसका जवाब अच्छा इसका जवाब बुरा । हमें सिर्फ अपने जवाब जो अनुभव से आए उसी के साथ रहना है । इसके बाद हमें विचारसेवा के लिए ग्रुप में जाना है जहाँ हमने थोड़े समय पहले विचारसेवा दी थी । जहाँ सत्यप्रमुख रहेगे तो विचारसेवा देनी है की तीन राउंड में क्या क्या हुआ । उसके बाद हम अंदर आएंगे तो फ्रेश होकर /खाना खाकर अंदर आएंगे । इसके बाद का जो प्रवचन है वो बहुत महत्वपूर्ण प्रवचन है । तो बाहर जा सकते है । ब्रेक में संपूर्ण मौन का पालन करना है । शुरुआत में पीछे के खोजी पहले उठेंगे । धन्यवाद हॅपी थॉटस् ।

ऑनलाइन साधना

प्रवचन का समय- १० मि.

प्रवचन के पहले -

अभी हम एक संदेश सुनने जा रहे हैं, जिसको पूर्ण ध्यान से सुनेंगे और उसको और समझने वाले हैं। तो आइये हम संदेश सुनते हैं। धन्यवाद, हॅपी थॉटस्।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । तो हम ऑनलाइन साधना करनेवाले हैं।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें ।

अगर अर्जेडा में है तो,लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाईज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आर्येंगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

प्रवचन (समर्पण अण्डरस्टैंडिंग-समझ)

प्रवचन का समय- ३८ मि. २० से.

प्रवचन के पहले -

अभी हमें उसी श्रद्धा और भक्ति के साथ आगे प्रवचन सुनना है। अगर ऐसा हो जाए कि हम कहीं ऊँचे पहाड़ पर चढ़ना चाहते हैं, जो कई किलो मीटर ऊँचा लगता है। और लग रहा है कि पूरा जीवन चले तो भी वहाँ पहुँच भी नहीं सकते। और ऐसा हुआ किसी ने एक झटके से पलक झपकते ही हमें वहाँ पहुँचा दिया तो कैसे महसूस होगा। कई किलो मीटर जहाँ पहुँचना असंभव लग रहा था, उसमें पलक झपकते ही हम पहुँच गए तो कैसा लगेगा, कैसे भाव उठेंगे। रस्ते में साधारण सी कोई लिफ्ट माँगता है यहाँ से वहाँ तक छोड़ना है तो कैसे याचना हम करते हैं? अरे जरा लिफ्ट दे दो। तो यहाँ जब इतनी बड़ी लिफ्ट मिलने जा रही है तो कैसे माँग होनी चाहिए, कैसे याचना होनी चाहिए, कैसे समर्पण होना चाहिए, किस तरह का प्रेम होना चाहिए उनके प्रति जो इतनी बड़ी लिफ्ट देने जा रहे हैं तो कैसे श्रद्धा होनी चाहिए। उसी श्रद्धा और भक्ति के साथ एक मुख्य पड़ाव हम सरश्री से सुनने जा रहे हैं। जब यह पड़ाव सुन रहे हैं, जब यह मुख्य प्रवचन सुन रहे हैं तो शरीर कान बन जाए। सरश्री का हर शब्द कुछ तो बता रहा है, ऐसे सुनें। तो उसी श्रद्धा और भक्ति के साथ आगे का प्रवचन सुनेंगे, धन्यवाद हँपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभीको शुभेच्छा हँपी थॉट्स। अभी प्रवचन में हमने सरश्री से समझा है तोलू मन की सातवीं टाँग है अनेक मैं, मल्टीपल आय, मायावी विचार। मैं, मेरा, मुझे, तू, तेरा, तुझे, वह, उन्हें। जो भी बातें हमने सुनी है उसपर दो मिनट आँखें बंद करके तेजमनन करें। व्यक्ति है नहीं, पर बन बैठा है। आइना यानी शरीर सिमीत है, हम सिमीत नहीं यह विश्वास हो। तेजअनुभव को उम्र नहीं। १३ इंच की सुरंग खुदाई का कार्य शुरू है। विचार हृदय तक पहुँचने से पहले उसकी पॉलीश होगी, मालीश होगी। इस तरह हृदय का प्याला अमृत से भरता जायेगा। तेजमनन करें तेजगुरु फीलिंग याने क्या। टी.जी.एफ का असली अर्थ। तेजगुरु विचार- टिचिंग ट्रेनिंग टेस्टिंग। मैं की ताली। मनन करें जो समझ हमें हमारे सरश्री ने दी है। मैं हूँ ही, आय एम् नॉट। मनन। धीरे धीरे सभी आँखें खोलेंगे। धन्यवाद। (सत्याचार्य अर्जेडा के अनुसार ग्रुप शेअरींग की अनाउन्समेंट करे। ग्रुप शेअरींग- व्हि. के.पी पकडमे आये क्या? सरश्री की वेशभुषा, नृत्य अभिव्यक्ती देखकर क्या लगा? हू एम् आय् एक्सरसाईज में अनुभव से क्या जवाब आये।)

प्रवचन (समय संपन्न)

प्रवचन का समय- ०९ मि. ३९ से.

प्रवचन के पहले -

अभी हम एक छोटा सा प्रवचन सुनने जा रहे हैं, जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। २००९ इस वर्ष के शुरुआत में सरश्री द्वारा एक मार्गदर्शन आया था, जिसका लाभ सभी खोजी हर रोज ले रहे हैं। तो आज से हम भी उसका लाभ रोज लेंगे। जब सरश्री ने यह प्रवचन दिया था तब समय ३ बजकर ३ मिनट हुआ था। इसलिए प्रवचन की शुरुआत उसी से है। तो आइए उस मार्गदर्शन को ध्यान से सुनते हैं, धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। अभी हमने समय संपन्न किस प्रकार से बनना है, यह समझा। हर घंटा जब १:१ या २:२ या ३:३ इस प्रकार का समय होता है तो आँखें बंद करके हमें मनन करना है कि मैं कौन हूँ? किस उद्देश्य के साथ यह कार्य कर रहा हूँ, आगे का कार्य किस उद्देश के साथ करनेवाला हूँ। जिससे हमारा ही होश बढ़नेवाला है। फिर हर कार्य उच्चतम चेतना के साथ होगा। इस प्रकार से हम हर घंटा समय संपन्न बननेवाले हैं और उसके साथ इस बात की खयाल रखें कि जैसे हम गाड़ी पर बैठे हैं तो आँखें बंद करके हमें यह मनन नहीं करना है। और एक महत्वपूर्ण बात हमने समझी कि हमें रोज सुबह ९:९ और शाम को ९:९ बजे पूरे विश्व के लिए प्रार्थना करनी है, जिसमें भाव यही हो कि पृथ्वी पर जो भी निगेटीव बातें हैं वे दूर हो चुकी हैं। पृथ्वी पर सुनहरी किरण आ रही है, शांति है, आरोग्य है, आनंद है।

२००९ में विश्व शांति प्रार्थना आई है और पूरे विश्व में लगभग ९९,००००० से ज्यादा लोग रोज सुबह-शाम ९:९ बजे विश्व शांति के लिए प्रार्थना करते हैं। संघ में की गई प्रार्थना के बहुत लाभ हैं। तो आइए आज से हम भी गिलहरी की सेवा दे कर, यह प्रार्थना कर कर विश्व शांति के लिए, अमन के लिए निमित्त बनेंगे। (प्रार्थना पढ़कर सुना सकते हैं।)

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएंगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

प्रवचन (मंत्र)

प्रवचन का समय- १० मि. १८ से.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। अभी तक अलग-अलग तरीके से सरश्री हमें गाइड कर रहे हैं। तो वह तैयारी है इस प्रवचन की ताकि हम सभी तैयारी के साथ आज के शिविर का महागुरु मंत्र ग्रहण कर पाएँ तो इस शिविर के बहुत ही महत्वपूर्ण पड़ाव के लिए अभी हम यहाँ पर उपस्थित हैं। लिपट के उदा. से हमने समझा कि अगर इतनी बड़ी लिपट मिलने जा रही है तो हमारी माँग कैसे हो। तो हम एक प्रार्थना से माँग करने जा रहे हैं, उस महागुरु मंत्र के लिए। पूर्ण भाव से हम अभी प्रार्थना करने जा रहे हैं। सभी अपनी जगह पर प्रार्थना के लिए खड़े हो जाएँगे। सभी की आँखें बंद हैं, उस समर्पण के साथ प्रार्थना करने जा रहे हैं, जो प्रार्थना प्रेमप्रतिज्ञा है। प्रेमप्रतिज्ञा कर रहे हैं तो अपना एक हाथ अपने हृदय पर रखेंगे, तेजस्थान पर रखेंगे और यह प्रतिज्ञा करेंगे कि जैसे सरश्री आपके सामने है। उनके बेस्ट मनोशरीर यंत्र के साथ आपके सामने है। तो पूर्ण भक्ति से, पूर्ण श्रद्धा के साथ, पूर्ण समर्पण के साथ प्रार्थना करेंगे सभी यह प्रार्थना मेरे पीछे-पीछे दोहराएँगे।

प्रार्थना

हे सरश्री, हम आपके साथ, सत्य के त्रिकोण में, जीवन जीने को तैयार है,
हे सरश्री, हमारा श्रवण संगीत होगा, हम संगीत प्रेमी बनेंगे,
हे सरश्री, हमारी सेवा गुलामी नहीं आजादी होगी, हम भक्त बनकर स्व इच्छा से सेवा देंगे,
हे सरश्री, हमारी भक्ति अभिव्यक्ति होगी, हम आपकी बताई हुई आज्ञा में रहेंगे।

धन्यवाद।

प्रवचन के बाद-

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. सभी ईश्वरों को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। अभी ईश्वर अनाउन्समेंट करेगा। और ईश्वर सुनेंगे।
२. शरीर को ईश्वर नहीं कहा गया है। मन को ईश्वर नहीं कहा गया है।
३. वह अवस्था, वह सेल्फ, वह चैतन्य, वह अपना होने का एहसास या वह तेजस्थान वह जिसे ईश्वर कहा गया है।
४. हर क्रिया समर्पित हो ईश्वर को ईश्वर फ्रेश हुआ, ईश्वर ने चप्पल पहनी, ईश्वर अंदर आया, कोई वी. के. पी. आया तो वह क्रिया ईश्वर को समर्पित हो।
५. इस समर्पण से जो वी. के. पी.. जहर है, वह अमृत बनेगा।

सभी ईश्वरोंको शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । अभी ईश्वर अनाउन्समेंट करेगा । और ईश्वर सुनेंगे । इस प्रवचन में महागुरु मंत्र हमें सरश्री से मिला और जो मुख्य बात सरश्री से समझी है जब ईश्वर शब्द आए तब शरीर को ईश्वर नहीं कहा गया है । मन को ईश्वर नहीं कहा गया है । आय एम् नॉट याने मैं हूँ ही । जिसे हम मैं मानते आए वो है ही नहीं और शरीर ईश्वर का ब्रश है, ईश्वर नहीं है । ईश्वर किसे नहीं कहा गया है वह समझना भी बहुत महत्वपूर्ण है । अगर शरीर ईश्वर नहीं, मन या बुद्धि ईश्वर नहीं तो फिर ईश्वर किसे कहा गया है । तो वह अवस्था, वह सेल्फ, वह चैतन्य, वह अपना होने का एहसास या वो तेजस्थान जिसे ईश्वर कहा गया है । कई बार गलती होती है की शरीर को ईश्वर मान लेते है । देखो वो ईश्वर उठा ईश्वर ने ऐसा किया । किसी मेरे मनको, तनको ईश्वर नहीं कहा गया है । जिसका समर्पण हुआ है, उसके बाद जो बचा है उसे ईश्वर कहा गया है । इसको असली समर्पण कहा गया है । तो उस एहसास को उस अनुभव को उस तेजस्थान को सरश्री ने ईश्वर कहा है । ईश्वर की अलग-अलग कल्पनाएँ करके हम आए है । सरश्री ने बताया है की वास्तव में ईश्वर क्या है, कौन है ? उसी समझ के साथ बाहर जाएंगे । एल् .एम्.सी २ । क्रिया समर्पित करें । ईश्वर ने चप्पल पहनी ईश्वर ने पानी पीया और जब भी व्ही. के. पी आएगा । व्ही. के. पी जिसे मैं, मेरा, मुझे, तू, तेरा, तुझे, वह, उन्हें अष्टमाया के साथ तो उसे पकडे और देखें की हर क्रिया समर्पित हो ईश्वर को । ईश्वर फ्रेश हुआ, ईश्वर ने चप्पल पहनी, ईश्वर अंदर आया, कोई व्ही. के. पी आया तो वो क्रिया ईश्वर को समर्पित हो । और जैसे यहा भजन शुरू होता है वापस इस हॉल में आएंगे । एल् .एम्.सी २ मंत्र मिला है महागुरु मंत्र मिला है उसका उपयोग हो । चप्पल पहनता है नहीं पहनता है एल् .एम्.सी पानी पीता है नहीं पीता है एल् .एम्.सी । बहुत गहराई से मनन हो शरीर को ईश्वर नहीं कहा गया है । मैं, मेरा, मुझे, तू, तेरा, तुझे, वह, उन्हें अष्टमाया को ईश्वर नहीं कहा गया है । उन विचारोंके कारण जो सेकण्ड न्यूज मिलती है अगर कोई आवाज है तो कान की खबर है विचार जिसकी खबर देते है उस अवस्था को चैतन्य को अपने होने के अहसास को सरश्री ने ईश्वर कहा है । उसे समझें और उस समझ में रहते हुए यह एक्सरसाइज करेंगे । तो अभी ईश्वर एक्सरसाइज करने जाएंगे । मंए का इस्तमाल हमे क्रिया के पहले, क्रिया के बाद या क्रिया करते वक्त करना है । इस समर्पण से जो व्ही. के.पी जहर है वह अमृत बनेगा । तो यह एक्सरसाइज करते हुए जैसेही भजन लगता है अंदर आएंगे । (अगर अर्जेडा मे है तो चाय ब्रेक / सुप ब्रेक की अनाउन्समेंट करे ।) धन्यवाद हॅपी थॉटस् ।

एक्सरसाइज के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । जो एक्सरसाइज अभी हम करके आएँ, उसके बारे में विचारसेवा दें । विचारसेवा । धन्यवाद । कितने खोजियों के साथ ऐसा हुआ कि ईश्वर के बारे में अलग-अलग कल्पनाएँ थीं वे टूट गई ऐसा लगा, वे खोजी हाथ ऊपर करें धन्यवाद ।

प्रवचन (सवाल-जवाब)

प्रवचन का समय- ३४ मि. ४० से.

प्रवचन के पहले -

अभी हम एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रवचन से करेंगे, जिसमें समझ और मंत्र से संबंधित कुछ सवालों के जवाब सरश्री ने दिए हैं, जो हमें समझ और मंत्र को और गहराई में समझने के लिए मदद करेंगे। तो उसे पूर्ण ध्यान से सुनेंगे। तब तक धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. सत्यावी विचारों से कितनी रिजल्ट आएगी।
२. पॉजिटिव थिंकर तो है इस दुनिया में लेकिन टुथ थिंकर कितने हैं तो हमें टुथ थिंकर बनना है।
३. हॅपी थॉट्स का अर्थ है कि मैंने आपको पहचान लिया है।
४. ईश्वर सबसे बड़ा है और सबसे छोटा है।
५. यह शरीर मंदिर है।
६. कोई बुरा कर्म होता है तो वह भी समर्पित करना है क्या तो जवाब हमने समझा कि ऐसी क्रियाओं का भी तुरंत समर्पण करना है।
७. जो भी नकारात्मक बातें दिख रही हैं, वे असल में पॉजिटिव के सपोर्ट में है।
८. मन कभी ज्ञान पर ही डाउट लाता है तो मन के इस ट्रमकार्ड में नहीं उलझना है।

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस्। अभी के प्रवचन में हमने सरश्री उन सभी सवालों के जवाब समझे जो समझ और मंत्र के संबंधित थे। जैसे हमने यह समझा कि सकारात्मक विचारों से इतनी रिजल्ट आती है तो सत्यावी विचारों से कितनी रिजल्ट आयेगी। सकारात्मक सोच रखनेवाले तो है इस दुनिया में लेकिन सत्य की प्यास रखनेवाले कितने हैं? तो हमें टुथ थिंकर बनना है। हॅपी थॉटस् का और एक अर्थ हमने आत समझा है। हॅपी थॉटस् का अर्थ है कि मैंने आपको पहचान लिया है। और पहचान लिया तो फिर प्रतिसाद कैसा आयेगा - व्यवहार कैसा होगा - सब बदल जायेगा। निर्जिव मे भी ईश्वर होता है क्या, इस सवाल का जवाब सरश्री से हमने समझा कि ईश्वर सबसे बड़ा है और सबसे छोटा है। तो हर एक चीज में वही है, सिर्फ चेतना का स्तर अलग है, फ्रिक्वेन्सी अलग है। और हमने यह भी समझा कि यह शरीर मंदिर है। तो जिस खाने से सुस्ती बढ़ती है, तमोगुण बढ़ता है, ऐसा खाना, व्यसन हमें नहीं करना है। अगला सवाल था कि कोई बुरा कर्म होता है तो वो भी समर्पित करना है क्या? तो जवाब हमने समझा कि ऐसी

क्रियाओं का भी तुरंत समर्पण करना है । क्यों की व्यक्ती को धागे का एक सिरा मिल गया की वो पूरा रिल खिंच लेता है । तो सभी क्रियाओं का ईश्वर को समर्पण करना है । प्रार्थना करे या ना करे तो यह बिलकुल नहीं कहा गया है की न करे । यही समर्पण हो की ईश्वर प्रार्थना कर रहा है । और प्रार्थना हमें बदलती है, प्रार्थना से विश्व की सकारात्मक चिजें हमारी तरफ आकर्षित होती है । हमने ये भी समझा की जो भी नकारात्मक बातें दिख रही है वो असल में सकारात्मक के सपोर्ट में है । व्हाइट चॉक के लिए ब्लैक बोर्ड चाहिये । हॅलीकॉप्टरके अँगलसे देखेंगे , लेखक की अँगलसे देखेंगे तो तो पकड़ में आयेगा की सब चीजें बनाने के पिछे कारण है , सभी चिजे पॉजिटिव के सपोर्ट में है । मन कभी ज्ञान पर ही शंका लाता है तो मन के इस ट्रम कार्ड में नहीं उलझना है । इस प्रवचनसे हमारी और स्पष्टता बढी होगी । यह सवाल शायद हमें न भी आये हो पर इसके जवाब जो हमने सूने उससे मंत्र का , समझ का इस्तमाल जीवन में करना हमारे लिये और सहज होगा ।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें ।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद ।)

प्रवचन (माया सत्य मेडिटेशन)

प्रवचन का समय- १५ मि. ५२ से.

प्रवचन के पहले -

सरश्री ने हमें अलग-अलग तरीके से गाईड किया किसी और से हु आर यु पूछवाया । अब उसी का अगला पार्ट हम समझने जा रहे हैं । तो अभी इस समझ के साथ दूबारा हम हु आर यु यह एक्सरसाइज करने जा रहे हैं, जिसमें इस बार प्रवचन के व्दारा सरश्री हमें सवाल पूछेंगे और हमें खोजी बनकर जवाब देने हैं । जो भी क्रिया करेंगे उसमें सहजता हो, जिसमें कोई तणाव लेकर कोई एकाग्रता करके जानबूझकर एकाग्र करके नहीं करना है । सहजता से जो होता है उसे होने देना है । तो पूर्ण ध्यान से यह एक्सरसाइज हम करेंगे । अब जो हू आर यू की एक्सरसाइज करेंगे तब पीछे समझ भी है । पहले जब एक्सरसाइज की, सवाल पूछ रहे थे सामनेवाले तब कई बार पकड़ में नहीं आ रहा था क्या जवाब दे । फिर हमने यहाँ खोजियों की विचारसेवा सुनी । वापस उसके उपरांत सरश्री ने एक समझ भी दी अष्टमाया यानी क्या, तेजगुरु फीलिंग यानी क्या, तेजगुरु विचार यानी क्या, आय एम् नॉट जो समझ (अण्डरस्टैंडिंग) मिली उस समझ के साथ वापस यह एक्सरसाइज करने जा रहे हैं । धन्यवाद हँपी थॉट्स ।

प्रवचन के बाद-

अभी हमने फिर से हु आर यु एक्सरसाइज की । अभी हमने जो एक्सरसाइज की तो समझ के साथ की । तो कुछ खोजियों को यह एक्सरसाइज अभी ज्यादा क्लिअर हुई रहेगी । तो इस एक्सरसाइज दौरान क्या-क्या जवाब आए हम शेअर करें ।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें ।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद ।)

प्रवचन (जूते का एक्झाम्पल)

प्रवचन का समय- ११ मि. १८ से.

प्रवचन के पहले -

अभी हम एक छोटासा प्रवचन सुनने जा रहे हैं। चारही मिनटका पार्ट है। जिसमें सरश्रीजी एक्सरसाइज देते हैं। जाकर हम आज भी कर सकते हैं, कल भी कर सकते हैं, कभी भी कर सकते हैं। मगर आज हम समझकर लेंगे। तो एक छोटासा पार्ट हम सुनते हैं फिर ब्रेक लेते हैं। तब तक के लिये धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। कितने खोजी एक्सरसाइज करना चाहेंगे? बहुत बढ़िया। तो जब भी हम बाहर जाएँगे एक्सरसाइज कर कर देखें। यहाँ पर एरिया चुनकर एक्सरसाइज कर कर देखें। और फिर घरपर हम जाएँगे तो एक स्पेसिफिक समय सुबह शाम उस समय को लेकर जरूर हम उस एक्सरसाइज को करकर देखें। पृथ्वी के उस इएमएसवाय को छूकर प्रेम मौन आनंद कहकर जाप करते हूँ हम करकर देखें। कई सारे खोजियों ने करकर देखा है और उनको मिरॅक्युलस रीझल्ट्स आए। तो आप सभी भी उसका आनंद ले सकते हैं। तो बाहर जाएँगे, ब्रेक है, बाहर जाकर तुरंत हम अंदर आएँगे। एक अंतिम पड़ाव छोटासा उसका हम आनंद लेंगे। धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

एक्सरसाइज के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। विचारसेवा दें कुछ खोजी जो कर पाए जूतेके नीचे लिखनेवाला एक्सरसाइज। कितने खोजी कर पाए हाथ उपर करें। हाँ, तो विचारसेवा दें एखाद खोजी। विचारसेवा। जूतेपर पॅटर्न लिखनेसे वह निगेटीव्हीटी पृथ्वी के एमएसवाय में अंदर जा रही है। तुरंत एक्सरसाइज करनेके लिये धन्यवाद। पहली बार डर निकला और हम बोल पा रहे हैं तो रिझल्ट तुरंत हम देख पा रहे हैं। हम जो कर कर देखे तो उसका रीझल्ट आएगा।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।

अगर अर्जेडा में है तो,लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आर्येंगे। ब्रेक का पुर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

प्रवचन (लकीर के फकीर)

प्रवचन का समय- ५७ मि. ३५ से

प्रवचन के पहले -

हम आगे बढ़ते हैं। ऐसे कितने खोजी हैं जो चाहते हैं कि हमारा जीवन बहुत अच्छा हो जाये, अच्छा है बहुत अच्छा हो जाये, वे हाथ उपर करें। धन्यवाद। कितने खोजी चाहते हैं कि हमारे रिश्ते सुधर जायें, वे हाथ उपर करें। धन्यवाद। कितने खोजी चाहते हैं कि हमारा स्वास्थ्य और बेहतरीन ढंग से सुधर जायें। धन्यवाद। कितने खोजी चाहते हैं कि हमारा जीवन सीधा, सरल और शक्तिशाली हो जायें। धन्यवाद। कितने खोजी चाहते हैं कि भुतकाल में हमने किसी को कुछ बोल दिया है, किसीको बोलते हैं हम और बाद में गिल्ट आता है, अपराधबोध होता है कि ऐसे नहीं बोलना चाहिए था। जीवनभर लेकर घूमते हैं वह। ऐसी घटना को याद करते हैं और दुःखी होते हैं। ऐसे कितने खोजीयों के साथ होता है वे हाथ उपर करें। धन्यवाद। तो अब इन सभी के लिए एक सिंपल सोल्यूशन मिलनेवाला है। ऐसा संदेश हम सुनेंगे जिससे जिसकी जो भी दिक्कत है वह सॉल्व होनेवाली है। ऐसा हो सकता है क्या? हाँ, ऐसीही एक सीधा, सरल रास्ता है जिसके साथ हम इतनाही सीधा सिंपल पार्ट करनेवाले हैं। हुआ ऐसा था कि पिछले मई महिने में सरश्री ने एक ऐसा संदेश दिया जो हायर ग्रुप के लिए दिया था। वह देने के बाद लोगों में इतने सुंदर रिजल्ट्स आये कि जीवन का हर आयाम बहुत आसानी से गुजर पायें, बहुत खुशी से निकल पायें उससे। तो फिर बात आयी कि महाआसमानी के खोजी भी उसका लाभ कैसे ले सकते हैं। तो सरश्री के मार्गदर्शन के साथ जो देड घंटे का प्रवचन था उसको एडीट किया। तो आप सभी भाग्यशाली हैं ऐसा हायर ग्रुप का संदेश सुनने को मिल रहा है। उसमें ऐसी कुछ बातें हैं जो हमें तुरंत रिलीफ करेंगी। तुरंत हम कर पायेंगे। और जो हम सुननेवाले हैं वह दो दिन यहाँपर प्रॅक्टिस भी करनेवाले। कुछ भी होता है तो हमें करना क्या है उसकी प्रॅक्टिस हम करनेवाले हैं यहाँपर। तो आइये हम ऐसा पार्ट सुनते हैं जो जीवन के हर पार्ट का सोल्यूशन है। जो भी बंधन बंधे हैं, जिन भी कारण से हम अटके हुए हैं उन सबसे मुक्ती पाने का रास्ता हमें मिलता है। तो आइए पूर्ण ग्रहणशीलता के साथ हम सुनते हैं। संदेश के अंत में हम ध्यान भी करनेवाले हैं और फिर विचारसेवा भी देंगे। धन्यवाद, हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। अभी हमने एक महत्वपूर्ण प्रवचन सुना जिसके साथ एक समझ हमने पायी और जो माफ कर पाये तो कुछ खोजी जरूर विचारसेवा दें कि क्या अनुभव रहा। विचारसेवा। और यह भी समझ रहे हम कि माफ क्यों कर पा रहे हैं। माफी करके हम अपने अंदर क्या पानेवाले हैं वह भी जरूर शेअर करें। विचारसेवा। तो औरों को माफ करके हमें अंदर जो शांति मिलती है, सुकून मिलता है, उसके लिए हम माफ कर रहे हैं। और बताया क्या कि उस इंसान को अपने आँखों के सामने लाकर मन ही मन हमें माफी मांगनी है। हम कर पाये जाकर वह तो अच्छी बात है मगर पहला स्टेप तो हो हम मन में तो माफी मांग पाये। विचारसेवा। सामनेवाला कुछ करें तो हम कॉन्शियसली अनकॉन्शियसली कुछ बोलही देते हैं। अरे ये पागल है इसने ऐसे कैसे किया, इसको इतना भी नहीं समझता है क्या। तो हम जानते नहीं हैं कि इतनी छोटीसी बात से जो फिंगरप्रिंट बनता है, जो लकीर, जो अनकॉन्शियसली बंधन बनता है और फिर वह हमें तकलीफ

देता है। दिनभर में हर पल हम कर पाये तो अच्छी बात है वर्ना तो रात की तो उन लोगों को बुलाकर माफी मांगेंगे। सुबह से लेकर रात तक जो लोग हमारे सामने आये, किन लोगों को हमने विचारों में तकलीफ दी, पर्सन सामने नहीं है मगर उसके बारे में हमने कुछ सोच लिया तो इन सभी बंधनों से हम मुक्ती पा सकते हैं। कर्म बंधन की थेअरी कितने लोगों ने सुनी थी, वे हाथ उपर करें। धन्यवाद। कर्म के साथ बनता है। लेकिन खुबसुरत बात क्या है की बहुत सिंपलसा रास्ता सरश्रीने बताया है। इन बंधनों से मुक्ती कैसे पा सकते हैं। हम मोक्ष के रास्ते पर चल रहे हैं तो उनसे मुक्ती कैसे पा सकते हैं। तो एक आसान रास्ता हमें मिला है, केवल हम करें और माफ करने से सारी बातें सुलझ सकती हैं। विचारसेवा। कितने ऐसे खोजी जो पास्ट में माफ नहीं कर पाये थे मगर आज कर पाये, वे हाथ उपर करें। विचारसेवा। हमें माफ क्यों करना है या माफी क्यों मांगनी चाहिए इसका लिए और भी क्लिआरिटी हम रविवार को सुननेवाले हैं, जो इस प्रवचन का स्टार्ट है। जितना भी आज हम समझ पायें ताकी दो दिन हम बैठ पाये। और इसके साथ कई सारे ध्यान आये हैं। २० से २२ प्रवचन अलग अलग आयाम से सिर्फ इसी टॉपीक पर सरश्रीने दिये हैं। जो गहराई हम इसी टॉपीक पर पायेंगे ताकी हर कोने से मुक्त हो पायेंगे। लेकिन यह चलाने के लिए अभी समय भी नहीं है और वह हमारा टॉपीक भी नहीं है महाआसमानी शिविर में। मगर एक आयाम है जो हमें मुक्ती दिला सकता है। क्योंकि प्राथमिक स्टेज में जब हम मोक्ष की तरफ चलते हैं तो उसके पहले हम अटके हुए रहते हैं, इन संसार के बंधनों से, रिश्तों के बंधनों से, शरीर के बंधनों से। विचारों में चलता कुछ चलता है की ये ऐसा क्यों करते हैं। इनसे पहले मुक्ती पाते हैं ताकी अंदरसे जब हम साफ होते हैं तो आगे की यात्रा हम अच्छे ढंग से कर पाते हैं। वह जानने के लिए एक छोटासा प्रयास हम यहाँपर करते हैं। विचारसेवा। तो और वापस नयी लकीरे नहीं बनायेंगे। सरश्री क्या बता रहे हैं की बैठे बिठायें हमने बहुत सारे बंधन बांध लिए, बैठे बिठायें हम क्यों बंधन बांधे। शिविर में आये हैं और कोई बोलेगा की ये ऐसा क्यों खाना खा रहा है, ये ऐसा क्यों खरटि लेता है, ये ऐसा क्यों बैठता है, ये ऐसा क्यों हँसता है। तो हो क्या रहा की सरश्री बताते हैं की हम शिविर में आये अकेले और जा रहे हैं तो इतने सारे लोगों को साथ में लेकर जा रहे हैं। इसने ऐसा क्यों किया, इसने वैसा क्यों किया तो इन सारे लोगों को यहाँपर ही माफ करें। जब जब यहाँपर मौका मिलेगा हमें, मन में विचार उठा तो तुरंत कहेंगे कृपया मुझे माफ करो, मैंने आपके लिए यानी सामने के मित्र के लिए जो किया उसके लिए मुझे माफ करें। विचारसेवा। इन सभी बातों को जितनी गहराई से अंदर लेते हैं और निरंतरता से उसकी प्रक्टिस करते हैं, उस प्रॅक्टिस के साथ में बड़ा आसान होता है क्योंकि समझा है हमने। यहाँपर बायहार्ट कुछ नहीं किया हमने। बैठकर समझ प्राप्त कर रहे हैं। समझ क्या है की माफ करना क्यों जरूरी है, उससे हमने क्या फिलींग प्राप्त की उन्हें माफ करके हम अपने अंदर शांती महसूस कर रहे हैं, आनंद महसूस कर रहे हैं। हमेजीवन में शांती आनंद चाहिए तो हम जरूर वह प्रयास करेंगे। भूल गये तो फिरसे अपने आप को रिमांडर देना है क्योंकि बचपन से लेकर अब तक मनोशरीर यंत्र की जो भी उम्र है, इतने साल एक अलग पॅटर्न के साथ जीवन जीया है। अभी हमने नया समझा है तो उसको भी थोडा समय देना है, ध्यान देना है, जब तक वह स्वतःही अंदर से आने लगे। होता है यह, लाखों के साथ हुआ है तो हमारे साथ भी जरूर हो जायेगा। तो हम जिस विश्वास के साथ जिस श्रद्धा के साथ बैठे हैं तो वह उसका रिझल्ट देनेवाला है। तो लकीर के साथ जो हमने सुना है, समझा है, तो जब भी बाहर जायेंगे तो कुछ भी होता है तो लकीर को कैसे साफ कर सकते हैं, जो भी घटनाएँ होती हैं तो हम तुरंत माफ करे। वह लोग हो या वस्तु नॉन लीविंग हो तो उन्हें भी हम कैसे माफ कर सकते हैं, तो यह प्रयोग हमें यहाँपर कर कर देखना है। जितना हम कर पायेंगे उतना हम घर जाकर भी कर पायेंगे। प्रॅक्टिस यहाँपर ही करनी है। महाआसमानी शिविर में यहाँपर ही

दो दिन प्रॅक्टिस होती है मन को एक अलग हॅबीट पडती है। इस वजह से ही हम मोबाइल भी लेकर रखते है वर्ना तो रूटीन में वही चलता है तो वह फरक नहीं आता है। जब हम विगसरसली करते है तो वह रिझल्ट जरूर देख पायेंगे। और हर दिन रात को ९.४५ बजे ध्यान करेंगे। सुबह एक ध्यान करते है तो रात को हम लकीरों के साथ ध्यान लगानेवाले है। ध्यान कैसे करेंगे तो अपनी अपनी गद्दी पर बैठकर करेंगे, जो बहुत थक गये है तो वे लेटकर कर सकते है। मगर कोशीश बैठकर करने की करें। दिन जो भी हुआ है उन्हे माफ करके फिर हम आराम से सो जायेंगे। तो ९.४५ बजे ध्यान लगानेवाले है। उसका लाभ लेंगे।

सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करे ।

अगर अर्जेडा में है तो,लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाईज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आयेंगे । ब्रेक का पुर्ण लाभ लेंगे,धन्यवाद ।)

प्रवचन (फन्नी ड्रेस)

प्रवचन का समय- २४ मि. ४१ से.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । एक ऐसी एक्सरसाइज की तरफ हम बढ़ रहे हैं। हम जानते हैं कई सारे एक्सरसाइजके साथ कुछ समझ हम प्राप्त करते हैं। हम जानते हैं सरश्री हँसते हँसाते हमें ज्ञान देते हैं, तो अभी एक संदेश हम सुननेवाले हैं जहाँपर हँसते हँसाते सरश्री हमें एक झू में लेकर चलते हैं। उस झू में अलग अलग प्राणियोंके साथ अलग अलग पंछियों के साथ हमें कुछ समझाते हैं। तो वो समझाते समझाते जीवन के कुछ पड़ाव हमें पता चलते हैं कि इन्सान के जीवन में दुःख है तो दुःख का कारण क्या है? ऐसी कौनसी मूल मान्यता है जिस वजह से दुःख आता है? ये संदेश उन लोगों के लिए सबसे बड़ा वरदान है जो अपने आपको किसी भी कारण से स्वीकार नहीं कर पाते हैं। हो सकता है किसी का रंग काला है, हो सकता है किसी की हाइट छोटी है । हो सकता है किसी को चष्मा है, तो भी इन्सान अपने आपको स्वीकार नहीं कर पाता है। हो सकता है कोई चार लोगों में बात नहीं कर पाता है। हो सकता है ऐसा कि इन्सान के बाल है वे कम हैं जिस वजह से वो लोगों में इन्फीरीयर फील करता है। कोई भी कारण हो सकता है जिस वजह से अपने आप को स्वीकार नहीं कर पाता है। अज्ञान रहता है उस वजह से इन्सान अपने आपको स्वीकार नहीं कर पाता है और पूरा जीवनभर दुःख के साथ जीता है। तो ऐसे जो भी अज्ञान के कारण, जो भी कमियों के कारण अपने आपको हम स्वीकार नहीं कर पाते हैं तो ये संदेश हमें वह स्वीकार करवाता है। हर शिविर में ऐसे लोग रहते हैं फिर वे शेअर करते हैं तो वे अपने आपको स्वीकार कर पाए। फिर हम ये भी जानेंगे कि इन्सान के जीवनमें आज अगर दुःख है तो दुःख का कारण क्या है? क्यों दुःख है? हमें आगे करना क्या है इसका भी पता चलता है। तो ऐसी अनगिनत चीजें हमें एक छोटेसे संदेश में पता चलती है। सुंदरसी एक्सरसाइज है। इस एक्सरसाइज को हम बाहर जाकर करेंगे। तो इस संदेश में भी हम बहुत हँसते हैं। और खास करके बाहर एक्सरसाइज के लिये हम जब जाते हैं तो भी बहुत हँसते हैं। पर हँसना है सभी को मगर वो ज्ञान की आँच की हँसी होगी। कुछ तो हमने समझा है उस वजह से हँसेंगे। किसी को चिडाने के लिये, किसी की छेडकानी करने के लिए, किसी की मस्ती मजाक करने के लिये बिल्कूल नहीं हँसनेवाले हैं। क्योंकि जो चीज है उसका आनंद भी लेना है मगर समझ के साथ लेना है। ऐसा नहीं है कि हमारा पॅटर्न है, संस्कार हैं, किसी को अपनीही गलत आदतें बताने की हॅबिट, कोई मिला नहीं तो कोई सूत स्टेशन में अटक गया तो इन्सान अटक जाता है ऐसा । तो उसके लिये ज्ञान नहीं हैं। हम यहाँपर आए हैं तो एक उच्चतम चीज को लिए आए हैं, ना टाइमपास करने के लिये आए हैं। तो जैसे यहाँपर हम सुननेवाले हैं। तो अंत में जब हम बाहर जाएँगे उस आनंद को जरूरलेंगे मगर समझ क्या ? उस ज्ञान की आँखके साथ हँसी होनेवाली है। तो आइये हम बड़ाही मजेदार पार्ट है उसको सुनते हैं। फिर एक्सरसाइज के लिये जाएँगे। तब तक के लिये धन्यवाद हॅपी थॉटस् ।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । यह प्रवचन सुनने के साथ अभी हम क्या करनेवाले है तो सारे फन्नी ड्रेसेस बाहर जायेंगे एक्सरसाइज करके आयेंगे । क्या एक्सरसाइज करनी है इस ब्रेक में की जो शरिर मिला है वह कैसा फन्नी है । तो हम अपना फन्नी ड्रेस भी देखेंगे और औरो का भी देखेंगे । बाहर धुंद में क्या क्या प्रकट हुआ है वह भी जाकर देखकर आयेंगे । तो बाहर

जाओगे अपने शरीर को देखोगे, हाथ देखोगे, बाहर का नजारा, पेड़, पहाड़ देखोगे और देखते देखते इस समझ के साथ आपको मजा की धुंद में ईश्वर की कैसी लिला प्रकट हुई है, कैसा आनंद प्रकट हुआ है। और फिर एक्सरसाइज कर कर जब आर्येंगे तो आकर विचारसेवा करेंगे। तो जैसे बताया की बहुत हसते खेलते सरश्री बड़ी मान्यताओं पर प्रहार करते हैं यह इस एक्सरसाइज को अनुभव करके समझ में आयेगा। कोई कहेगा की मैं अपने आप को स्वीकार नहीं कर पा रहा था मैंने स्वीकार करना शुरू कर दिया, मेरा दात ऐसा है, मेरा चेहरा ऐसा है तो मुझे बिलकुल पसंद नहीं है तो पता क्या चलेगा की यह तो फन्नी ड्रेस है। तो एक्सरसाइज करके आये फिर विचारसेवा देंगे धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

(अगर अर्जेंडा मे एक्सरसाइज केसाथ सूप / चाय है तो, उसकी भी अनाउन्समेंट करे।)

एक्सरसाइज के बाद -

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंटस-

१. एक ही चीज की बात चल रही है वह है अनुभव।
२. एक ऐसे ज्ञान को लेने के लिये हमने हमारे जीवन के कुछ समय की इन्व्हेस्टमेंट की है जो हमें सिर्फ इस जीवन में नहीं बल्की जीवन के बाद में काम में आनेवाली है।
३. सही गुरु जीवन में आये हमारी ही प्रार्थना थी की ईश्वर दर्शन हो बस उसी प्रार्थना के कारण आज हम यहा पर है।
४. कैसे यह फन्नी ड्रेस हर एक को मिला है, वह मिला है यह एक कृपा है बाकी फिर अभी यह फन्नी ड्रेस कैसे भी हो उसका होना मात्र काफी है।
५. एक्सरसाइज पर विचारसेवा

सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। तो विचारसेवा दें, हम बाहर जाकर एक्सरसाइज कर कर आये हैं, तो क्या अनुभव रहा है। विचारसेवा। और कौनसे खोजी है जो अपने जीवन में बातें स्वीकार नहीं कर पा रहे थे और वो स्वीकार कर पाये अभी वे हाथ उपर करें। और उनमें से खोजी विचारसेवा दें की क्या ऐसी बात थी, क्योंकि यह महत्त्वपूर्ण टॉपीक है कई सालों के साथ लोग परेशान रहते हैं। किसी शिविर में ऐसे हुआ था की एक महिला शिविर में आयी और उसने विचारसेवा दि। कौनसी बात उसे परेशान कर रही थी और लोग जादा परेशान कर रहे थे की उसकी हाइट बहुत कम थी और उसके पती की हाइट जादा थी। तो केवल उसकी हाइट छोटी है यह उसके परेशानी का कारण था। जिस वजह से वे साथ में बाहर भी नहीं जाते थे, इतने परेशान होते थे। वह बात उन्होने इस शिविर में स्वीकार की। तो ये कोई कारण नहीं है परेशानी का। जिसकी वजह से इंसान उम्र भर कितने आनंद से दूर रह सकता है। तो ऐसी कौन-कौनसी बातें हम स्वीकार कर नहीं पा रहे थे और स्वीकार कर पाये वह विचारसेवा दें। विचारसेवा। तो ऐसे जितने भी खोजी जिन्होने विचारसेवा दी, नहीं दी मगर मुक्ती चाहते हैं। कोई लोग विचारसेवा नहीं दें पाते हैं यहाँ पर। मगर जो भी कारण हो, जिसकी वजह से दुःखी होते हैं और आपने आपको स्वीकार नहीं कर पाते हैं। कोई आँख के कारण से, कोई बाल के कारण से, जो भी कारण हो, तो सभी खोजी अपनी जगह पर खड़े हो जाय। जो भी मुक्ती का आनंद लेना चाहते हैं, वे सभी खड़े हो जायेंगे। उनके लिए एक पंक्ती है जो उन्हें जोरसे बोलनी है। बैठे हुआ खोजी बोलना चाहते हैं तो बोल सकते हैं। लेकिन विशेष करके वे लोग जो इन सभी बातों से मुक्ती चाहते हैं वे तो जरूर बोलेंगे। शरीर का कोई भी एक पार्ट ठीक नहीं है, जिस वजह से लोगों को परेशानी होती है, जिस वजह से लोगों को तकलीफ लगती है, कई बार डिपेन्डेंट बन जाते हैं। एक पंक्ती है जो बोलकर हम अपने आपको बोलकर बताएँगे, मेरे पीछे बोल सकते हैं - आय लव माय सेल्फ, आय अक्सेप्ट माय सेल्फ, मैं जैसे भी हूँ, मैं अपने आप को स्वीकार

करता हूँ। आय लव माय सेल्फ, आय अक्सेप्ट माय सेल्फ, मैं जैसे भी हूँ, मेरा हाथ, मेरा पैर, मेरे बाल, मेरी हाइट जो भी है, जैसे ईश्वर ने दिया है मुझे, आय लव माय सेल्फ, आय अक्सेप्ट माय सेल्फ, मैं अपने आपको बहुत प्यार करता हूँ। आय लव माय सेल्फ। सभी अपनी जगह पर बैठे। तो अभी शरीर के साथ एक समझ है। इसे एक उदाहरण से समझेंगे। यहाँ पर सामने दो टेबललैप्स (दिया) रखे हैं। एक टेबललैप है वह बहुत सुंदर है। उसके बाहर का सुंदर रूप है, बहुत अच्छा लग रहा है। दूसरा एक टेबललैप है, उसका एक हँगर टूटा हुआ है। उसकी काँच थोड़ी निकली हुई है। उसका स्टैंड ठिक नहीं है। तो इन दोनों में से आप कौनसा पसंद करोगे? वही पसंद करोगे, जो बहुत अच्छा दिख रहा है। मगर असलियत अगर बताएँ कि जो बहुत अच्छा दिख रहा है वो जलता नहीं है। और जो अच्छा नहीं दिख रहा है, मगर जल रहा है, लाईट दे रहा है। तो ईश्वर ने यह शरीर दिया है, जैसे भी है। मगर इस शरीर में अपना अनुभव करने के लिए शरीर दिया है तो यह कितनी बड़ी कृपा हुआ है। वर्ना तो अनुभव यहाँपर भी है, यहाँपर भी है। क्या इस अनुभव को अपना अनुभव हो रहा है? नहीं हो रहा है ना, तो इस स्पेस में भी अनुभव है, मगर इस अनुभव को अनुभव कौन कर पा रहा है। तो ये शरीर मिला है, इस शरीर के साथ ही हम अनुभव को अनुभव कर पा रहे हैं। ईश्वर को अपने अंदर महसूस कर पा रहे हैं। शरीर भी मिला है, ज्ञान भी मिल रहा है और जिंदा भी है तो और क्या चाहिए हमें। इसके अलावा और किसी चीज की जरूरत नहीं है। इन्सान का शरीर मिलना सबसे बड़ी कृपा है। कितने ऐसे लोग हैं जिनका दाँत टूटा हुआ है, बाल कम हैं मगर उससे कुछ फरक पड़ा है क्या अनुभव लेने में? नहीं पड़ता है। जिंदा है, उसकी खुशी है, कितना आनंद है। वही बड़ी बात है। तो अपने शरीर को प्रेम करो, पूरे शरीर पर से हाथ घुमाओ और कहो आय लव माय सेल्फ। कितने लोग ऐसे कर पाते हैं, अक्सर हम दूसरों को देते हैं, खुद को नहीं देते हैं कभी। अपने हर अंग को प्रेम भरा स्पर्श दो, प्रेम मौन आनंद का स्पर्श दो। हर दिन सुबह उठकर बच्चों जैसा खुद को प्रेम दो - आय लव माय सेल्फ, आय अक्सेप्ट माय सेल्फ। उसको भी प्रेम चाहिए तो वह फलेगा, फुलेगा। वर्ना तो हम दूसरों से अपेक्षा करते हैं किसीने तो बोलना चाहिए, किसीने तो प्रेमभरा हाथ लगाना चाहिए। अपने आप को हम सकते हैं क्या नहीं? तो इतना ही आसान है। जो लोग स्वीकार नहीं कर पा रहे थे, किसीने कुछ कहा तो फिरसे दुःख आयेगा क्या कभी? तुम्हारी हाइट कम है, कम है तो अच्छी बात है ना, जिंदा हूँ यह क्या कम है क्या? तो ये बोल पाओगे। बाल कम हैं, तो उसमें क्या बड़ी बात है। नहीं है तो उससे कुछ रुकता नहीं है, नहीं है तो भी चलता है। लोग अंग्रेजी बोल नहीं पाते हैं, इसलिए हमेशा डरे डरे हुअे रहते हैं। तो बड़े बड़े बिज़नेस मन देखो, कितना इंग्लिश आता है उन्हें। नहीं आता तो भी काम चलता है। जपान में जाकर देखो कितना इंग्लिश आता है उन्हें। ऐसे कुछ अनपढ़ लोग भी हैं, जिन्हें कुछ भी नहीं आता है मगर बहुत बड़ा बिज़नेस किया है उन्होंने। ऐसे भी कुछ लोग देखें होंगे की पूरे हाथ पैर कटे हुअे हैं, इंटरनेट पर विडीओ देखने को मिलता है, हाथ-पैर कटे हुअे हैं फिर भी वह ऑक्टिंग करता है और लोगों के लिए निमित्त बनता है। सब लोग उनको देखने के लिए जाते हैं, उनको सिर्फ बाँडी है और हेड है। कितनी बड़ी प्रेरणा है, उसको तो कुछ नहीं हमको तो सब मिला है ना। तो क्यों डर, क्यों दुःख होना चाहिए। छोटी मोटी कमी है तो वह कमी कमी रहती नहीं है। अब के बाद कितने लोगों को दुःख आयेगा क्या किसीने कुछ बोला तो हाथ उपर करें। धन्यवाद। अपने आपको स्वीकार करना है। किसीने प्रेम दिया नहीं दिया, सरश्री बताते हैं की हम अपने आप में काफी हैं प्रेम देने के लिए। किसी को दे सकते हैं तो अच्छी बात है। लोगों को उल्टा देना चाहिए। देने के लिए मैं अकेला काफी हूँ, मुझे भरपुर दिया है सरश्रीने। तो जो भी दुःख है, डर है उसके साथ एक्सरसाइज भी दि है। कितनी बड़ी कृपा है, कितना सारा मिल रहा है। लकीरे बनती हैं तो तुरंत माफी भी मांगनी है, कुछ होता है तुरंत अपने आप पर जा सकते हैं। ये सारी बातें मिली हैं हमें, कितनी कृपायें हो रही हैं, उसपर हमारा ध्यान रहे। ये सब हमने इसके साथ समझा। फिर सफेद बटन, गोल्डन बटन, काले बटन के साथ क्या समझा है वह कोई विचारसेवा दें। विचारसेवा। सफेद बटन, काले बटन यानी सिंपलसी बात है की हम सकारात्मक विचारधारा रखें। वर्ना तो हम निगेटीव थीकिंग करते हैं और उससे काले

बटन अक्टूरेक्ट होते हैं जीवन में। फिर इंसान बोलता है की दुःख क्यों है, मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है। क्योंकि कभी तो भी काले बटन दबे हैं जीवन में। जिस वजह से यह रिझल्ट आया है। और कब दबते हैं यह भी पता नहीं चलता। विचारसेवा। धन्यवाद। और काले बटन कब दबते हैं। जब दुःख होता है तो परेशान होते हैं क्यों जीवन में दुःख है। मगर हम जानते नहीं हैं की जानते अजानते काले बटन दबाते हैं। बहुत बार ऐसा होता है की दो महिलाएँ बैठी हैं और बातचीत कर रहे हैं तीसरे की, तो काले बटन दबाने का काम है। ऑफिस में, टी ब्रेक में आपस में जेन्टल् मिलकर बॉस के बारों में बात कर है तो काले बटन दबते हैं। ग्रुप मिला है, किसी की छेड़खानी करते हैं तो काले बटन दबते हैं। तभी लगता नहीं हमें, तभी लगता है की बहुत अच्छा जोक कर लिया। मौन का पालन करने के लिए कहा है और नहीं करते हैं। तो काले बटन दबते हैं। ऐसा होता है। जीवन में दुःख आता है, तो हमें लगता है की क्यों दुःख आया है। आयेगा ही, क्योंकि हमने ऐसा किया है। तो चलो आज तक जो भी किया हमने, आज तो हमें पता चला है। तो हमेशा सफेद बटन दबायें और कोशीश हमारी गोल्डन बटन की हो। मुझे तेजसत्य चाहिए के साथ है तो गोल्डन बटन के साथ है। तो सदा गोल्डन बटन की कोशीश रहे। और जितना होता है उतनी हम पॉजिटिव थिंकिंग करें। पॉजिटिव थिंकिंग के साथ आनेवाला सीन भी वैसे ही आयेगा। तो छोटे छोटे दुःख जीवन से निकल जायेंगे। आज हमें मालूम पडा है तो हमारा जीवन बदलें, वह चीजें हम अक्टूरेक्ट करें। वर्ना तो ऐसा करते हैं और हमें मालूम नहीं पडता। बस में बैठे हैं और कंडक्टर के लिए कुछ बोल दिया। आजु बाजु में कोई बैठा है उसके लिए कमेंट पास किया। तो चीजें आती हैं वापस जीवन में लकीरों के रूप में। तो बेटर क्या है की कुछ हुआ है तो माफी मांगेंगे और सदा हमारा ध्यान पॉजिटिव थिंकिंग की तरफ रहे, गोल्डन बटन की तरफ रहे। बाहर हम एक्सरसाइज के लिए गये तो कितने खोजीयों को वननेस का फिलिंग आ रहा था, सब एक है ऐसा लग रहा था, वे हाथ उपर करें। धन्यवाद। विचारसेवा। धन्यवाद। तो जो अज्ञान है, दुःख का कारण है। मैं शरीर हूँ यह अज्ञान है। मैं शरीर हूँ यह अज्ञान है तो किसीने गाली दि तो मुझे गाली दि। किसीने कुछ भी किया तो सब मेरे साथ हो रहा है। तो जैसे ही पता चलता है की मैं शरीर नहीं हूँ, शरीर तो केवल मेरा मित्र है। जो भी हो रहा है वह मित्र के साथ हो रहा है। कल अगर बुखार आता है तो क्या कहेंगे, मित्र को बुखार आया है। सुबह उठकर व्यायाम करना है तो मित्र व्यायाम करनेवाला है, फनी ड्रेस व्यायाम करनेवाला है। मैं उससे अलग हूँ। मैं शरीर नहीं हूँ यह समझ हमें अगला कदम देती है। किसी का प्रॉब्लेम सॉल्व करते हैं या किसी को सलाह देते हैं तो आसानी से करते हैं। और वही समस्या हमारे साथ होती है तो मुश्किल होता। क्योंकि हम उसके अटच होते हैं। बहुत जादा चिपकाव है। इस शरीर के साथ चिपकाव है। मुझे तेजसत्य चाहिए और समझ की ये फनी ड्रेस के साथ हो रहा है ये चिपकाव दूर करता है। जैसे लोग मुझे तेजसत्य चाहिए याद रखते हैं, वैसेही लोग हमेशा के लिए फनी ड्रेस भी याद रखते हैं। क्योंकि कई सारे प्रॉब्लेम सॉल्व होते हुअे दिखते हैं। शरीर के साथ जो दुःख है, दर्द है, परेशानी है, किसीने कुछ बोल दिया है, तो जो भी ये है वह शरीर के साथ है, मेरे साथ नहीं है। मैं शरीर से अलग हूँ, मैं इससे परे हूँ। तो यह समझ इसके साथ मिलती है। तो छोटासा ही संदेश था, मगर उस संदेश में मनन के लिए कई सारे आयाम थे। तो जरूर हम इसके साथ मनन करेंगे।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।

अगर अर्जेडा में है तो, लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आयेंगे। ब्रेक का पुर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

प्रवचन (शरीर बदलकर देखो)

प्रवचन का समय- ११ मि. १८ से.

प्रवचन के पहले -

यहा पर हमने सुबहसे अलग अलग एक्सरसाईज की चाहे वह मुझे तेजसत्य चाहिये यह एक्सरसाईज हो, या हू आर यू हो, या अभी फन्नी ड्रेस का एक्सरसाईज किया हो हर एक्सरसाईज के साथ हम उसी अनुभव का अनुभव कर रहे है । आज के दिन के अंतिम पड़ाव में एक ऐसा ही प्रवचन हम सुनने जा रहे है, जिसके साथ हम आसानीसे उसी अनुभव पर जानेवाले है । इस प्रवचन की शुरुआत में सरश्री कुछ मार्गदर्शन देते है, उसके उपरांत फिर कुछ सूचनाएँ देते है, जैसे जैसे सरश्री से सूचनाएँ आती जाएगी वैसे वैसे उन सूचनाएँ के साथ पूरा खुलकर उस मेडिटेशन को उस अनुभव को हम अनुभव करने वाले है । यह एक्सरसाईज जहाँ तक हम कर पायेंगे हम करनेवाले है । अगर कोई खोजी नहीं कर पा रहा है तो वो आँखे खोलकर यह एक्सरसाईज करे । तो जब प्रवचन शुरू होगा तब हमें आराम से बैठना है । जैसे जैसे सूचनाएँ आते जाएगी उसके साथ हम मेडिटेशन करनेवाले है । तब तक के लिये धन्यवाद हँपी थॉट्स ।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स । (अगर अर्जेडा में है तो विचारसेवा लें) शरीर बदलकर देखो यह गहरी एक्सरसाइज अभी हमने की कुछ खोजी विचारसेवा करें कि शरीर बदलकर क्या लग रहा था । विचारसेवा । धन्यवाद । तो हमने इस एक्सरसाइज से समझा कि इतने शरीर बदलने के बाद स्व का एहसास एक ही था और मैं अलग और मेरा शरीर अलग इसका अनुभव तीव्रता से हो पाया होगा । तो जब-जब मौका मिले यह एक्सरसाइज करके देखनी है । बिमारियों में भी शरीर बदलकर देख सकते हैं । शरीर बीमार है लेकिन अनुभव लेनेवाला तो अलग है, मैं अलग शरीर अलग इस समझ के साथ, अलगाव के साथ देखेंगे तो जीवन बहुत सरल है । तो यह मुख्य शिफ्टिंग हमेंशा ध्यान में रखेंगे ।

सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें ।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/गुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद ।)

प्रवचन (आय एम् ब्राइट राँग)

प्रवचन का समय- ३० मि.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। अभी एक ऐसा प्रवचन हम सुनने जा रहे हैं, जिसमें एक ऑक्शन प्लॅन हमारे लिए है। तो अभी हम एक ऐसा प्रवचन सुनने जा रहे हैं, जो सरश्री ने यहाँ दिया था। एक ऐसा प्रवचन जिसमें सरश्री ने अपने बेस्ट एम. एस. वाय. व्दारा प्रवचन दिया था और बाद में बाजू में एल. सी. डी शुरू था। तो पहला पार्ट सरश्री के बेस्ट एम. एस. वाय. व्दारा आया और कुछ पार्ट पहले ही रेकॉर्ड किया गया था। कोई और जगह पर जिसे स्क्रीन पर दिखाया गया। तो ऐसा प्रवचन जो हम एक साथ एल. सी. डी. पर देखने जा रहे हैं। उसी श्रद्धा से, उसी भक्ति से आगे सरश्री को समझने जा रहे हैं। धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। अभी हमने जो प्रवचन सुना, जिससे समझा कि मैं गलत है। जो व्यक्ति अंदर है, वह गलत है और सरश्री के साथ हमने मैं गलत है कहने की एक्सरसाइज भी की। तो कितनी आसानी से सरश्री ने हमें सूक्ष्म अहंकार की पहचान भी करवाई और उससे मुक्ति भी दिलाई। प्रवचन में सुनी हुई सभी बातों पर मनन हों।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेंडा रेफर करें।

अगर अर्जेंडा में है तो, लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

प्रवचन (रिडल)

प्रवचन का समय- ०३ मि. ४९ से.

प्रवचन के पहले -

आज के दिन का अंतिम प्रवचन सुनने जा रहे हैं । जिस में सरश्री हमें एक पहेली देनेवाले हैं । तो आईये वह ध्यानीसे सुनते हैं । धन्यवाद हॅपी थॉट्स ।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । अभी जो प्रवचन हमने सरश्री से सुना उस में हमने एक पहेली सुनी, जिसपर हमें जरूर मनन करना है । सरश्री ने यह भी बताया की हर जवाब गलत आनेवाला है पर सरश्री ने बताया है की जवाब से ज्यादा महत्वपूर्ण हमारा मनन है तो हर अँगल से मनन हो । तो इस पहेली के साथ आज के शिविर की समाप्ती हम यहाँ पर करने जा रहे हैं । कल सुबह हम इस शिविर की और कुछ महत्वपूर्ण बातों के लिए शुरुआत करने जा रहे हैं तो पूर्ण रूपसे तैयार होकर हम उपस्थित रहे । इसके आगे हर क्रिया के साथ, विचार के साथ समझ आए और मंत्र का इस्तमाल हमें करना है । (अंत में शिविर स्थान, व्यवस्था के अनुसार सत्यआचार्य खाने और सोने से संबंधित सूचनार्य दे ।) धन्यवाद हॅपी थॉट्स ।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें ।

अगर अर्जेडा में है तो,लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे,धन्यवाद ।)

तेजमनन (पहले दिन के अंत में - अगर समय है तो)

सभी कुछ क्षणों के लिए आँखें बंद करके तेजमनन करेंगे। आँखें पूर्ण रूप से बंद हैं और तेजमनन करेंगे जो भी सरश्री ने बताया है। तेजमनन। आइने में क्या दिखाई दे रहा है। तेजमनन करें अपने होने का एहसास, जो सरश्री ने दिया है। तेजमनन करें शरीर बदलते हैं फिर भी क्या चीज अंदर जिंदा थी। उँचाई बढ़ गई, कम हो गई, किसी और का शरीर आ गया, रंग बदल गया फिर भी क्या अंदर एक ही था। तेजमनन करें सरश्री ने प्रवचन में क्या बताया। तेजमनन करें जो आय एम् नॉट समझ मिली। तेजमनन करें जब हम हृदय पर थे, जब कोई हू आर यू पूछ रहा था और अब जो एहसास हुआ तेजगुरु फीलिंग जो हुई, जो अनुभव हुआ अपने होने का। उम्र बदल गई, शरीर बदल गया फिर भी अंदर क्या था जो एक ही था कौन सा एहसास एक ही था। धीरे- धीरे सभी आँखें खोलेंगे। धन्यवाद। उसी अनुभव में रहते हुए अपने होने का अनुभव करते हुए सुबह से जो-जो हुआ वह एक साथ स्क्रीन पर देखेंगे। महाआसमानी शिविर जिसे सरश्रीने समर्पण शिविर कहा है। जिसकी शुरुआत दोपहर से हुई लेकिन उसके पहले हमने देखा कि व्यक्ति का पागलपन क्या है, वी. के. पी. क्या है। तो कई सारे वी. के. पीज के दर्शन सरश्री ने अलग-अलग रूप से करवाया। जैसे कि कोई मुझसे प्रेम नहीं करता, लोग बुरे हैं, मुझसे जलते हैं, मुझ पर विश्वास नहीं करते, पूरी दुनिया मेरे विरुद्ध है। जब भी कोई दो लोग आपके सामने धीरे बात कर रहे हैं तो ये मेरे बारे में ही बात कर रहे हैं। जैसे कि मन क्रेडिट लेता है यह उसने किया, जान बूझकर किया लेबल लगाना वह बुरा है, वह अच्छा है। मेरे लिए सारा षडयंत्र रचा गया है। यानी खुद को डुअर मानना। कलाबाजी चलते रहना। मैं खून के घुँट पीता हूँ खून के आँसू रोता हूँ। गुस्सा आता है बच्चों को क्यों पाला इससे अच्छा तो कुत्ते को पाला होता। इस तरह के वी. के. पी. जो बहुत बड़े वी. के. पी. हैं। आगे जिनसे हमने प्यार किया उन्होंने धोखा दिया। अपून तो ऐसाइच। नफरत, घृणा, डर। आगे बड़े वी. के. पीज के साथ-साथ जो वी. के. पीज आते हैं। घंटी बज रही है और कोई दरवाजा नहीं खोल रहा क्या-क्या विचार आ रहे हैं, क्या कर रहे हैं, सोए है क्या ये सब वी. के. पी. हैं। तारीफ का वी. के. पी. सब आपके वजह से हुआ वरना तो संभव ही नहीं था। आज भी कई सारे तारीफ के वी. के. पी. खोजियों को आए रहेंगे। बोर हो रहा है। इसने ऐसा किया हमने नहीं किया। मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है। बाकी लोगों को देखो कैसे अंदर बिठाया। आगे सूक्ष्म वी. के. पी. टिफिन खोला तो कुछ और ही दिखाई देता है। मन मुताबिक बात नहीं हुई यही चेअर चाहिए थी। ऐसे कई सारे वी. के. पीज, जिसे व्यक्ति का पागलपन कहा गया है यानी जो भी मन की टाँगें हमने तेजगुरु सरश्री से समझी हैं, क्रेडिट लेना, कलाबाजियाँ चलना, कपट करना, लेबल लगाना इन सभी टाँगों में जब भी हम जाते हैं तो वह सब व्यक्ति का पागलपन हुआ। फिर वह सूक्ष्म वी. के. पीज है जहाँ तारीफ हुई थी या बड़े वी. के. पीज यानी घृणा है, नफरत है, गुस्सा है ऐसे सभी वी. के. पीज। वी. के. पी. पर वी. के. पी., ट्रम कार्ड। फिर जो मुख्य बात हमने समझी तेजस्थान हृदय पर ध्यान। दो मुख्य तरीके से हमने समझा उस अनुभव पर कैसे जाना। एक शारीरिक हृदय पर ध्यान जहाँ पर हम हृदय पर गए। पॉकीट की कल्पना की कि वहाँ से कोई खींच रहा है पॉकीट खींच रहा है। वैसे ही उस जगह पर गए वहाँ जो महसूस किया वैसे ही हू आर यू पूछा तब जवाब दिया बुद्धि से जवाब दिए यह मैं नहीं यह मैं नहीं फिर मैं क्या? वह जो अनुभव तेजगुरु फीलिंग जो महसूस की आज सरश्री ने प्रवचन में करवाया कि अलग-अलग शरीर आ गए, अपने होने का एहसास हम कौन यह जो स्पष्ट शब्दों में सरश्री ने बताया। आगे तेजस्थान पर ध्यान यानी क्या यह समझा। आज सरश्री के प्रवचन में एक पंक्ति आई थी, जो मनन करने जैसी

थी आवाज अगर कान के बारे में न्यूज देते हैं, कोई दृश्य अगर आँख के बारे में खबर देते हैं, कोई सुगंध है तो नाक के बारे में खबर देती है, तो हमारे विचार किस बात की खबर दे रहे हैं। असली अध्यात्म को सेकंड न्यूज सरश्री ने कहा। आगे सरश्री से हमने समझा है अष्टमाया यानी क्या। मैं, मेरा, मुझे, तू, तेरा, तुझे, वह, उन्हें। आगे एक समझ मैं हूँ ही। आगे तेज अनुभव तेजगुरु विचार टिचींग, ट्रेनिंग, टेस्टिंग। आज हमने यह भी समझा कि आप शिविर में हो। आगे तीन शब्दों के बारे में बताया वैसे पाँच शब्दों के बारे में बताया पर उसमें से तीन चीजों के बारे में बताया एक कृपा गुरुकृपा हो ही रही है यह समझ में आना एक बहुत बड़ी कृपा है। दूसरा हर चीज का स्वीकार और तीसरा जो हर चीज के लिए निमित्त बनें। आइने के ऊपर शरीर क्यों डाला ताकि जो आइना दिख नहीं रहा वह शरीर की वजह से दिखाई दे। गुरु फीलिंग यानी क्या। अपने होने का एहसास ऐसी कई सारी बातें आई जिस पर जरूर मनन करें। या आगे कुछ नहीं कुछ भी नहीं है यानी क्या इसके लिए आगे और एक पंक्ति सरश्री ने कही अपने होने का एहसास यानी क्या या। तो इन सभी बातों पर मनन करें और दो रिडल्स हमारे लिए है, जिसमें चेहरे बदल गए तो किसे वो लेडी पति कहें। धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करे।

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

સરશ્રી ધન્યવાદ

महाआसमानी शिविर दूसरा दिन

प्रस्तावना

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. पहली पर १-२ शेअरींग लें ।
२. हमने अभी तक मनन किया है कि वी. के. पी. हमारा कौन है और सरश्री हमारे कौन है? हर जगह वी.के.पी. पकड़ में आ रहे हैं ।
३. तन का समर्पण यानी मैं शरीर हूँ इस अज्ञान का समर्पण, मन का समर्पण यानी अहंकार का समर्पण । और धन का समर्पण यानी मेरा है मेरा का भाव मालकियत का समर्पण ।
४. प्रेम प्रतिज्ञा कर रहे हैं तो अपना एक हाथ अपने हृदय पर रखेंगे तेजस्थान पर रखेंगे और प्रतिज्ञा करेंगे ।

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स । महाआसमानी शिविर के अंतिम दिन में हम उपस्थित हैं । सभी नियम और वचनों के साथ शिविर की शुरुआत करेंगे । कभी ऐसा न हो कि इतनी सुंदर बात हम सुनने आए थे और छोटी सी चीज के लिए तेजगुरु की आज्ञा हमने तोड़ दी । कल रात, आज सुबह खुद का फनी ड्रेस जब मिरर में देखा तो कैसे लगा किसी और का फनी ड्रेस देखकर फनी ड्रेस देखकर क्या महसूस हुआ जरूर हम अपने आपको इस फनी ड्रेस से अलग महसूस कर पा रहे होंगे । सरश्री ने दी हुई पहली पर भी हमने मनन किया रहेगा । (अगर समय है तो सत्याचार्य पहली पर १-२ शेअरींग लें ।)

(सत्याचार्य समय है तो ही आगे का टॉक दे- हमने अभी तक मनन किया है कि वी. के. पी. हमारा कौन है और सरश्री हमारे कौन है? हर जगह वी.के.पी. पकड़ में आ रहे हैं । सूक्ष्म वी. के. पी. पकड़े रहेंगे तारीफ के वी. के. पी. पकड़े रहेंगे यानी खुद को डुअर मानना । कलाबाजी चलते रहना । इस तरह के वी. के. पी. जो बहुत बड़े वी. के. पी. है । आगे नफरत, घृणा, डर । आगे बड़े वी. के. पीज के साथ-साथ जो वी. के. पीज आते हैं । आगे सूक्ष्म वी. के. पी. मन मुताबिक बात नहीं हुई यही चेअर चाहिए थी । ऐसे कई सारे वी. के. पीज, जिसे व्यक्ति का पागलपन कहा गया है ।)

तो उसी श्रद्धा के साथ, उसी भक्ति के साथ हम सरश्री को सुनने जा रहे हैं । श्रद्धा के साथ, उसी भक्ति के साथ हम सरश्री को प्रार्थना करेंगे, जिसके लिए सभी अपनी जगह पर खड़े रहेंगे आँखें पूर्ण रूप से बंद हैं । संपूर्ण समर्पण है । मैं शरीर हूँ इस अज्ञान का समर्पण, मन का समर्पण यानी अहंकार का समर्पण । और धन का समर्पण यानी मेरा है मेरा का भाव मालकियत का समर्पण । इस समर्पण के साथ आगे का शिविर हमें सुनना है । तो उस समर्पण के साथ प्रार्थना करने जा रहे हैं, जो प्रार्थना प्रेम प्रतिज्ञा है । प्रेम प्रतिज्ञा कर रहे हैं तो अपना एक हाथ अपने हृदय पर रखेंगे तेजस्थान पर रखेंगे और यह प्रतिज्ञा करेंगे कि जैसे सरश्री आपके सामने हैं । उनके बेस्ट मनोशरीर यंत्र के साथ आपके सामने है । तो पूर्ण भक्ति से, पूर्ण श्रद्धा के साथ, पूर्ण समर्पण के साथ प्रार्थना करेंगे सभी यह प्रार्थना मेरे पीछे-पीछे दोहराएँगे ।

प्रार्थना

हे सरश्री, हम आपके साथ, सत्य के त्रिकोण में, जीवन जीने को तैयार हैं,
हे सरश्री, हमारा श्रवण संगीत होगा, हम संगीत प्रेमी बनेंगे,
हे सरश्री, हमारी सेवा गुलामी नहीं आजादी होगी, हम भक्त बनकर स्व इच्छा से सेवा देंगे,
हे सरश्री, हमारी भक्ति अभिव्यक्ति होगी, हम आपकी बताई हुई, आज्ञा में रहेंगे ।

धन्यवाद । धीरे धीरे सभी अपनी आँखें खोलेंगे जैसे ही सरश्री हमें screen पर दिखाई देते हैं प्रणाम करके हम नीचे बैठेंगे धन्यवाद । हँपी थॉट्स ।

हु एम आय एक्सरसाइज (In Pair in Hall)

सत्याचार्य खोजियों को आमने-सामने बिठाकर उनसे हु एम आय एक्सरसाइज करवाके लें।

प्रवचन (तेजम् भाग १)

प्रवचन का समय- ०९ मि. ३६ से.

प्रवचन के पहले -

अभी हम और एक प्रवचन सुनने जा रहे हैं, जिसमें हम सरश्री से एक कृपा मंत्र समझेंगे। जब भी हम बहुत उलझन में है तब क्या करना चाहिए, जब मंत्र और समझ का इस्तेमाल नहीं हो पा रहे हैं तो क्या करना है यह भी समझेंगे तो पूर्ण ध्यान से सुनेंगे। धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। तो अब जो प्रवचन हमने सरश्री से सुना उसमें यह समझा कि बाकी समय हम जब क्रिया कर रहे हैं या कोई वी. के. पी. आया तो हम सभी बातें ईश्वर को समर्पित करनेवाले हैं। पर जब कभी ऐसा हो कि हम मंत्र का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं, कनफ्यूज है, ऐसे मुड में है जहाँ कुछ सुझ नहीं रहा, सोच नहीं पा रहे हैं, मनन नहीं कर पा रहे हैं, तो हमें क्या करना है तो कृपामंत्र तेजम् का इस्तेमाल करना है। या कोई लंबी क्रिया करने जा रहे हैं जैसे टी.वी देखने जा रहे हैं तो शुरुआत में तो समर्पण क्रिया की ईश्वर टी.वी देखेगा। फिर बीच-बीच में तेजम्, तेजम् यह कृपा मंत्र इस्तेमाल करना है ताकि माया में उलझे नहीं। तेजम् का अर्थ भी हमने समझा। तेजम् यानी तेज मैं। युनिवर्सल आय। उसी अनुभव को तेजम् कहा गया है। (अगर अर्जेडा में मनन ब्रेक है तो सत्याचार्य मनन ब्रेक दे वरना हॉल में ही मनन करवाके लें।) तो अभी कुछ समय हम आँखें बंद करके इन बातों पर मनन करनेवाले हैं। सभी की आँखें बंद हैं। हम अभी से डिसाईड करें कि कब-कब हम इस मंत्र का इस्तेमाल करनेवाले हैं। रोजमर्रा जीवन में ऐसी कौन-कौन सी लंबी क्रिया है होती है जहाँ हम यह कृपामंत्र इस्तेमाल कर सकते हैं, हम मनन करें। जहाँ कुछ कनफ्यूजन है तो हम तेजम्, तेजम् दोहरानेवाले हैं। धन्यवाद।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

प्रवचन (ज्ञेन मास्टर)

प्रवचन का समय- २१ मि. ४० से.

प्रवचन के पहले -

अभी हम एक ऐसा प्रवचन सुनने जा रहे हैं, जिसमें एक कहानी द्वारा हम विचारों के बारे में समझनेवाले हैं। प्रवचन के अंत में एक एक्सरसाइज भी हम करने जा रहे हैं। तो आइए यह प्रवचन ध्यान से सुनते हैं धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

(सत्याचार्य स्टेज पर ना जाते हुए अंदर से ही अनाउन्समेंट करें)

एक्सरसाइज शुरू हो चुकी है। एक्सरसाइज करके हम आएँगे।

(अगर अर्जेन्डा में एक्सरसाइज के साथ ब्रेकफास्ट/चाय/सूप है तो उसकी भी अनाउन्समेंट करे।)

एक्सरसाइज के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। (अगर अर्जेन्डा में है तो ही सत्याचार्य विचारसेवा ले।) विचारोंको देखने की एक्सरसाइज हमने की। जो बाहर एक्सरसाइज करके आए उसमें क्या हुआ उसमें क्या अनुभव आए। उसपे विचारसेवा दे। जहा भी हाथ उपर है वहा माईक दे सकते है। विचारसेवा। धन्यवाद। कई खोजियोंकी अलग अलग विचारसेवा थी किसकी विचारसेवा क्या थी यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण ये है की हमारे साथ क्या होता है। अभी तक चार तरहसे हम उस तेजस्थान पर गए। पहला तरीका हेड अण्ड हार्ट का - मुझे तेजसत्य चाहिये इस पंक्ती के साथ उसा तेजस्थान पर अनुभव पर हम गये। दूसरा तरीका बुद्धिसे जिसमें हु आर यु ? किसीने पूछा। तीसरा, शरीर बदलकर देखो इस प्रवचन से हमने अलग अलग शरीर में वही अनुभव को महसूस किया। उसके बाद चौथा अभी जो विचारोंको देखने के साथ उसी स्थान पर पहुँचे। एक ही अनुभव, तेजस्थान पर अलग अलग वे से हम पहुँचे। तो फिर से जानें कि तेजस्थान पर जाने का

पहला तरीका - मुझे तेजसत्य चाहिए यह एक्सरसाइज

दूसरा तरीका - Who Are You यह एक्सरसाइज

तीसरा तरीका - शरीर बदलकर देखने की एक्सरसाइज

चौथा तरीका - विचारों को देखकर उसी स्थान पर पहुँचना

प्रवचन (तेजम् भाग २ -पाच गलतीयाँ)

प्रवचन का समय- ३८ मि. ५९ से.

प्रवचन के पहले -

अब हम सरश्री से प्रवचन सुनेंगे, जिससे जो आसमानी ज्ञान हमने लिया है, उसपर और स्पष्टता हमें मिलनेवाली है । तो आयिए ध्यानसे हम प्रवचन सुनते हैं, धन्यवाद हॅपी थॉट्स ।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । तो एक बहुत ही गेहरा मार्गदर्शन हमें सरश्री द्वारा इस प्रवचन से मिला है । वाकई कृपा मेहसुस होगी एक एक कदम यहाँ लेकर आए है । वो अनुभव जो पेहले से ही था सिर्फ उसपर जो व्हि. के. पी था, उससे वह अनुभव ढका था, और अभी जो समझ मिली है उससे वह अनुभव, वह आनंद, वह ईश्वरप्राप्ती का एहसास हम कर पा रहे है । इस प्रवचन से हमने यह समझा की व्यक्ति जो चेक करना चाहता है की अनुभव कैसा है, मैं देखू तो यह चेकींग करना ही बाधा है । इस चेकर पर ही अभी डाउट लाना है । यहाँ पर आर्ट ऑफ बिईंग लाईफ सिख रहे है । मात्र होना, जहाँ कोई लेबल नहीं । जहाँ व्यक्ति मर चुका है , जो अपने आप को अलग मानता है । जहाँ सिर्फ जीवन बन चुके है । फिर हमने समझा की जब पजहाँन होती है की व्हि. के. पी आया है तो क्या करना है, तुरंत क्रियाए समर्पित करनी है । ईश्वर कर रहा है, सामने भी ईश्वर है, जो भी हो रहा है ईश्वर के साथ हो रहा है । समुंदर मंथन की अँनालाँजी हमने सुनी, जिससे समझा की पहाड शरीर का प्रतिक है । साँप इंद्रियाँ का प्रतिक है । तो इस सब प्रक्रिया में जहर बन रहा है या अमृत । हर क्रियाओं के समर्पण के साथ हमें अमृत बनाना है । फिर कुछ गलतीयाँ हमने सुनी जैसे पेहले गलती क्या होती है की क्रियाओं के समर्पण हुआ और हम केहते है के ईश्वर के साथ हुआ लेकिन आज मुझे रिझल्ट नहीं आयी । तो मुझे यानी किसे ? तुम कहाँ से आए ? यू आर नॉट देअर । दुसरी गलती होती है की क्रियाओं के समर्पण करना मुझे याद ही नहीं आया । तो कौन भूल गया ? ईश्वर ही भूल गया । तिसरी गलती होती है की मैंने गलतीसे पुराना मंत्र लेट मी सी युज किया तो मैं कौन ? ईश्वर ने पुराना मंत्र लेट मी सी युज किया । चौथी गलती व्यक्ति खुदको ईश्वर समझने लगता है तो व्यक्ति को ईश्वर नहीं कहा गया है । वह एहसास जो सभी के अंदर एक है उसे ईश्वर कहा गया है । पाचवी गलती अब सब ईश्वर कर रहा है तो कुछ भी करूँगा और कहूँगा मैंने थोडे ही किया । तो जब वाकई बात समझती है तो इतना आनंद होगा और आनंदित इंसानसे जूलम् खत्म होता है । तो सभी खोजीयो की समझ इस प्रवचन से और बढी होगी ।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करे ।

अगर अर्जेडा में है तो, लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाइज ब्रेक/गुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद ।)

प्रवचन (ध्यान का ध्यान)

प्रवचन का समय- १८ मि.

प्रवचन के पहले -

इस मार्गदर्शन के उपरांत अब हम और एक एक्सरसाइज समझने जा रहे हैं। इसमें कुछ सूचनार्य हमें फॉलो करनी हैं। यह एक्सरसाइज करते समय हमें एकाग्रता नहीं करना है। सहजता से एक्सरसाइज करनी है। कई बार ऐसा होगा कि लिटरल शब्दों का अर्थ लेने के बावजूद भी अनावश्यक तनाव शरीर पर लाते हैं, वह नहीं लाना है। सहजता से एक्सरसाइज करनी है। और जितनी सहजता से हम सरश्री के साथ जाएँगे तो पूर्ण अभिव्यक्ति का आनंद हम ले पाएँगे। यहाँ जैसे सरश्री स्क्रीन से मार्गदर्शन देंगे वैसे संपूर्ण श्रद्धा से और भक्ति से एक्सरसाइज करनेवाले है। धन्यवाद हँपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स। अभी जो एक्सरसाइज हमने सरश्री के प्रवचन में सुनी, वह हम बाहर जाकर करेंगे। हर चीज ध्यान पर लेकर जा रही है क्या यह जरूर देखें। बाहर जा रहे हो तो इसी एक्सरसाइज को जारी करना है। सामने देख रहे हो लेकिन ध्यान अंदर की तरफ है। तेजस्थान में है, उस मीन में है, हृदय पर है। जो भी सामने आ रहा है वह निमित्त बन रहा है ध्यान पर लेकर जाने के लिए। चलते, उठते, फिरते भी ध्यान तेजस्थान पर है। चाहे तो थोड़ी गतिविधियाँ धीमी कर सकते हैं। जैसे ही भजन शुरू होता है हमें अंदर आना है। धन्यवाद हँपी थॉट्स।

(अगर अर्जेंडा में एक्सरसाइज के साथ ब्रेकफास्ट/चाय/सूप है तो उसकी भी अनाउन्समेंट करे।)

एक्सरसाइज के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स। अभी जो एक्सरसाइज हमने की उसमें क्या अनुभव आए कुछ खोजी शेअर करे। विचारसेवा। धन्यवाद हँपी थॉट्स।

प्रवचन (असली अध्यात्म)

प्रवचन का समय- १८ मि.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। अभी हम और एक महत्वपूर्ण प्रवचन सुनेंगे, जिसमें समझेंगे कि असली अध्यात्म क्या है। जब असली अध्यात्म पता चलता है आसमानी ज्ञान मिलता है तो हर एम. एस. वाय. से अलग-अलग अभिव्यक्ति होती है। जैसे किसी से भजन निकलता है, किसी से नृत्य अभिव्यक्ति होती है, कोई सेवा करता है, कोई मौन में जाता है तो ऐसे ही एक खोजी जिनका महाआसमानी शिविर होने के बाद उनसे भजनरूपी प्रार्थना की अभिव्यक्ति हुई वह अभी हम सुननेवाले हैं, उसके उपरांत प्रवचन सुनेंगे।
(तेरी पनाह में हमें रखना यह भजन चलाएँ।) धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। अभी के प्रवचन से हमने समझा कि माया भी सत्य के लिए निमित्त बन सकती है। एक गाना चाहे वह फिल्मी हो वह भी सत्य की याद दिला सकता है। इस प्रवचन से और एक बात समझी एक छोटे जीव को बचाने के लिए कितना कार्य किया जाता है तो सत्य के लिए कितना कार्य होना चाहिए।

प्रवचन (कुलमूल उद्देश्य)

प्रवचन का समय- 08 मि. ५३ से.

प्रवचन के पहले -

एक प्रवचन हम सुनने जा रहे हैं, जिसका नाम है कुलमूल लक्ष्य तो आइए हमारे जीवन का कुलमूल लक्ष्य क्या है हम ध्यान से सुनते हैं। धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। कुलमूल लक्ष्य का पहला हिस्सा है अनुभव पर स्थापित होना और दूसरा उस अनुभव की अभिव्यक्ति। ये दोनों बातें जब पूर्ण होती हैं तो कुलमूल लक्ष्य पूर्ण हुआ। तो जरूर हमारा लक्ष्य कुलमूल लक्ष्य हो। अनुभव को हम जान रहे हैं अब उसकी अभिव्यक्ति भी हो, सेवा भी हो।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

डायजेशन

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. सरश्री कई सारे मार्गोंसे, कई सारी एक्सअरसाईज से हमें उस अनुभव पर लेकर जा रहें है । तो इसका अक्शन प्लॅन क्या हो, इसका जीवन में कैसे उपयोग करें, इस पर हम जा रहें है ।
२. हम में से कोई एक खोजी एक्सअरसाईज के लिए आगे आ सकता है ।
३. हम में से कोई एक खोजी यहा उपलब्ध है हमारा काम है इनको सहयोग करना ।
४. हमें पूर्ण मौन का पालन करना है । सिर्फ इन्हें कुछ समय के लिए इजाजत है ।
५. आपके बारे में जरूर बताना कौन आप, क्या नाम आपका, कहा से आए आप ।
६. बाकी सभी सिर्फ सुनेंगे बात नहीं करेंगे ।
७. आप कब से यहाँ आए है ।
८. अपने बारे में बताना कहाँ से आए आप ?
९. आप दोपहर में बाहर गए थे खाना खाया आपने खानेमें क्या था ? क्या किया उसका ?
१०. आप कौन क्या नाम बताया आपने ? कहाँसे आए आप ?
११. अकेले आए क्या ? साथ में मित्र है और कोई घरवाले है ?
१२. शिविर पूर्ण होने के बाद यहीं रहोगे या जाओगे ? कैसा कार्यक्रम है आपका ?
१३. ये लोग हँस रहे है क्या आपको तकलीफ हो रहीं है क्या अंदर ?
१४. आप घर में गए और घर में लाईट नहीं रहेगी तो क्या करेंगे ।
१५. बाहर जाएंगे और अगर वहाँ आपकी चप्पल नहीं मिली तो क्या करोगे, गुस्सा आएगा ? उस गुस्से का क्या करेंगे ।
१६. यहाँ जब अनिल जवाब दे रहें थे उससे कितने लोगोंको शिफिटिंग मिल रहीं थी वे हाथ उपर करें ।

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । सरश्री कई सारे मार्गोंसे, कई सारी एक्सअरसाईज से हमें उस अनुभव पर लेकर जा रहें है। तो इसका अक्शन प्लॅन क्या हो, इसका जीवन में कैसे उपयोग करें, इस पर हम जा रहें है । जिसके लिए हम में से कोई एक खोजी एक्सअरसाईज के लिए आगे आ सकता है जो भी आना चाहें आ जाएँ । प्रणाम करते है । धन्यवाद । हम में से कोई एक खोजी यहा उपलब्ध है हमारा काम है इनको सहयोग_करना । हमें पूर्ण मौन का पालन करना है । हम जानते है हमें बात करना मना है। सिर्फ इन्हें कुछ समय के लिए इजाजत है । आप को सभी दिखाई दे रहें है । आपके बारे में जरूर बताना कौन आप, क्या नाम आपका, कहाँ से आए आप । बाकी सभी सिर्फ सुनेंगे बात नहीं करेंगे । कौनसे तेजस्थानसे आए ।धन्यवाद क्या नाम बता रहें थे आप । कंफर्टेबल रहना । यहाँ आपके साथ मैं बैठा हूँ कैसा लग रहा है आपको । आर यू कम्फर्टेबल । (खोजीयोंको) आपको सभी को सहयोग करना है । धन्यवाद । आप जो सहयोग दे रहें हो उसके लिए धन्यवाद । अपने बारे में कुछ बताए सांगली

से आए है आप कब से यहाँ आए है । कल परसो । शुक्रवार को कहाँ उतरे । क्या अब थोडा डर लग रहा है । तो कम्फर्टेबली सबको एक बार देखना । बी कम्फर्टेबल, आराम से । (खोजीयोंको) बात करना आपको मना है । (खोजीयोंको) आपको सिर्फ देखना है सहयोग करना है । (खोजीयोंको) कोई हमारे लिए सेवा कर रहे है तो हम सेवा लेना चाहेंगे । (खोजी) हाँ धन्यवाद । (खोजीयोंको) इसके बाद मौन का पालन करना है । अपने बारे में अभी बी कम्फर्टेबल सब को एक बार देखना । बहुत कम्फर्टेबल है । अपने बारे में बताना कहाँ से आए आप ? (अनिल) बहुत बढीया । आप दोपहर में बाहर गए थे खाना खाया आपने (अनिल) बहुत बढीया । खानेमें क्या था ? (अनिल) बढिया । क्या किया उसका ? (अनिल) बढिया । क्या आप आप कौन क्या नाम बताया आपने ? कहासे आए आप ? (अनिल) बढिया । अकेले आए क्या ? साथ में मित्र है और कोई घरवाले है ? कौन कौन घरवाले है ? कहां पर है किधर है ? और कोई मित्र भी है । कोई पहचान के आए है अनिल आपके साथ ? कौन कौन है ? (अनिल) कहां है चौगुले ? चौगुले हाथ कर रहे है उधर । धन्यवाद और कौन है बताओ ? (अनिल कोई नहीं है) धन्यवाद खाना खाया आपने ? क्या किया उसका ? अनिल बी कम्फर्टेबल । बढिया । कहाँ गया वो खाना ? (अनिल) बढिया । क्या नाम बताया आपने ? कौन आप ? (अनिल) क्या नाम बताया आपने ? बढिया । अनिल वैसे मैं बताऊ की आज तक जितने भी महाआसमानी शिविरो में डायजेशन हुआ इतना सुंदर जवाब किसीने नहीं दिया । (खोजीयोंको) सब इनके लिए तालीयाँ बजाना । very good । अनिल आप जो बता रहे हो इस की वजह से इन्हें शिफ्टिंग मिल रही है । इन्हें डायजेशन हो रहा है । बी कम्फर्टेबल अनिल अभी क्या प्रोग्राम है । शिविर पूर्ण होने के बाद यहीं रहोगे या सांगली जाओगे या मनन आश्रम में ही रुकना है ? कैसा प्रोग्राम है आपका ? शाम को जाओगे । (अनिल) खाना खाया आपने अनिल ? अच्छा क्या था खाने में ? रोटी थी ? आपके साथ कौन कौन आया है कहा अनिल आपने ? आपके साथ कौन कौन आया है ? अनिल बी कम्फर्टेबल एक बार सब को देखना सभी को देखना । बी कम्फर्टेबल इनको देखकर डर लग रहा है क्या ? एक बार देखना सभीको अनिल बी कम्फर्टेबल आराम से । हम आराम में है बहुत । एकदम रिलॅक्स होना, सब को देखना । बहुत कम्फर्टेबल रहना । सभी को एक बार देखना, कम्फर्टेबली सबको एक बार देखना । और बताना कौन कौन आया आपके साथ ? अच्छा सही बात है । सांगली से अकेले आए है या सांगली से किसी को साथ में लेकर आए है ? और कौन कौन आया आपके साथ ? अनिल बी कम्फर्टेबल रिलॅक्स हो जाओ । कोई बात नहीं । एकदम रिलॅक्स हो जाओ । अनिल ये हँस रहे है क्या तकलीफ हो रही है क्या अंदर ? पक्का डर लग रहा है क्या ? सभी को एक बार देखना । कम्फर्टेबली सबको एक बार देखना । अनिल सांगली में रहते है या और कही ? क्या करते हो आप ? सर्हिस करते है ? बिझनेस करते है ? या और कुछ ? (अनिल) सर्हिस करते है कहाँ सर्हिस करते हो आप ? अच्छा किस तरह का काम करते हो आप ? (अनिल) बहुत बढीया । सांगली से निकले थे कब निकले थे आप गुरुवार को शुक्रवार को ? अच्छा कौन कौन निकले थे आपके साथ ? आपके घर से कौन कौन आया है आपके साथ ? फॅमिली मेंबर आए है ? अनिल कम्फर्टेबल बताना और कौन कौन आया है आपके साथ ? अच्छा और कोई नहीं है । खाना खाया आपने अनिल ? अनिल आपको डर लग रहा है ? सभीको एक बार देखना । डर लगा याने क्या हुआ समझो डर लगता है याने क्या होता है ? डर लगा याने क्या हो रहा है ? (खोजीओंको) अहं बात नहीं करेंगे । धन्यवाद । अनिल आपको डर लग रहा है ? अनिल डर लग रहा है याने क्या हो रहा है ? उन्होने बताया किसने बताया देखो । जरा देखना । अनिल बी कम्फर्टेबल सभी को एक बार देखना । कम्फर्टेबली सबको एक बार देखना अनिल । ये कौन यहां पे है ? कौन देख रहा है ? ये कौन देखो यहाँ पे । आप इनको पहचानते है ? आपके सामनेवाले को पहचानते हो की नहीं पहचानते ? अच्छा वो वहाँ पे और थोडा आगे । अनिल बी कम्फर्टेबल

वो देखो हाथ उपर किया कौन थे वो ? उनको पहचानते हो हा वही वही । पहचानते हो इनको चौगुले । कौन है वो ? (खोजीओंको) हा आपको prompting करने की इजाजत नहीं है । कैसे लग रहा है आप को यहाँ से ? डर लग रहा है ? अभी डर लगता तो उसको क्या बोलते थे ? डर आया याने क्या हुआ ? (अनिल) वी के पी आया के ए के पी आया । (अनिल) वाह आज तक जितने भी महाआसमानी शिविरो में डायजेशन हुआ इतना सुंदर जवाब किसीने नहीं दिया । बहुत बढ़िया अनिल । क्या बताया कौन कौन आया आपके साथ ? उनको जानते हो ? अनिल बी कम्फर्टेबल खाना खाया आपने ? अनिल बी कम्फर्टेबल वो हँस रहे हैं तो क्यों हँस रहे हैं वो लोग ? अनिल क्यों हँस रहे हैं वो लोग ? क्यों हँस रहे हैं वो लोग ? किसका वी के पी है ? किसका वी के पी ? उनके हसने से वी के पी कँहा तैयार हो रहा है ? अनिल के साथ हो रहा है या वहाँ हो रहा है ? अब अनिल वी के पी आया या ए के पी आया तो क्या करेंगे ? अनिल क्या करेंगे । गुस्सा करेंगे चिल्लाएँगे । ठीक है अनिल क्या करेंगे ? खाना खाया आपने ? अनिल कोई जल्दी नहीं है बी कम्फर्टेबल खाना खाया आपने ? बहुत कम लोगोंको मौका मिलता है इस तेजस्थान पर आकर इतने कम्फर्टेबली बैठने का । अनिल आप बहुत भाग्यशाली हो । खाना खाया आपने ? आपके बाँड़ी ने खाना खाया ठीक है । उसका क्या किया ? उस खाने का क्या किया ? अनिल बी कम्फर्टेबल सभी को एक बार देखना । आपके मित्र उधर बैठे उनको देखना । अनिल यहाँ से बाहर गए थे तो आपको खाना दिया गया तो उस क्रिया का क्या किया आपने । आराम से अनिल बी कम्फर्टेबल अनिल सांगली कब जोआगे ? शाम को कल सुबह कल शाम को क्या प्रोग्राम है । कैसे जाएँगे ? (अनिल) वा बढ़िया पक्का जाएँगे ? बस है क्या है (अनिल) खाना खाया आपने ? खिलवाया गया । और क्या किया उस क्रिया का ? डायजेस्ट किया वो आपको देख रहे वो देखो । वो देखो सामने बैठे हैं । जानते हो ना उनको ? नहीं जानते हैं ? बढ़िया अनिल आपको ये बताऊ किस को इतना क्लिअर समझ में नहीं आता । बढ़िया । यहा से कहा जाएँगे । सांगली कब जोआगे ? शाम को कल सुबह कल शाम को क्या प्रोग्राम है । कैसे जाएँगे ? सांगली जाओगे । (खोजीयोंको) ना ना ना कोई बात नहीं करेगा । रातका क्या प्रोग्राम है । कैसे जाएँगे ? तकलीफ हो रही है वी के पी आ रहा है ? (अनिल) अरे वा बढ़िया अनिल वाकई इतना जल्दी किसको पकड में नहीं आता । बहुत अच्छा । लोग हसते हैं तो क्या करेंगे ? उस क्रिया का क्या करेंगे ? और अनिल यहा से आप कैसे बाहर जाएँगे ? बाहर जाएँगे और अगर वहा आपकी चप्पल कोई और पहन कर गया होगा तो क्या करेंगे ? बाहर जाएँगे और अगर वहाँ आपकी चप्पल नहीं मिली तो क्या करेंगे, गुस्सा आएगा ? उस गुस्से का क्या करेंगे । ये गुस्सा क्या है ? (अनिल) बहुत अच्छा । बहुत सुंदर अनिल । वाकई इतना जल्दी किस को पकड में नहीं आता । अनिल ये सब हँस रहे हैं देख रहे हैं आप सबको देखना है बी कम्फर्टेबल अनिल आप बात कर रहे हैं तो उनको बडी शिफिटिंग मिल रही है । आप एक सेवा कर रहे हो । (अनिल) बहुत सुंदर अनिल । सांगली कब जोआगे ? शाम को कल सुबह कल शाम को क्या प्रोग्राम है । कैसे जाएँगे ? तो ये किस की इच्छा है ? क्या नाम क्या बोला आपका ? सब लोग हँस रहे हैं गुस्सा आ रहा है तकलीफ हो रही है वह के पी आ रहा है ? सब को देखने से डर नहीं लग रहा है ? एक बार सब को देखना वाकई डर नहीं लग रहा है । अनिल आप घर में गए और घर में लाईट नहीं रहेगी तो क्या करेंगे । हमेशा क्या करते हैं आप आज क्या क्या करेंगे आप । बी कम्फर्टेबल अनिल । (अनिल) बहुत अच्छा खाना खाया आपने ? (अनिल) खाना खाया आपने ? अनिल आप हसं क्यों रहे हो । लाईट गई क्या करेंगे आप ? (अनिल) बहुत अच्छा । अनिल यहाँ से निकलेंगे तो आप कहा जाएँगे ? (अनिल) । आपको एक महागुरु मंत्र आपको मिला वो क्या था ? (अनिल) बहुत अच्छा । यहा से जाओगे कहा जाओगे ? (अनिल LMC2) । बहुत बढ़िया अनिल । यहाँ से जाओगे घर में लाईट नहीं रहेगी तो क्या करेंगे ? (अनिल LMC2) । बहुत बढ़िया अनिल । पीछे कौन

लोग तालियाँ बजा रहे हैं ? (अनिल) । इस क्रिया का क्या करोगे ? (अनिल LMC2) । बहुत बढ़िया अनिल । आप जब यहाँ विचारसेवा दे रहे थे तो इन सभी को शिफ्टिंग मिल रही थी तो अंदर क्या हो रहा था ? (अनिल वी के पी) । वी के पी आया के ए के पी आया ? उसका क्या किया ? (अनिल समर्पित किया) । (अनिल) बहुत अच्छा । धन्यवाद तेजस्थान पर प्रणाम करके जरूर अपने जगह पर बैठेंगे । धन्यवाद । यहाँ जब अनिल बड़े हसकर जवाब दे रहे थे तो हमें शिफ्टिंग मिल रही थी । तो ये हमारे लिए ऑक्शन प्लान था यहाँ से जाके हमें क्या करना है । यहाँ जब अनिल जवाब दे रहे थे उससे कितने लोगोंको शिफ्टिंग मिल रही थी वे हाथ उपर करें । धन्यवाद हॅपी थॉट्स ।

(सत्याचार्य अर्जेडा के अनुसार अगर इस ब्रेक के साथ चाय / सुप की भी व्यवस्थी है तो वो भी अनाउन्स करे ।)

सेवा

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. एक कॉमन चीज आपने देखी, जिसे देखकर आप जरूर मोटिवेट हुए रहेंगे । तो वह चीज, वह पार्ट क्या है जिसे देखकर आपमें प्रेरणा जगी । तो वह है तेजसेवक ।
२. इन तेजसेवक को देखकर आपके मन में क्या भाव जागे, क्या प्रेरणा जगी इस पर विचारसेवा दे । विचारसेवा ।
३. यह विचारसेवा उन तेजसेवक के लिए नहीं है यह विचारसेवा हमारे लिए है । हमें क्या प्रेरणा मिली, हम में क्या भाव जगे और वह भाव जागकर अब हमारी क्या रिस्पॉन्सिबिलीटी है ।
४. जितना मैं कर सकता हूँ उतना तो मैं जरूर करूँ ।
५. तेजज्ञान फाउण्डेशन में बच्चों से लेकर डॉक्टर, टीचर, लेडिज हर एक के लिए कुछ स्पेशल शिविर कुछ छोटे प्रोग्राम लिए जाते हैं ।
६. अलग-अलग जगहों से काफी खोजी आए हैं तो वहाँ से किसी एक ने शिविर किया तो आज यह संभावना खुली है ।
७. अभी बाहर आप जाएँगे आपका एक ग्रुप बनाया जाएगा, जिसमें आप बताएँगे कि आप किस प्रकार से निमित्त बन सकते हैं ।
८. सेवा एक ऐसा ग्राउंड है, जहाँ पर हम निमित्त बनने के साथ-साथ अपनी उन्नति भी कर सकते हैं ।
९. अपने आपको सेवा में डालकर यह देखना चाहते हैं कि कहाँ पर वी. के. पी. जगा, सेवा में कहाँ-कहाँ पर तकलीफ हो रही है, हम कितना पके हैं यह भी पता चलता है ।
१०. घर पर अकेले तो यह प्रॅक्टिस नहीं हो सकती तो यह ग्राउंड जो उपलब्ध है, उसका हम जरूर लाभ लें ।
११. सेवा में ट्रेनिंग भी होते रहेगी और ज्ञान भी प्राप्त होगा ।
१२. आपका रिश्ता जो रहेगा सरश्री से ही रहेगा ना कि उन तेजसेवकों के लिए । तो उनकी वजह से ना ही हमें अपनी सेवा बंद करनी है, ना ही श्रवण बंद करना है ।
१३. मुक्तिपथ की किताब और सी.डी. का लाभ आप ले सकते हैं ।

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । महाआसमानी शिविर में हमने एक महागुरु मंत्र सुना, समझ पाई कैसे सब कुछ ईश्वर के साथ चल रहा है यह समझा । तो क्या लगता है यहाँ तक जो यात्रा हुई वह कैसे थी, आसान थी या डिफिकल्ट थी । यस, बहुत आसान थी । समझ के साथ तेजस्थान पर रहते हुए यात्रा सहज है । तेजप्रतिसाद देना आसान है । इस यात्रा में सभी के मन में कुछ भाव जागते हैं । जब तेजज्ञान फाउंडेशन में आपने पहली बार कदम रखा या अपने तेजस्थान पर जहाँ आपने महाआसमानी की तैयारी की तो हर जगह एक कॉमन चीज आपने देखी, जिसे देखकर आप जरूर मोटिवेट हुए रहेंगे । तो वह चीज, वह पार्ट क्या है जिसे देखकर आपमें प्रेरणा जगी । तो वह है तेजसेवक । तो आपके लिए एक सवाल है कि तेजज्ञान फाउण्डेशन में आप आए और तेजसेवकों को अलग-अलग सेवा करते हुए देखा जैसे किसी को फॉर्मस् बाँटते हुए देखा, किसी को अटेंडंस लेते हुए तो किसी को खाना परोसते हुए देखा तो इन तेजसेवक को देखकर आपके मन में क्या भाव जागे, क्या प्रेरणा जगी इस पर विचारसेवा दें । विचारसेवा । धन्यवाद ।

तो जो विचारसेवा आपने की इस विचारसेवा से हमने क्या जाना कि यह विचारसेवा उन तेजसेवक के लिए नहीं है यह विचारसेवा हमारे लिए है। हमें क्या प्रेरणा मिली, हम में क्या भाव जगे और वह भाव जागकर अब हमारी क्या रिसर्पोन्सिबिलिटी है। इन तेजसेवकों को देखकर हमें भी लगता है कि हम भी शिविरों में सेवा दें, निमित्त बनें, जितना मैं कर सकता हूँ उतना तो मैं जरूर करूँ। तो ऐसी सेवा करने का भाव हर एक के मन में जागता है। तो फिर यह सेवा मैं अपने शहरों में जाकर कैसे कर सकता हूँ। तो उसके लिए पहले तेजज्ञान फाउण्डेशन में क्या-क्या सेवा उपलब्ध है, यह मालूम होना आवश्यक है। तेजज्ञान फाउण्डेशन में बच्चों से लेकर डॉक्टर, टीचर, लेडिज हर एक के लिए कुछ स्पेशल शिविर कुछ छोटे प्रोग्राम लिए जाते हैं। जैसे छोटे बच्चों के लिए अभय वरदान, लिडर बच्चा, निडर बच्चा तो युवकों के लिए नींव १० के प्रोग्राम्स होते हैं। और उसी से संबंधित पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। नींव १० टॉप १० यह पुस्तक आपमें से कई सारे लोगों ने पढ़ा भी होगा। तो यह पुस्तक फाउण्डेशन बनाता है। जो युवक है, एक समय ऐसा होता है कि कॉलेज के बच्चे पेरेंट्स को नहीं समझ पाते और पेरेंट्स बच्चों को नहीं समझ पाते। तो यह पुस्तक दोनों के बीच में प्लेटफॉर्म बनाता है। यह पुस्तक पढ़ने के बाद पेरेंट्स को पता चलता है कि हमें बच्चों के साथ किस प्रकार से प्रतिसाद देना है और बच्चों को पता चलता है कि पेरेंट्स को किस प्रकार से प्रतिसाद देना है। साथ-साथ अगर हमारी नींव १० पक्की है तो उसमें सफलता पाना आसान है। सफलता के शिखर पर टिके रहने के लिए नींव १० कितनी महत्वपूर्ण है ये सारी बातें इस पुस्तक में दी गई हैं। फिर पर्सनालिटी डेवलपमेंट के लिए कोर्सेस होते हैं, कॉरपरेट के सेमिनार होते हैं, पुलिस के लिए आनंद वरदान, शांति वरदान जैसे कुछ सेमिनार होते हैं। डॉक्टर, तेज डॉक्टर कैसे बनें, टीचर तेज टीचर कैसे बनें तो हर प्रोफेशन के लोगों के लिए, हर धर्म के लोगों के लिए सरश्री ने संदेश दिए हैं। तो इन शिविरों के लिए आप लोगों को गाईड कर सकते हैं। फिर महाआसमानी शिविर की यात्रा जैसे आप पूरी कर रहे हो तो ऐसे शिविरों के लिए आप लोगों को आसानी से गाईड कर ही सकते हो। यहाँ अलग-अलग जगहों से काफी खोजी आए हैं तो वहाँ से किसी एक ने शिविर किया तो आज यह संभावना खुली है तो उसने ऐसा क्या जाना रहेगा। हम भी इस तरह ज्यादा से ज्यादा लोगों के लिए निमित्त बन सकते हैं। कोई कहेगा कि मेरे कंपनी में इतने सारे लोग हैं मैं उनके लिए निमित्त बनना चाहता हूँ। कंपनी हो या घर या बिजनेस हर जगह हम चाहते ही हैं कि सभी के साथ अच्छा तालमेल रहे तो आप उन्हें भी शिविर करवा सकते हैं। क्योंकि जैसे ही घर जाएँगे, ऑफिस जाएँगे तो आपका तो यह शिविर हुआ है पर उनका नहीं हुआ है तो उनके साथ आपका प्लेटफॉर्म सेट होने में दिक्कत आएगी तो जरूर आप उन्हें भी यह शिविर करवा सकते हैं।

तो इस समझ के साथ अभी बाहर आप जाएँगे आपका एक ग्रुप बनाया जाएगा, जिसमें आप बताएँगे कि आप किस प्रकार से निमित्त बन सकते हैं, अपना शहर डेवलप करने के लिए किस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं। तो यह निमित्त का कार्य करना है। और सेवा एक ऐसा ब्राउंड है, जहाँ पर हम निमित्त बनने के साथ-साथ अपनी उन्नति भी कर सकते हैं। आप कहेंगे कि तेजसेवक हमारी सेवाओं के लिए है पर वह अपनी भी सेवा कर रहे हैं। वह अपने आपको सेवा में डालकर यह देखना चाहते हैं कि कहाँ पर वी. के. पी. जगा, सेवा में कहाँ-कहाँ पर तकलीफ हो रही है, हम कितना पके हैं यह भी पता चलता है और उसके साथ हमारा और कितना काम होना बाकी है, यह भी पता चलता है। तेजसेवक सेवा के साथ-साथ अपना कुलमूल उद्देश्य भी प्राप्त कर रहे हैं। घर पर अकेले तो यह प्रॉक्टिस नहीं हो सकती तो यह ब्राउंड जो उपलब्ध है उसका हम जरूर लाभ लें। अब यह सुनकर हर एक को लग रहा होगा कि हम सेवा में जाएँ तो तुरंत यह शुरू करना है। उस सेवा में ऐसा होगा की शुरू-शुरू में कुछ गलतियाँ भी हो जाती हैं क्योंकि एम. एस. वाय ट्रेन्ड नहीं है। अगर सिस्टिम में ऐसे बात रखी होती कि आप पहले यहाँ पर आओ, पूरा ट्रेन्ड हो जाओ छः महीने, साल दो साल तो आप जानते हो कि यह ज्ञान जो आपको मिल रहा है उसके लिए कितना लेट हो सकता था। तो बेटर क्या है कि सेवा में ट्रेनिंग भी होते रहेगी

और ज्ञान भी प्राप्त होगा । और सेवा में ऐसा भी हो सकता है कि कुछ तेजसेवक, सत्याचार्य से कुछ गलती होने की संभावना हो सकती है तो आपको एक समझ हमेशा रखनी है कि मैं तेजज्ञान फाउण्डेशन से जुड़ा हूँ ज्ञान के लिए, अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए । तो किसके लिए आप आए किसे देखकर आएँ तो सरश्री को देखकर । आपका रिश्ता जो रहेगा सरश्री से ही रहेगा ना की उन तेजसेवकों के लिए । तो उनकी वजह से ना ही हमें अपनी सेवा बंद करनी है ना ही श्रवण बंद करना है । तो हमारा कार्य समझ के साथ हो ना कि किसी की गीता पढ़कर । तो यह खबरदारी हमें हमेशा रखनी है । अब हम ग्रुप के साथ बाहर जाएँगे और वहाँ पर लीडर को हमें बताना है कि हम किस प्रकार से निमित्त बन सकते हैं । और एक तरीका है, जिससे हम निमित्त बन सकते हैं तो वह क्या है मुक्तिपथ की किताब और सी. डी. जिसमें तेजज्ञान फाउण्डेशन की संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध है और उसका मूल्य बहुत ही कम १० रू. है । उसका भी लाभ आप जरूर ले सकते हैं । यह किताब और सी. डी. आप नए लोगों को दे सकते हैं, जिससे उन्हें तेजज्ञान के बारे में जानकारी मिलेगी ।

सत्याचार्य खोजियों से सेवा फॉर्म भरवाएँ । सेवा फॉर्म में दी गई सेवाओं के हिसाब से सेवा ग्रुप बनाएँ (डॉक्टर्स/पॅरामेडीकल स्टाफ, मनन आश्रम कंस्ट्रक्शन, पुस्तक ट्रान्सलेशन, अपने शहर में तेजस्थान निर्माण, फाइनेन्स/अॅडवोकेट, टीचर्स, ऑडियो/विडियो रिकॉर्डिंग/भजन, बुक स्टॉल, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, मीडिया, तेजस्थान के हिसाब से सेवाएँ अगर कुछ है तो) और बचे हुए खोजियों के तेजस्थान वाईज ग्रुप बनाएँ ।

सत्याचार्य कृपया अर्जेन्डा रेफर करें ।)

अगर अर्जेन्डा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद ।)

संघ

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. आप सभी के लिए अभी एक खुश खबर है ।
२. यह जो शिविर चल रहा है वह आगे और तेरह दिनों के लिए कंटिन्यू होनेवाला है और वह भी आपके शहरों में ।
३. हमें दो का संघ बनाकर आगे तेरह दिन के लिए शिविर करना है ।
४. आप दोनों में से कोई एक पहले छः दिन के लिए तेजसेवक का रोल करेगा तो दूसरा खोजी का रोल करेगा । आगे के सात दिन जिसने खोजी का रोल किया, वह तेजसेवक का रोल करेगा और तेजसेवक खोजी का रोल करेगा ।
५. तेजसेवक है उसको एक ही रिमाइंडर देना है आप शिविर में हो ।
६. हमें खुद को याद दिलाना है अरे मैं जहाँ पर भी हूँ शिविर में हूँ और शिविर की एक्सरसाइज ही चल रही है ।
७. आगे जो ब्रेक होगा उसमें हमें मौन का पालन नहीं करना है, हम जरूर बात कर सकते हैं, संघ डिसाईड कर सकते हैं ।
८. हमें एक बात का खयाल रखना है कि हमें किसी को किसी भी प्रकार से गार्ड नहीं करना है ।
९. क्रिएटिव वे से कई रिमाइंडर डिसाईड कर ही सकते हैं ।
१०. हमें हर रोज १४ मिनट (२०१४) के लिए हू आर यू यह एक्सरसाइज करनी है ।

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । आप सभी के लिए अभी एक खुश खबर है । जो सुनकर हम सबको बहुत खुशी होनेवाली हैं । तो पहले खुशखबरी यह है कि यह जो शिविर चल रहा है वह आगे और तेरह दिनों के लिए कंटिन्यू होनेवाला है । और वह भी आपके शहरों में । तो यह किस प्रकार से होनेवाला है यह हम समझ कर लेते हैं । आप सभी इस शिविर में आए हैं तो किसी रिश्तेदार जैसे माँ, पति, पत्नी, भाई, बहन तो किसी रिश्तेदार के साथ यहाँ आए है या किसी फ्रेंड के साथ यहाँ आए है । तो हमें क्या करना है हमें दो का संघ बनाकर आगे तेरह दिन के लिए शिविर करना है । आप किसी भी एक रिश्तेदार या फ्रेंड को जो आपके साथ आए है उनके साथ संघ बना सकते हैं । आप दोनों में से कोई एक पहले छः दिन के लिए तेजसेवक का रोल करेगा तो दूसरा खोजी का रोल करेगा । आगे के सात दिन जिसने खोजी का रोल किया, वह तेजसेवक का रोल करेगा और तेजसेवक खोजी का रोल करेगा । और हमें क्या करना है जो तेजसेवक है उसे एक ही रिमाइंडर देना है आप शिविर में हो । तो पहले छः दिन तक तेजसेवक खोजी को आप शिविर में हो यह कहकर रिमाइंडर देगा और आगे का सात दिन जो पहले खोजी था, वह तेजसेवक बनकर रिमाइंडर देगा । इस रिमाइंडर के साथ क्या होगा आप शिविर में हो इस पंक्ति के साथ हमें जो समझ मिली है, जो मंत्र मिला उसे हमें याद करना है । उस पर काम करना है । हमें खुद को याद दिलाना है अरे मैं जहाँ पर भी हूँ शिविर में हूँ और शिविर की एक्सरसाइज ही चल रही है । तो इस समझ के साथ फिर जो भी घटना चले, कार्य हो हमारा देखना ही बदल जाएगा, हमारा प्रतिसाद बदल जाएगा । तो आप शिविर में हो यह एक छोटी पंक्ति बहुत काम करनेवाली है ।

फिर कोई कहेगा अरे हम तो अकेले आए है, साथ में कोई रिश्तेदार नहीं है तो ऐसे खोजी क्या करनेवाले हैं, थोड़े समय के बाद एक ब्रेक होने जा रहा है, जिसमें हम यहाँ जिनसे आपकी जान-पहचान हुई है उनसे बात करके संघ बना सकते हैं । आगे जो ब्रेक होगा

उसमें हमें मौन का पालन नहीं करना है, हम जरूर बात कर सकते हैं, संघ डिसाईड कर सकते हैं कौन से समय रिमाइंडर दे सकते हैं यह डिसाईड कर सकते हैं। एस. एम. एस., फोन कॉल किस प्रकार से रिमाइंडर देना है जरूर सोच सकते हैं। सिर्फ इसमें हमें एक बात का खयाल रखना है कि हमें किसी को किसी भी प्रकार से गाईड नहीं करना है। वरना होता क्या है, एक ही फॅमिली में से मेंबर है, समझो घर में कुछ इधर उधर हुआ हम तुरंत गाईड करना शुरू कर देते हैं। तुमने यह सुना है फिर भी ऐसा क्यों कर रहे हो तो हमें सिर्फ आप शिविर में हो यह कहकर रिमाइंडर देना है।

हमारे घर से समझो पहले ही किसी का महाआसमानी शिविर हुआ है तो उन्हें भी हम संघ करके चुन सकते हैं और हम खुद के लिए तो क्रिएटिव वे से कई रिमाइंडर डिसाईड कर ही सकते हैं। जैसे कोई तेरह दिन के लिए राईट हॅन्ड में घड़ी पहन सकते हैं तो जब भी समय देखेंगे उसके साथ यही याद आनेवाला है कि आप शिविर में हो। घर में, ऑफिस में हम हमारे लिए रिमाइंडर लगा सकते हैं। इस प्रकार से हम खुद को और दूसरों को रिमाइंडर देने के लिए निमित्त बननेवाले हैं।

हम सभी को याद है कि ब्राईट रिस्पॉन्सिबिलीटी शिविर में हमने फॉर्म में एक कमिटमेंट दी थी। वह कमिटमेंट थी कि शिविर में जो साधना मिलेगी उसका हर रोज १४ मि. (२०१४) के लिए अभ्यास करेंगे। तो हमें **हर रोज १४ मिनट के लिए हू आर यू यह एक्सरसाइज करनी है**। दिन के १४ मि. हम खुद के लिए निकालनेवाले हैं और आँखें बंद करके हमें खुद को ही मैं कौन हूँ यह सवाल पूछना है और मन ही मन में जवाब देने हैं तो सभी यह कमिटमेंट देने के लिए तैयार है। धन्यवाद सभी तैयार है।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेंडा रेफर करें।)

अगर अर्जेंडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/शरबत सूप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद।)

धन्यवाद

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. कुछ लोग कल्पना करते हैं कि जीते जी एक दिन हमें ईश्वर मिलेगा। ईश्वर ऐसा होगा, वैसा होगा, आज वह कल्पना टूट गई।
२. कई बार ऐसा होता है कि बहुत सुंदर चीज सामने आती है पर अगर उसकी पहचान नहीं है तो उसका उपयोग करना मुश्किल हो जाता है।
३. जो मिला है वह एक कहानी द्वारा हम समझेंगे।
४. यह ऐसी चीज है जिसकी कोई इंसान उसकी कीमत नहीं लगा सकता।
५. हमें महागुरु मंत्र हाथ में दिया और साथ में उसे परखने की परख भी दी। तो कितने धन्यवाद उठेंगे सरश्री के प्रति।
६. अभी हम आँखें बंद करके मन ही मन धन्यवाद देंगे। आँखें बंद करके पहले सरश्री को धन्यवाद देंगे।
७. उन सभी को भी धन्यवाद देंगे जिनके एम. एस. वाय. हमारे लिए निमित्त बनें।
८. हम जानते हैं कि किसे धन्यवाद दे रहे हैं। ईश्वर, ईश्वर को धन्यवाद दे रहा है।
९. वैसे मैं अपना उदा. बताना चाहूँगा (सत्यआचार्य यहाँ पर अपना उदा. बताकर दूसरे सत्यआचार्य को प्रतिकात्मक रूप से आगे बुलाकर, उसके पैर पर झुककर धन्यवाद दे, यह खोजियों के लिए डेमो होगा कि उन्हें धन्यवाद सेशन में कैसे धन्यवाद देने हैं।)
१०. यहाँ पर सत्यआचार्य डायजेशन सेशन में जो खोजी आगे आया था उन्हें आगे बुलाकर धन्यवाद उनके पैर पर झुककर दे और सरश्री का पुस्तक प्रसाद के रूप में दे।
११. धन्यवाद हम जैसे चाहते हैं वैसे दे सकते हैं, हाथ मिलाकर, हाथ जोड़कर, स्माईल देकर, पैर पड़कर, हम जिस भी पद्धति से धन्यवाद देना चाहते हैं दे सकते हैं। अगर धन्यवाद के भाव नहीं उठे हैं तो धन्यवाद देना कम्पलसरी नहीं है।
१२. शरीर के प्रति भी धन्यवाद के भाव ही उठते हैं कि वाकई कृपा हुई मनुष्य जन्म मिला, यह शरीर मिला।
१३. जितना सत्य के नजदीक जाते हैं, जितना मन भक्त बनने लगता है उतना यही भाव जगते हैं कि अगर यह शरीर निमित्त बन रहा है तो उसे मंदिर बनाना चाहिए।
१४. इसमें वही चीज डाली जाए जो आवश्यक है। जो भी अनावश्यक चीजे हैं जैसे शराब, सिगारेट, गुटखा इ. इसमें डालने की अब इसमें आवश्यकता नहीं है। अब इतना आनंद मिला है कि इन व्यसनों में जाने की जरूरत ही नहीं है।
१५. आपमें से जो भी ऐसे व्यसन छोड़ना चाहते हैं, समर्पित करना चाहते हैं तो वह सरश्री के चरणों में, तेजस्थान पर जरूर समर्पित कर सकते हैं। तेजस्थान पर यहाँ पर कुछ पेपर रखे होंगे, आप उन पेपर पर लिखकर जरूर इन बातों का समर्पण कर सकते हैं।

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स। अब एक छोटी सी कहानी बताएँगी हमें इन दिनों में क्या मिला है और उसका उपयोग हम कैसे करने जा रहे हैं। इस शिविर में हमने कितना अमूल्य ज्ञान प्राप्त किया है। सरश्रीजी ने हमें उच्च जगह पर पहुँचा दिया है। लोग इस

जगह पर, उस अनुभव पर जाने के लिए न जाने कितनी तपश्चर्या करते हैं। हिमालय पर जाते हैं कि कहाँ से तो हमें वह आनंद मिले, कहीं से तो वह समझ मिले, ईश्वर क्या है, कौन है। कुछ लोग कल्पना करते हैं कि जीते जी एक दिन हमें ईश्वर मिलेगा। ईश्वर ऐसा होगा, वैसा होगा आज वह कल्पना टूट गई। अभी हम समझ गए कि ईश्वर क्या है। वही एहसास, वही अनुभव, वही तेजस्थान जो सभी के अंदर एक ही है। कई बार ऐसा होता है कि बहुत सुंदर चीज सामने आती है पर अगर उसकी पहचान नहीं है तो उसका उपयोग करना मुश्किल हो जाता है। वी. के. पी. आता है तो अच्छी चीज बाजू हटने की संभावना होती है इसलिए सरश्री ने उसे समर्पण करने के लिए हमें आज्ञा दी है, हमें समझ दी है, हमें समर्पण साधना दी है। जो मिला है वह एक कहानी व्दारा हम समझेंगे कि ऐसा हुआ था कि कोई खोजी अपने गुरु के पास गए, तेजगुरु के पास गए और उस खोजी ने तेजगुरु को कहा कि मुझे, कोई ऐसा महागुरु मंत्र दो जो आपने और किसी को नहीं दिया हो। मुझे थोड़ा स्पेशल महागुरुमंत्र चाहिए। अब जो गुरु थे उन्होंने उस खोजी को महागुरु मंत्र दिया। मंत्र दिया तो उस खोजी ने पूछा, 'मेरे लिए यह मंत्र है ना? स्पेशल है ना?' 'हाँ, आपके लिए है। स्पेशल है।' फिर वह खोजी आश्रम से बाहर आया। गेट पर देखा वॉचमन को मिला तो वॉचमन वही गुरुमंत्र दोहरा रहा था। बोला अरे ऐसे कैसे हुआ। थोड़ा और आगे गया, कोई बैलगाड़ी आ रही थी। गाड़ीवान उस पर गाड़ी को चला रहा था। बैलों को आगे लेकर जा रहा था। और वह भी वही गुरुमंत्र दोहरा रहा था। तो और तकलीफ हुई। जा रहा था। नदी किनारे कुछ औरतें कपड़े धो रही थीं तो वह भी वही गुरुमंत्र दोहरा रहे थीं। धोबी था तो वह भी वही गुरुमंत्र दोहरा रहा है। किसान भी वही गुरुमंत्र दोहरा रहा है। बाद में पता चला पूरे गाववाले वही गुरुमंत्र दोहरा रहे हैं तो बहुत तकलीफ हुई वापस आया गुरुजी के पास और कहा कि मैंने तो आपसे माँग की थी, प्रार्थना की थी कि मुझे कोई स्पेशल गुरुमंत्र चाहिए था। और आपने तो सभी के पास जो मंत्र है वही दिया, ऐसा कैसा। मुझे कोई स्पेशल दो। तो गुरुजी ने कहा, 'ठीक है चलो आपको स्पेशल दे देते हैं।' कोई चीज हाथ में दी और कहा, 'यह बाजार में लेकर जाओ और स्टेप बाय स्टेप जैसे कहा वैसे उसकी कीमत पूछो, बेचना मत। वह चीज काँच जैसे लग रही थी, काँच के टुकड़े जैसी लग रही थी, चमक रही थी। वह खोजी गया, देखा बाहर वॉचमन था, उसे पूछा 'भाई यह लोके?' वॉचमन ने कहा, 'क्यों लूँ।' भाई जितने में चाहे उतने में लोके क्या? बोला मुझे नहीं चाहिए। आगे गया बैलगाड़ी जा रही थी। गाड़ीवान गाड़ी चला रहा था। उसने उससे पूछा कि मेरे पास कोई चीज है आप लेना चाहोगे। उसने कहा मुफ्त में दोगे तो बैल के गले में लगाऊँगा। तो वह और आगे गया। कोई धोबी कपड़े धो रहा था, उसे पूछा एक चीज बेचना चाहता हूँ लेना चाहोगे? कितने दोगे? पचास पैसे एक दो रूपया और क्या। आगे हर गाँववाले को कीमत पूछते-पूछते, कोई सोने चांदी के व्यापार करनेवाले थे उनके दुकान में आया और पूछा, 'यह चीज बेचना चाहता हूँ लेना चाहोगे? कितने दोगे? चीज देखी। लगा कुछ बात है। उसने कहा, 'सौ रुपए दूँगा।' आगे गया, कोई ऐसी जगह गया जिसे थोड़ी बहुत ऐसे चीजों की जानकारी थी। ऐसे कोई हीरों के बारे में जानकारी रखनेवाले पर्सन के पास गया। उसने देखा कहा, 'पाँच हजार दूँगा और होते-होते ऐसे पर्सन के पास गया, जो वाकई जानकार था। जो हीरा दिया था, वह हीरा वह लेकर उसके पास गया, जो हीरों की जानकारी रखनेवाला था। जिसे अच्छी परख थी उस हीरे की। उसे जाकर उसने हीरा दिखाया। तो जैसे उसने हीरा देखा, उसने पूछा कि क्या चाहते हो। खोजी ने कहा, 'उसकी कीमत पूछना चाहता हूँ। उसने तुरंत पूछा कि तुम्हें दिया किसने। बोला इसकी किमत तो बताओ। उसने वापस कहा, 'तुम्हें दिया किसने।' उसने कहा, 'नहीं-नहीं आप मुझे इसकी कीमत बताओ।' उसने बोला, 'मुझे आप यह बताओ, आपको यह दिया किसने।' तो उसने कहा कि मुझे मेरे गुरु ने दिया है। और कहा कि इसकी कीमत पूछकर आओ।' उस जानकार ने कहा कि यह चीज उन्हें वापस जाकर दे दो। यह ऐसी चीज है जिसकी कोई इंसान कीमत नहीं लगा सकता। हमारे बस की बात नहीं। उनके पास वापस जाकर देना। अब यह खोजी वापस लेकर गया। वाकई अंत में यही समझा कि जिसे परख थी उस हीरे की उसकी कीमत लगाना हमारे बस की बात नहीं है और वापस जाकर उस गुरुजी के पास वह हीरा दिया और कहा कि गुरुजी अब समझ में आया, अपने मुझे

इतने चक्कर क्यों लगाए । समझ में आ गया कि जो गुरुमंत्र दिया उसकी क्या कीमत है । हमारे साथ यही हुआ है शुरुआत की थी पहला सवाल पूछा था कि अगर छः साल सेवा देने के लिए कहा होता तो वाकई हम में से कितने खोजी होते ? शायद ही एखादा कोई खोजी होते । और फिर कितनी कृपा की धीरे-धीरे सरश्री हमें यहाँ तक लेकर आए । उस यात्रा में उस बर्निंग ट्रेन में सरश्री ने प्यास भी दी, प्यास भी बढ़ाई । बहुत ही सिस्टमैटिक वे से कभी भी हमारे इगो को, हमारे अहंकार को ठेस ना पहुँचाते हुए आगे लेकर आए । इतनी बड़ी कृपा हुई हीरा हाथ में दिया । महागुरु मंत्र हाथ में दिया और साथ में उसे परखने की परख भी दी तो कितने धन्यवाद उठेंगे सरश्री के प्रति । धन्यवाद इसलिए भी उठेंगे कि ऐसे तेजगुरु हमें मिले हैं । इतनी सहजता से कृपा हुई और आज के शब्दों में, आज की भाषा में, इतनी सुंदरता से, इतनी सहजता से, हमें इतने उच्च ज्ञान की तरफ लेकर गए । महाआसमानी ज्ञान की तरफ लेकर गए, उसके लिए धन्यवाद उठेंगे और धन्यवाद उठते हैं तो हर कोई उन्हें धन्यवाद देना ही चाहेंगे । तो अभी हम आँखें बंद करके मन ही मन धन्यवाद देंगे । आँखें बंद करके पहले सरश्री को धन्यवाद देंगे । हम धन्यवाद देना चाहेंगे उस परख के लिए । उस समझ के लिए । धन्यवाद देना चाहेंगे क्योंकि आज के दिन असली मैं का पता चला । युनिवर्सल आय का पता चला । तेजस्थान का पता चला । समर्पण के बारे में पता चला । अनुभव के बारे में पता चल रहा है और उसके साथ-साथ उन सभी को भी धन्यवाद देना चाहेंगे, जो हमारे लिए निमित्त बने । उन सभी को भी धन्यवाद देंगे जिनके एम. एस. वाय. हमारे लिए निमित्त बने । किसी ने फोन किया कि आपको शिविर में चलना है । कोई निमित्त बने जिन्होंने हमारे लिए सत्यमुख की सेवा दी । किसी को केबल से, टी. वी. से, वेबसाइट से, किसी को मैगजिन से, पुस्तक से पता चला तो इन्हें भी धन्यवाद देंगे । किसी ने तेजसेवक की सेवा दी । आपके लिए खाना परोसा, आपके रहने की व्यवस्था की तो तेजसेवकों को भी धन्यवाद देंगे । कोई हमें वहाँ से यहाँ लेकर आए । कोई ऐसे जिन्होंने आप यहाँ निकल रहे थे तो वहाँ कहा कि आप जाइए आपका सभी यहाँ का काम हम संभालते हैं । कई घर में ऐसे कोई रिश्तेदार होंगे, एम. एस. वाय. के रिश्तेदार होंगे उन्होंने कहा कि हम आपका काम संभालते हैं । आप जाइए, कोई घर में छोटे बच्चे छोड़कर आए होंगे । अलग-अलग अवस्था से यहाँ आए रहेंगे । जो भी आपके साथ निमित्त बनें यहाँ पहुँचाने के लिए उन सबको धन्यवाद देना चाहेंगे । उन सभी को भी धन्यवाद देना चाहेंगे । ऐसे जो घटना हो रही थी उनमें से आपको बाहर निकाला है । ऐसे वी. के. पी. में फँस रहे थे । उसमें से बाहर निकालकर वापस इस अनोखे मार्ग पर लेकर आए । किसी ने फोन किया आओ सुनो आपके लिए अलग व्यवस्था है । ऐसी व्यवस्था की, किसी ने सरश्री के प्रवचन हम तक पहुँचाए । निमित्त बनें ऐसे सभी को हम धन्यवाद देना चाहेंगे और जब धन्यवाद देते हैं तो हृदय पर स्थापित होकर धन्यवाद देना है । धन्यवाद, हम धीरे-धीरे आँखें खोलेंगे । हम जानते हैं कि किसे धन्यवाद दे रहे हैं । ईश्वर, ईश्वर को धन्यवाद दे रहा है । शब्द है इसलिए कुछ शब्द इस्तेमाल करने पड़ते हैं । जैसे कि मैं शब्द का हम इस्तेमाल करते हैं तो वैसे मैं अपना उदा. बताना चाहूँगा (सत्यआचार्य यहाँ पर अपना उदा. बताकर दूसरे सत्यआचार्य को प्रतिकात्मक रूप से आगे बुलाकर, उसके पैर पर झुककर धन्यवाद दें यह खोजियों के लिए डेमो होगा कि उन्हें धन्यवाद सेशन में कैसे धन्यवाद देने हैं ।) हमारे जीवन में भी ऐसे कई एम. एस. वाय. आए रहेंगे जो निमित्त बनें । जिनकी वजह से हम यहाँ आएँ । इतनी बड़ी कृपा ले पाएँ । आज भी हमारे लिए यहाँ कोई निमित्त बने हैं, जिनकी वजह से सरश्री की जो उच्च बातें हैं वे इतनी सहजता से हम डायजेस्ट कर पाएँ । यहाँ मि. है । उन्हें भी हम आगे बुलाएँगे । उन्हें भी हम धन्यवाद देंगे, जिनकी वजह से हमें सबको जो शिप्टिंग मिली, हम उन्हें भी यहाँ स्टेज पर बुलाएँगे और उन्हें अलग वे से भी धन्यवाद देना चाहते हैं । सरश्री का लिखा हुआ एक सुंदर पुस्तक उन्हें हम सरश्री की तरफ से, हमारे सरश्री का पुस्तक उन्हें देने जा रहे हैं (यहाँ पर सत्यआचार्य डायजेशन सेशन में जो खोजी आगे आया था उन्हें आगे बुलाकर धन्यवाद उनके पैर पर झुककर दे और सरश्री का पुस्तक प्रसाद के रूप में दे ।) धन्यवाद । और ऐसे कई खोजी जो निमित्त बनें, हम में से हर कोई ऐसा धन्यवाद देना चाहेंगे । तो अभी एक ब्रेक होने जा रहा है तो उन सभी को हम धन्यवाद दे सकते हैं । **धन्यवाद हम जैसे चाहते हैं**

वैसे दे सकते हैं, हाथ मिलाकर, हाथ जोड़कर, स्माईल देकर, पैर पड़कर, हम जिस भी पद्धति से धन्यवाद देना चाहते है दे सकते हैं। अगर धन्यवाद के भाव नहीं उठे है तो धन्यवाद देना कम्पलसरी नहीं है।

वैसे तो जो तेज आनंद मिला है, जो अनुभव मिला है उसमें इतनी खुशी होती है कि हर एक के अंदर धन्यवाद के भाव जगते ही है। धन्यवाद सभी के प्रति उठते ही है, साथ ही साथ अब हमें समझ मिली है, हमने अनुभव से जाना है कि हम कौन हैं, यह शरीर हम नहीं है, यह शरीर तो फनी ड्रेस है, मात्र निमित्त है जिसके वजह से हम खुद का अनुभव ले पा रहे हैं। ये सभी बातें हमने जानी हैं तो उसके साथ इस शरीर के प्रति भी धन्यवाद के भाव ही उठते हैं कि वाकई कृपा हुई मनुष्य जन्म मिला, यह शरीर मिला। फिर चाहे वह शरीर दिखने में कैसा भी हो, काला हो, गोरा हो, नाटा हो या और कैसा...। यही शरीर मिला है जिसके मिलने से अपने होने का अनुभव कर पा रहे हैं तो फिर शरीर के प्रति धन्यवाद ही निकलता है। जितना सत्य के नजदीक जाते हैं, जितना मन भक्त बनने लगता है उतना यही भाव जगते हैं कि अगर यह शरीर निमित्त बन रहा है तो उसे मंदिर बनाना चाहिए। इस मंदिर को जितना हो सके साफ, क्लिन रखा जाए उतना अच्छा है। इसमें वही चीज डाली जाए जो आवश्यक है। जो भी अनावश्यक चीजें हैं जैसे शराब, सिगारेट, गुटखा इ. इसमें डालने की अब इसमें आवश्यकता नहीं है। अब इतना आनंद मिला है कि इन व्यसनो में जाने की जरूरत ही नहीं है। अब तक जो हुआ वह हुआ। लेकिन अब असली आनंद का, उस ईश्वरीय आनंद का अनुभव लिया है। तो लोगों में यह भाव जगते ही है। फिर व्यसन छोड़ने के लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। वह अपने आप छूट जाता है। तो इस धन्यवाद देने के ब्रेक में आपके पास यह मौका है कि आपमें से जो भी ऐसे व्यसन छोड़ना चाहते हैं, समर्पित करना चाहते हैं तो वह सरश्री के चरणों में, तेजस्थान पर जरूर समर्पित कर सकते हैं। तेजस्थान पर यहाँ पर कुछ पेपर रखे होंगे, आप उन पेपर पर लिखकर जरूर इन बातों का समर्पण कर सकते हैं। तो मिली हुई कृपा को, शरीर को उच्चतम तरीके से धन्यवाद देने का मौका हमारे पास है। आपको सत्याचार्य से इससे संबंधित बात करनी है तो आप उनसे भी हॉल के पीछे आकर बात कर सकते हैं।

तो आइए हम सभी ब्रेक में हम धन्यवाद देकर आगे एक और महत्वपूर्ण पड़ाव के लिए हम वापस अंदर आएँगे। धन्यवाद हँपी थॉट्स।

(सत्याचार्य अर्जेडा के अनुसार अगर इस ब्रेक के साथ चाय/सूप की भी व्यवस्था है तो वह भी अनाउन्स करें।)

धनसे वा

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। हम सब शिविर कर रहे हैं। हम पहली बार यहाँ आएँ तो कोई सत्य की प्यास से खिंचता हुआ चला आया तो कोई किसी ने फोर्स किया इसलिए आया। लेकिन आज हमें क्या लग रहा है, कितनी खुशी महसूस हो रही है। ऐसे कितने लोग हैं, जिन्हें लग रहा है कि आज उनका नया जन्मदिन हुआ है, वे हाथ ऊपर करें। हाँ, लगभग सभी के हाथ ऊपर है। तो लग रहा है कि आज नया जन्म हुआ है, असली जन्म हुआ है, तो क्या फिलिंग है अंदर, किस प्रकार के धन्यवाद के भाव है अंदर। और मजेदार पार्ट क्या है कि आपको बताया गया था कि आपको कुछ नहीं मिलनेवाला है। फिर भी आप यहाँ बैठें, पूर्ण शिविर किया तो विश्व में ऐसा कौन सा स्थान होगा, जहाँ कुछ नहीं मिलने के बाद लोग इतने धन्यवाद देते हैं और हमारे साथ वह हुआ है, हमें और क्या चाहिए? कुछ नहीं मिलेगा इस तैयारी के साथ आज हम इतने खुश हैं। इतने धन्यवाद देने के लिए तैयार है, वाकई समझोगे कि एक्जाटली हुआ क्या है? व्यक्ति जो था ही नहीं, व्यक्ति एक विचार, उसकी मौत हुई है और ईश्वर, ईश्वर पर स्थापित हुआ है तो वाकई आज जन्म हुआ है। मैं कौन हूँ यह जान लिया तो उसका जन्मदिन है आज। एक सामान्य जन्मदिन कैसे मनाते हैं हम, हमारा जन्मदिन कैसे मनाते हैं हम, क्या-क्या करते हैं, (खोजियों से शेअरिंग करवाएँ) केक काटते हैं, कैंडल जलाते हैं, डेकोरेशन करते हैं, पार्टी मनाते हैं, दीया जलाते हैं, मंदिर में जाते हैं तो एक सामान्य जन्मदिन, अपना निमित्त दिन, मनोशरीर यंत्र के जन्मदिन को सरश्री निमित्त दिवस कहते हैं तो आज तो असली जन्मदिन हुआ है। तो क्या-क्या करना चाहिए? (खोजियों से शेअरिंग करवाएँ।)

शेअरिंग के लिए धन्यवाद। शेअरिंग से हमें क्या पता चला कि हर एक के अलग-अलग भाव है। और सही भी है मगर और कुछ बातें भी हमें समझनी हैं। जैसे हमने सेवा पर बात की, सेवा की कुछ क्लिअरिटी पाई कि किस प्रकार की सेवाएँ खोजी यहाँ पर करते हैं। हम कैसे निमित्त बन सकते हैं, हम ऐसा क्या-क्या कर सकते हैं। कई सारे मौके हमारे सामने उपलब्ध होते हैं, जिसमें हम सेवा दे सकते हैं लेकिन सेवा देते वक्त हमें क्या ध्यान में रखना है, ध्यान में रखना है ऐसा समय जहाँ पर व्यक्ति जो है, विलीन हो रहा है, समर्पित हो रहा है, भवती जग रही है, ईश्वर, ईश्वर पर लौट रहा है। तो आसमानी ज्ञान हमने प्राप्त किया है तो सही मायने में हम जन्मदिन कैसे मना सकते हैं। यहाँ पर अब तक जो शिविर हुए है, ऐसे ही शिविर में जो खोजी आते हैं तो वे कैसे निमित्त बनते हैं, वे कैसे आज का दिन जीवनभर याद रखते हैं, आज ऐसा क्या कार्य करते हैं, जिस वजह से उन्हें आज का दिन हमेशा याद रहता है क्योंकि यह दिन लोगों के जीवन का टर्निंग पॉइंट होता है। जिस दिन से सब कुछ बदला। बाहर की दुनियाँ तो वैसे ही रहनेवाली है, पहाड़, पहाड़ ही रहनेवाले हैं, घर में वही लोग रहनेवाले हैं, कामवाली बाई नहीं आनेवाली है लेकिन फिर भी उसका असर हम पर नहीं होनेवाला है क्योंकि हमारी अंदर की दुनिया बदल गई है। क्योंकि आसमानी ज्ञान हमें आज मिला है। तो यह दिन यादगार बनता है। हर खोजी में धन्यवाद के भाव जागते हैं। फिर यह धन्यवाद व्यक्त भी कैसे करे? सबसे बड़ा धन्यवाद क्या होता है? सबसे बड़ा धन्यवाद, वह धन्यवाद जहाँ धन्यवाद अब सिर्फ शब्द नहीं रहा है, धन्यवाद अब अॅक्शन में बदल चुका है। हमारे जो विचार है, बस वाणी में न रहते हुए, हमारे क्रियाओं में आए है। धन्यवाद का सबसे बड़ा रूप धन्यवाद इन अॅक्शन है। तो किस प्रकार लोगों ने धन्यवाद इन अॅक्शन किया है। लोगों ने किस प्रकार से जन्मदिन मनाया तो वह जानना बहुत महत्वपूर्ण है।

तेजज्ञान की शुरुआत कैसे हुई तो पूना में कुछ खोजी निमित्त बनें, जिन्होंने पूना में कुछ सेवाएँ दीं जिस वजह से पूना में कई सारे सेंटर्स बनें। फिर ऐसे कुछ खोजी यहाँ पर आते हैं, फिर शिविर करके अपने शहरों में जाते हैं, फिर अपने शहरों में वे जोरदार निमित्त बनते

हैं। पहला कदम उठाते हैं। इस प्रकार से कोई निमित्त बना जलगाँव के लिए, कोई निमित्त बना बार्षी के लिए। तो कोई मुंबई के लिए निमित्त बना, कोई हैदराबाद के लिए के लिए निमित्त बना, कोई दिल्ली के लिए के लिए निमित्त बना। तो अलग-अलग शहरों में आप देखोगे तेजज्ञान फाउण्डेशन के सेंटर है तो वे सेंटर कैसे बने तो कोई तो निमित्त बना। इसी प्रकार से निमित्त बनते-बनते आज पूरे भारत भर में २५० से भी जादा सेंटर है। जिसके लिए उतने ही खोजी निमित्त बने। पूना में हेड ऑफिस है, जहाँ से सभी सेंटर्स की अक्टिविटी को मॅनेज किया जाता है, जहाँ से सभी सेंटर्स को सपोर्ट किया जाता है। पूना में शुरुआत हुई तेजाश्रम से। पिंपरी में एक छोटा तेजआश्रम था, जहाँ ५०० लोग शिविर कर पाते थे। रहने की व्यवस्था नहीं थी वहाँ पर। फिर लोग रहते कहाँ थे? ये जो तेजसेवक आते है ना यहाँ पर तो लोग तेजसेवकों के घर ५ दिन रहते थे। वे उन्हें हर दिन सुबह लेकर आते थे, फिर शाम को वापस घर लेकर जाते थे। तो तेजसेवकों ने ऐसी भी सेवा दी है। तो ५०० लोग शिविर करते थे, वे खोजियों के घर रहते थे, उनका खाना पीना खोजियों के घर होता था। तो वे लोग उनके फॅमिली मेंबर बनकर रहते थे कुछ दिन। तो ऐसी भी सेवाएँ तेजसेवकों ने की। और बड़े आनंद के साथ यह सेवा हुई। फिर एक ऐसा समय आया, वह तेज आश्रम रोड वाईडिंग में जानेवाला था। जिसकी वजह से शिविर लेने के लिए जगह नहीं रही थी। अब खोजी श्रवण कहाँ करेंगे, कैसे व्यवस्था होगी, हजारों लाखों लोग जो सरश्री को कहाँ बैठकर सुनेंगे, ऐसे कई सारे सवाल खड़े हो रहे थे। फिर एक खोजी सामने आए, जिन्होंने अपना बर्थ डे मनाया, धन्यवाद के भाव को अॅक्शन में लाया। वह खोजी जोरदार निमित्त बने। जिसकी वजह से पूना में मनन आश्रम का निर्माण हुआ। तो मनोशरीर यंत्र जो निमित्त बना मनन आश्रम के लिए, जिन्होंने अपनी २५ एकर जमीन तेजज्ञान फाउण्डेशन के लिए डोनेट की है, उस मनोशरीर यंत्र का नाम है, मिसेस निर्मला शेंबेकर। तो तेजआश्रम जब नहीं रहा तब निर्मला शेंबेकर मॅडम ने कहा, कोई बात नहीं, ये मेरी लॅन्ड है, आप इस लॅन्ड पर जो चाहे कर सकते हैं। तो पहला कदम उन्होंने उठाया। इतिहास उन्हें याद रखता है, जो पहला कदम उठाते हैं। तो मि.जैन यह दूसरे खोजी का नाम सामने आया। तो उन्होंने यहाँ हॉल बनाया, कुछ व्यवस्था क्रिएट करके दी। तो आज वहाँ पर हॉल का कन्स्ट्रक्शन हो रहा है, डॉमेट्रिज बन रही है। और आपको यकिन नहीं होगा यह जो भी कन्स्ट्रक्शन है वह सिर्फ ५२ डेज में हुआ कन्स्ट्रक्शन है। तो कैसा धन्यवाद का भाव। तो किसी ने इस प्रकार से अपना निमित्त दिवस मनाया। तो उसके बाद ८.८.८ जिस दिन सरश्री ने मनन आश्रम का उद्घाटन किया, तभी से हर महीने, हर हफ्ते यहाँ पर शिविर होते हैं। हायर ग्रुप के लिए सेशन होते हैं। कितने सारे लोग लाभ ले रहे हैं इस भूमि का। तो जब आनंद से, उस खुशी से हम भर जाते हैं तो ऐसे धन्यवाद इन अॅक्शन आते हैं। जैसे किसी ने बड़ा गिफ्ट तो दे दिया, अपना बर्थ डे जोरदार मनाया। मनन आश्रम - महानिर्वाण निर्माण आश्रम। और जो मनन आश्रम बना है तो इसका उद्देश्य भी समझना बहुत महत्वपूर्ण है। कोई छोटी चीज नहीं है, बहुत बड़े लक्ष्य के साथ वह चीज आ रही है। इसका लक्ष्य पृथ्वी लक्ष्य बुक पढ़कर भी जान सकते हैं। शॉर्ट में बताए तो यहाँ पर हम जो ज्ञान ले रहे हैं उससे हमारा पृथ्वी पर का जीवन तो अच्छा होने ही वाला है, मगर पृथ्वी के बाद का भी जीवन यानी मृत्यु उपरांत जीवन के लिए भी तैयारी यहाँ पर चल रही है। सरश्री चाहते हैं, हम अकंप बनें, निर्मल बनें, हमारा मन आज्ञाकारी बनें तो इसकी तैयारी सरश्री यहाँ पर करवा रहे हैं। यहाँ पर महानिर्वाण निर्माण का कार्य होने जा रहा है। तो इतने बड़े उद्देश्य के साथ मनन आश्रम की तैयारी चल रही है। माया में हम जाते हैं, एक साधारण पिकनिक के लिए हम जाते हैं तो कितनी व्यवस्था करते हैं तो सत्य के लिए तो कितनी उच्चतम व्यवस्था हो। मनन आश्रम उच्च व्यवस्था के लिए बना है, पृथ्वी लक्ष्य के लिए बना है। सरश्री कहते हैं मनन आश्रम में वैसे इंसान बनाने हैं। दीवारें तो बोनस में बनेंगी। यहाँ पर मानव मंदिर बनने जा रहा है, सरश्री क्या कहते हैं मानव मंदिर के लिए मानवता का मन अंदर। **Centre of Humanity.** सरश्री कहते हैं, आज विश्व को नए धर्म की नहीं नए धागे की आवश्यकता है। तो मानव मंदिर में आनेवाले सभी लोग इसे अपना कहेंगे। नई टेक्नॉलॉजी के साथ मानव मंदिर ऐसा बनेगा कि सोमवार को यहाँ पर हिंदुओं के लिए मंदिर होगा, मंगलवार को जैन के लिए मंदिर होगा, बुधवार को बौद्ध के लिए बुद्ध विहार, गुरुवार को सिख के लिए गुरुद्वारा, शुक्रवार को मुस्लिम के लिए मस्जिद,

शनिवार को यहूदीओं के लिए पूजास्थान (सिनेगॉग), रविवार को ईसाई के लिए चर्च होगा। तो मानव मंदिर सभी के लिए रहेगा। ऐसा मनन आश्रम बनने जा रहा है। तो पहले मिनिमम जो बनना चाहिए यानी श्रवण के लिए हॉल बन रहा है, डॉमरेमेटरीज, टॉयलेट्स, बाथरूम, किचन, पठनकक्ष, मौनकक्ष मिनिमम ये सभी बनने जा रहा हैं। उसके लिए अंदाजन कॉस्ट निकाला तो करीबन 25 करोड़ तक जाता है। तो हमने क्या प्लान किया कि उसे 1 स्वेअर फिट के लिए 2000 लगते हैं तो यहाँ पर बैठे सभी खोजी उसके लिए कैसे निमित्त बन सकते हैं? तो कोई 2000 रुपये देकर 1 स्वेअर फिट के लिए बन सकता है तो कोई 2012 साल है तो 12 स्वेअर फिट के लिए यानी 24000 देकर निमित्त बन सकता है, कोई 102 स्वेअर फिट के लिए और कोई 112 स्वेअर फिट के लिए यानी 224000 देकर निमित्त बन सकता है। क्यों? क्योंकि ये सारी चीजें जो बनने जा रही हैं वह आप सभी के सहयोग से ही बन पाएगी। आप सभी के सहयोग से ही विश्व में वह परिवर्तन आएगा जिस लक्ष्य को लेकर सरश्री चल रहे हैं। बहुत बड़ा लक्ष्य है - मानवता का मंदिर बनना जहाँ पर लोग युनिटी के साथ रह पाए, लक्ष्य क्या है तो पृथ्वी पर दुःख नाम की चीज नहीं रह पाएँ। क्या लगता है ये सब सुनकर की सभी ने यह शिविर किया, सभी ने यह ज्ञान प्राप्त किया तो लोग दुःख में रहेंगे क्या? नहीं। और यह तो पहला शिविर है जो आपने किया है, आगे तो बहुत कुछ है, आते-जाते पुस्तकों में हम पढ़ेंगे, यह आनंद की यात्रा मजे में चलनेवाली है। लोगों को मृत्यु कहा तो डर लगता है। सरश्री चाहते हैं कि मृत्यु का डर निकल जाएँ। समझ नहीं है तो डर लगता है। एक बार समझा की मृत्यु कैसे बड़ा टीचर है तो मृत्यु का डर निकल जाएगा। तो यह सब पृथ्वी पर लाना है तो सभी के सपोर्ट की जरूरत है, सभी का सपोर्ट है तो चीजें लाना बहुत-बहुत आसान है। एक नियम तेजगुरु सरश्री बताते हैं कि जिस चीज के आप निमित्त बनते हैं, वह चीज आपके जीवन में मल्टिप्लाय होकर आती है। तेजज्ञान फाउण्डेशन के हर एक खोजी ने इस नियम पर कार्य किया है। आप देखोगे कि यहाँ पर इतने सारे यंगस्टर है जो 5-10 सालों से यहाँ पर है, उन्होंने छोटी सी उम्र में कार्य करके अपना जीवन सुंदर बनाया है। पहले तो लगेगा कि इनका तो अभी लाईफ भी सेट नहीं है। लेकिन नहीं पूरा लाईफ इन्होंने सेट किया है और फिर यहाँ पर सेवा दे रहे हैं। तो पूरा फिजिकल लाईफ और स्पिरिचुअल लाईफ बॅलन्स किया है उन्होंने। तो क्यों कर पाएँ क्योंकि इस नियम पर कार्य किया है उन्होंने। प्रार्थना बीज बुक है जो फिर एक बार पढ़ना चाहिए सभी ने, उस बुक में जीवन जीने का राज दिया है, रहस्य दिया है कि कैसे अगर आपके जीवन में कुछ भी कमी है तो प्रार्थना बीज के नियमों के साथ चलकर देखो वह कमी पूरी हो जाएगी। किसी भी फिल्ड में कमी है तो समझ के साथ कार्य करके देखो तो कार्य पूरा होनेवाला है। तो इस समझ के साथ यहाँ पर बैठे हुए खोजी क्या कर सकते हैं तो जैसे बताया कि 1 स्वेअर फिट के 2000 रुपये देकर निमित्त बन सकता है, हम चाहते हैं कि आप 11 स्वेअर फिट के लिए 22000 रुपये देकर निमित्त बनें। मगर कोई इसके अलावा जैसे किसी ने सेवा के ब्रेक में ही आकर कहा कि मैं फिजिकल सेवा नहीं दे सकता हूँ, मैं धनसेवा देना चाहता हूँ। किसी ने कहा कि मेरे पती कन्स्ट्रक्शन फिल्ड में है तो वे कन्स्ट्रक्शन में मदद कर सकते हैं। तो ऐसा आप जो कर सकते है वह करें। देखो हमने नहीं बताई चीज तो जो चीज आज बन रही है वह भी नहीं बनेगी। किसी एखाद को लगेगा कि यह क्यों बताया जा रहा है? तो यह बताने के पीछे पर्पज इतना ही है कि जो कर सकते हैं, खुशी से, स्व इच्छा से वे जरूर करें और जो नहीं कर सकते वे प्रार्थना तो जरूर करें कि ठीक है हम इस प्रकार से कॉन्ट्रीब्यूट कर सकते हैं। मगर जो कर ही सकते हैं, आप अगर 1 रुपया दे सकते हैं तो आपके 1 रुपए की भी आज जरूरत है जो फाउण्डेशन आज लाखों लोगों के लिए निमित्त बनेगा। इतने सारे लोग 1 रुपया भी देते हैं तो वह निमित्त बनेगा आगे आनेवाले लोगों के लिए। तो जो आप दे सकते हैं खुशी से उसके लिए विश्वास बीज डालें और निमित्त बनें। तो जो आप दे सकते हैं वह जरूर खुलकर करें और यंगस्टर तो जरूर करें। हम जो पैसे माया में लगा देते हैं, जो पार्टीज में, फिल्म में समय अननेसेसरी लगा देते हैं, वह समय का कार्य करते हैं वह विश्वास बीज के रूप में डालेंगे। ताकि एक अच्छी हॅबीट, एक डिसीप्लिन बॉडी आने में समय लगेगा कि जैसे कई सारे लोग है यहाँ पर जिन्होंने व्यसन छोड़ा है आज, तो ऐसी कमिटमेंट देते हैं ऐसे समय पर तो वह जीवन में उतरती है तो यंगस्टर

जरूर यह कमिटमेंट दें आज ।

फॉर्म आपके पास आनेवाला है, फॉर्म कैसे भरना है, वह आपको बताया जाएगा । सभी तेजसेवक खोजियों को फॉर्म बाँटते हैं । धन्यवाद । (सत्यआचार्य खोजियों से फॉर्म भरवाकर लें और बाहर धनसेवा ब्रेक में भेजें । फॉर्म हर एक को देना ही है यह जरूर बताए साथ लेकर नहीं जाना है ।) (अगर व्ही.बी.एस. भरे हुए खोजी है तो सत्यआचार्य चाहते हैं तो रिफंड ले सकते हैं यह बताएँ ।)

(सत्याचार्य अर्जेडा के अनुसार अगर इस ब्रेक के साथ चाय/सूप की भी व्यवस्था है तो वह भी अनाउन्स करें ।)

प्रवचन (१४ तारीख को ५९ मि. ध्यान)

प्रवचन का समय- ५ मि.

प्रवचन के पहले -

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स! हर साल सरश्रीजी नए साल के लिए मार्गदर्शन देते हैं। इस साल २०१४ के लिए जो मार्गदर्शन सरश्रीजी ने दिया है तो उसमें से छोटा सा पार्ट अभी हम सुनने जा रहे हैं। तो ध्यान से प्रवचन सुनते हैं, तब तक के लिए धन्यवाद, हॅपी थॉट्स!

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स! अभी जो प्रवचन हमने सरश्रीजी से सुना तो उसमें हमने समझा कि हर महीने की १४ तारीख को हमें ५९ मि. ध्यान करना है। और जैसे सरश्रीजी को हमने कमिटमेंट दी है हर दिन हम १४ मि. हू आर यू? एक्सरसाइज करनेवाले हैं। तो इस साल हमें १ तारीख से लेकर १३ तारीख तक १४ मि. ध्यान करना है और १४ तारीख को ५९ ध्यान करना है। इसके आगे १५ तारीख को १५ मि., १६-१६ मि., १७-१७ मि..... ३० तारीख को ३० मि. ध्यान करना है। कितने खोजियों को ऐसा लगता है कि १४ तारीख को ५९ मि. ध्यान करना मुश्किल है वे हाथ ऊपर करें। धन्यवाद ! यहाँ पर जब सरश्रीजी ने बताया था कि ५९ मि. ध्यान करना है। पर जब सभी ५९ मि. ध्यान में बैठे तो पता चला कि ५९ मि. बैठना आसान है और उसमें जादा मजा आने लगा है। और जहाँ पर भी सेंटर है वहाँ के खोजियों के लिए और भी सुविधा है कि हर १४ तारीख को सेंटर पर ५९ मि ध्यान सी. डी. द्वारा चलाया जाता है और खोजी उसका लाभ लेते हैं। हमारे लिए ओर भी सुविधा है कि अगर आप घर पर अकेले ध्यान करना चाहते हैं तो बाहर ध्यान की सी. डी. उपलब्ध है। सी. डी. के साथ हम आसानी से ध्यान कर सकते हैं। इसके अलावा दो पुस्तकें भी उपलब्ध है। ध्यान २२२ सवाल यह पुस्तक जो बिगीनर्स (ध्यान सीखनेवाले खोजियों के लिए) और ध्यान दिक्षा यह पुस्तक, जिसमें ध्यान की ५२ विधियाँ बताई गई हैं तो इनका भी लाभ हम ले सकते हैं।

प्रवचन (कर्मों का असर)

प्रवचन का समय- १८ मि. २६ से.

प्रवचन के पहले -

अभी हम एक ऐसा प्रवचन सुनने जा रहे हैं, जिससे हमें पता चलनेवाला है कि कर्मों का असर किस प्रकार से होता है। काफी महत्वपूर्ण यह प्रवचन है, जिसमें हमें कुछ सवालियों के जवाब भी हमें मिलनेवाला है। तो आइए उसी ध्यान से हम यह प्रवचन सुनते हैं, तब तक के लिए धन्यवाद, हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। अभी जो प्रवचन हमने सुना उससे हमने समझा कि श्रवण करना कर्म है। मनन करना कर्म है। फिर हमने समझा कि हम जो प्रार्थना करते हैं, वह भी एक कर्म है। वाकई आज यहाँ है तो क्यों है। किस प्रार्थना की वजह से है। ऐसी प्रार्थना हमसे हमेशा होती रहे। जो भी कर्म हमसे होता है उसका फल आता है। फिर हमने एक कहानी सुनी। एक इंसान की कहानी। जो शेर को बचाता है, बाद में उसी इंसान को कुछ झूठे इल्जाम में फँसाया जाता है और उस इंसान को सजा दी जाती है। उसे शेर के सामने लाया जाता है। और वह शेर उसे बचाता है क्योंकि कुछ दिन पहले उसी इंसान ने उस शेर को बचाया था। तो कैसे कर्मों का असर होता है हमने कहानी से समझा। आपके कर्मों का असर आपके आजू-बाजू जो है उन पर भी होता है। एक जगह सत्य प्रकट हुआतो उसका असर सभी पर होता है। सभी में वही सत्य प्रकट होने की संभावना खुलती है। आपका मुक्त होना विश्व के लिए बड़ी सेवा है। फिर एक बहुत ही मुख्य बात हमने समझी कि गुरु के कर्मों का असर हम पर होता है और आपके कर्मों का असर गुरु पर। तो फिर हमारे कर्म कैसे हो। कही गलती से भी ऐसे न हो जिन्हें देखकर कोई कहे कि ऐसे सिखाते हैं क्या आपके इधर। तो हम सभी इस बात का खयाल रखें। महाआसमानी के बाद ये बातें ईश्वर को बताई जा रही हैं। तो हमसे ऐसा कोई भी कर्म न हो जिसका असर गुरु पर या हमारे सेंटर पर ना हो और आप और किसी को उलझे हुए देख रहे हैं तो आप उनसे पूर्णता करना। लेकिन वह न समझे तो हमें उसमें नहीं उलझना है। हम ऐसा कुछ होता है तो सरश्री को फिडबैक लिख सकते हैं, उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं। और प्रवचन से हमने समझा कि हमें ऑनेस्ट थिंकींग करनी है। कपटमुक्त रहना है क्योंकि ऐसे लोगों को ज्यादा फायदा होता है। फिर कुछ सवालियों के जवाब भी हमने सुनें। जैसे प्रार्थना करते वक्त मैं शब्द का इस्तमाल करे या नहीं करे तो हमें इस क्रिया का भी ईश्वर को समर्पण करना है। फिर और एक मुख्य पॉइंट हमने समझी कि तेजस्थान पर जाते हैं तो कुछ लोगों को लाइट दिखती है या ऐसे कुछ अनुभव आते हैं - पत्थर- माईल स्टोन, यह लाइट किसकी दिखी। अटकना नहीं है। ऐसा फिर से हो ऐसी इच्छा मत रखना।

तेजस्थान के जवाब पहले उतना समझ में नहीं आएगा लेकिन धीरे-धीरे समझ में आएगा।

ध्यान भटके तब- तेजस्थान पर जाना/समर्पण करना/तेजम् मंत्र दोहराना।

ऑक्शन प्लॅन + एंड लाईव्ह २००७

सत्याचार्य आगे का ऑक्शन प्लॅन बताएँ।

प्रवचन (एंड लाईव्ह २००७)

प्रवचन का समय- ०१ घंटा २३ मि.

प्रवचन के पहले -

(सत्याचार्य तेजविद्या मॅडम का लाईव्ह के पहले का टॉक चलाएँ, जो सी. डी. में दिया है।) (कृपया सत्याचार्य दर्शन सेशन की तारीख, पता, समय बताए।)

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। अभी हम एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रवचन सुनने जा रहे हैं। महाआसमानी ज्ञान तो हमने लिया है, आगे हमें क्या करना है, किन बातों का खयाल रखना है, यह हम सरश्री द्वारा सुननेवाले हैं। तो आइए उसी ध्यान से हम यह प्रवचन सुनते हैं तब तक के लिए धन्यवाद, हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

(सत्याचार्य **अगर समय है तो** प्रवचन में जहाँ पर शेअरिंग समाप्त होती है वहाँ पर प्रवचन रुकाकर एखाद मुस्लिम एम. एस. वाय., डॉक्टर एम. एस. वाय., टीचर एम. एस. वाय. से शेअरिंग लें। शेअरिंग इस बात पर लें कि प्रवचन में शेअरिंग और सरश्री द्वारा शिप्टिंग सुनकर उन्हें क्या शिप्टिंग मिली। फिर आगे का प्रवचन चलाएँ।)

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। गुड मॉर्निंग अभी गॉड मॉर्निंग हो गया है। हैलिकॉप्टर का अँगल अभी हमें समझ में आने लगा है। ज्ञान के अंत में भक्ति मिलती है और भक्ति के अंत में ज्ञान मिलता है। जब भी सवाल आए कि यह करे या न करे तो पहले चेतना उठाए, फिर डिजीजन ले कि क्या करे। जैसे बच्चों को मारे या न मारे तो पहले चेतना उठाओ फिर हाथ उठता है या नहीं यह देखो। सही समय पर तारीफ और सही समय पर, सही मात्रा में पनिशमेंट जरूरी है। जब भी वी. के. पी आए तो तुरंत क्रियाएँ ईश्वर को समर्पित करनी हैं। इस प्रकार साँप को भी सीढ़ी बनानी है। तेजज्ञान साँप को भी सीढ़ी बनाने का ज्ञान है। तो तुरंत क्रिया समर्पित करनी है कि ईश्वर कर रहा है। ईश्वर के साथ हो रहा है। साइकिल के एक्झांपल से हमने समझा कि श्रवण कितना आवश्यक है। हमें लगेगा कि श्रवण के बिना भी तो क्रियाओं का समर्पण हो रहा है लेकिन ऐसा नहीं होता है। हमें लगेगा की पेंडल लगाए बिना भी साइकिल चल रही है, लेकिन हम जानते हैं कि कुछ ही देर साइकिल चलेगी। तो हमें श्रवण हमेशा करते रहना है। एक गलती क्या होती है हमने समझी। व्यक्ति खुद को ईश्वर समझने लगता है तो किसी व्यक्ति को ईश्वर नहीं कहा गया है। जो सभी के अंदर एक है, वह अनुभव, वह एहसास को ईश्वर कहा गया है। और एक बात हमने समझी कि हमें लगता है कि मैं सभी को ईश्वर समझ सकता हूँ, लेकिन इस-इस व्यक्ति को ईश्वर नहीं समझ सकता। तो हमने समझा कि सोचा हुआ तो क्या हुआ है तो मेरा भाई ही। तो वैसे ही सोचा हुआ तो क्या हुआ, है तो ईश्वर ही। आगे हमने ट्रमकार्ड के बारे में समझा। ट्रमकार्ड जो ज्ञान पर ही डाउट लाता है। मन का यह आखिरी पता है। यानी पूरी बाजी आपने जीत ली लेकिन मन ने आखिरी पता डाला और आप बाजी हार गए। ट्रमकार्ड साधना पर ही डाउट

लाता है। जैसे विचार आता है कि बार बार वी. के. पी आता है तो साधना का क्या लाभ? इस पर्सन में तो कोई परिवर्तन नहीं आए। तो कोई साबुन का रॅपर निकालकर नहीं नहा रहा हो तो कैसी मैल हट जाएगी। तो मन के ट्रमकार्ड में नहीं उलझना है। उलझन के वक्त हम जरूर तेजम कृपामंत्र दोहरना है। तो कई महत्वपूर्ण बातें हमने समझीं। उसके उपरांत कुछ विचारसेवा भी हमने सुनी। जो सीखता है वह सीख है, जो ईश्वर ही है इस पर यकीन रखता है तो वह मुसलमान है, जो मन पर जीत प्राप्त करता है वह जैन है, जो अनुभव को मानते हैं वह हिंदू है। तो सिर्फ शब्द अलग-अलग है। एक ही चीज की बात चल रही है। तो आज विश्व को आज किसी नए धर्म की आवश्यकता नहीं है, नए धागे की आवश्यकता है। तेज डॉक्टर, तेज टीचर, तेज हिंदू, तेज मुसलमान बनना है। तेज की समझ रखे। कुछ के ३ की शेअरिंग हमने समझी। जिससे भी हमने समझा कि कितनी आसानी से हमें तेजज्ञान मिला है। तो वाकई हम पर बहुत कृपा हुई है।

यहाँ पर महाआसमानी शिविर पूर्ण हुआ। कुछ सुचनाएँ हैं वे सुनेंगे। जैसे

✱ हम शिविर की बातें बाहर नहीं बताएँगे। हमें सरश्री के साथ वचनबद्ध रहना है। उसके साथ इसका भी खयाल रखेंगे कि कल बाहर जाकर यह नहीं बताना है कि ऐसी-ऐसी हमने अभिव्यक्ति की, बहुत मजा आया क्योंकि हो सकता है, आपके ऐसी शेअरिंग से कोई आनेवाला खोजी रुक जाए, अनुमान लगाए, शायद यह बात उसकी सत्य की यात्रा में बाधा बन सकती है। तो इस प्रकार की कोई भी विचारसेवा हमें नहीं देनी है। वचन का पूर्ण पालन हमें करना है।

✱ साथ-साथ हमें अपने साथ कमिटेड रहना है, श्रवण हमें आगे भी जारी रखना है। श्रवण बंद नहीं करना है। उसके लिए किसी को रिमाइंडर न देना पड़े। ऑन लाईन श्रवण का मार्ग भी उपलब्ध है।

✱ हमने जो धनसेवा की कमिटमेंट दी है वह भी जरूर पूर्ण करें।

✱ आनेवाले महानिवासी शिविर के लिए हम निमित्त बन सकते हैं। हम मिनिमम एक पर्सन को महानिवासी शिविर के लिए गाईड कर सकते हैं। हम जरूर चाहेंगे कि जिस प्रकार से हमने आनंद प्राप्त किया है, वह हमारे फ्रेंड्स, रिलेटीव इन्हें भी प्राप्त हो। (सत्याचार्य पहले ही आगे के महानिवासी शिविर की दिनांक पूछकर वह अनाउन्स करें।)

✱ यहाँ पर बुक (योग्य आरोग्य मॅगजिन, दृष्टीलक्ष्य), कॅसेट्स उपलब्ध हैं। हम यहाँ से जाएँगे तो हमारे पास ऐसी चीजें रहें, वी. के. पी आए तो हम सरश्री का उस वक्त याद रख पाए। सरश्री ने जो टिचींग दी है, जो समझ दी है उसे याद रख पाए। सरश्री ने जो बताया है, वह ज्ञान बुक माध्यम से आया है और एक मौका हम सबके लिए यहाँ पर है।

यहाँ पर महाआसमानी शिविर का पहला हिस्सा हमने पूर्ण किया आगे जिस प्रकार से हमें बताया है हम हमारा श्रवण जारी रखनेवाले हैं। जो वचन हमने सरश्री को दिया है, उसका पालन जरूर करेंगे कि यहाँ जो भी बातें हुई उसका जिक्र हम बाहर नहीं करनेवाले हैं यानी अभिव्यक्ति या कोई भी बात बाहर नहीं बताएँगे। (सत्याचार्य अंत में बँचेस तेजस्थान पर समर्पित करने की खाने और बाकी उनके जाने की व्यवस्था के बारे में सूचनाएँ दें।)

सरश्री ने जो मुझे यहाँ पर सेवा का मौका दिया उसके लिए सरश्री को धन्यवाद। आपने जो सहयोग दिया उसके लिए आप सभी का धन्यवाद, शुभेच्छा हँपी थॉट्स।

સરશ્રી ધન્યવાદ